पुस्तकरी खतावणी.

विषय पृष्ट

१ श्री चोविस तिर्थंकरजीरा दर्शन १
२ श्री आणापूर्वी १
३ श्री नवकार मंत्र १
४ तिखुत्तारी पाटी १
५ इरिया वहीनी पाटी २
६ तस्स उत्तरीनी पाटी ३
७ लोगस्सकी पाटी ३
८ सामायिक लेवणरी पाटी ४
९ नमुत्थुणंनी पाटी ५
१० सायायिक पारवानी पाटी ६
११ सामायिकनी विधी ७
१२ प्रातिक्रमण विधी ७
१३ इच्छामिणं नंतेनी पाटी ८
१४ इच्छामि ठामीनी पाटी ९
१५ निन्याणव अतिचार १४
१६ अढारे पापस्थानक १
१७ खमा समणारी पाटी

१८ तस्स सवसकी पाटी १८
१९ चत्तारि मंगलंकी पाटी १८
२० आगमे तिवीहेनी पाटी २०
२१ दंसण समकितनी पाटी २०
२२ बारे व्रत २१
२३ संलेषणा ३८
२४ तस्स धम्मसनी पाटी ३३
२५ पांच पदारी वंदणा ३४
२६ आयरिय उवज्झायानी पाटी ४४
२७ अढाई द्वीपनो पाठ ४४
२८ चोराशी लाखजीवायोनीनी पाटी ४५
२९ खामेमि सव जीवेनो पाठ ४६
३० दैवसिक प्रायश्चितनो पाठ ४६
३१ गंठसहिआदिक पचखाण पाठ ४८
३२ दश पचखाण विधी ५०
३३ नमुकारसहिअनुं पचखाण ५०
३४ पोरिसि साढापोरिसिनुं पचखाण ५१
३५ पुरिमढनुं पचखाण ५१
३६ विग्गई निविइग्गनुं पचखाण ५१
३७ निविगईनुं एकासणनुं पचखाण ५२

३८ एकासणां बियासणानुं पचखाण ५२
३९ एकलठाणानुं पचखाण ५२
४० आंबिलनुं पचखाण ५२
४१ चउविहार उपवासनुं पचखाण ५३
४२ तिविहार उपवासनुं पचखाण ५४
४३ नव चरिनुं पचखाण ५४
४४ गंठ मुंठ सहियादीनुं पचखाण ५५
४५ देसावगासीकाभिग्रहनुं पचखाण ५५
४६ श्रावकने चार सरणा लेवानुं पाठ ५५
४७ श्रावकने त्रण मणोर्थ चिंतवानो पाठ ६२
४८ दान शिलनो चोढाळीयो ६८
४९ सुभद्रा सतीरो चोढाळीयो ८२
५० चंद्रगुप्त राजारा सोळे सुपना ९१
५१ अनंत चोविसी वंदणा ९[illegible]
५२ लघुसाधु वंदणा ११[illegible]
५३ स्तवन सझाय प्रारंभ १२[illegible]
५४ शांतिनाथ स्वाध्याय पद १[illegible]
५५ नेमि नाथ स्तवन स्वाध्याय १[illegible]
५६ शांतिनाथ स्तवन स्वाध्याय १[illegible]
५७ महावीर स्तवन स्वाध्याय [illegible]

५८ नेमिनाथ स्तवन [illegible]
५९ [illegible] पद [illegible]
६० [illegible] स्तवन [illegible]
६१ [illegible] जिन स्तवन [illegible]
६२ [illegible] जिन स्तवन [illegible]
६३ [illegible] स्तवन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

७ सुमति कुमतिकी लावणी १४८
७८ काळरी सज्झाय १४९
७९ चूलोमन भमरानी सज्झाय १५०
८० नामेला पुत्रनी सज्झाय १५१
८१ अरणक साधुनी सज्झाय १५२
८२ ढंढण मुनिनी सज्झाय १५४
८३ सीता सतीनी सज्झाय १५५
८४ कामदेव श्रावकनी सज्झाय १५६
८५ चवदे थानकनी सज्झाय १५७
८६ पंच जिन स्तवन १६०
८७ नेमिसरजीरो स्तवन [illegible]
८८ गजसुकमाळजीको स्तवन [illegible]
८९ पंच तीर्थनो स्तवन [illegible]
९० चार सर्णाको स्तवन [illegible]
९१ श्री ऋषभदेवजीकी लावणी
९२ संतनाथजीरो स्तवन
९३ रहेनेमजीनी सज्झाय
९४ महावीर स्वामिको
९५ नेमीसरजीरो [illegible]
९६ सेत्रुंजाजीरो

| | | |
|---|---|---|
| ९७ | राणापूराजीरो स्तवन | १८० |
| ९८ | सतीचंनणबालाकी सझाय | १८२ |
| ९९ | तीर्थमालाको स्तवन | १८४ |
| १०० | सुबुधिनाथजिन स्तवन | १८५ |
| १०१ | चित्त संभूतको स्तवन | १८६ |
| १०२ | मृघापुत्रको स्तवन | १८८ |
| १०३ | पांचमा आराको स्तवन | १९० |
| १०४ | नवघाटीको स्तवन | १९२ |
| १०५ | विजेशेठ विजयाराणीको स्तवन | १९३ |
| १०६ | तीर्थंकरजीरा पिरवार स्तवन | १९६ |
| १०७ | पटद्रव्यनी सझाय | १९८ |
| १०८ | पावापुरीको स्तवन | १९९ |
| १०९ | घन्नाजीरी सझाय | १९९ |
| ११० | ऋषभदेवजीरो पारणो | २०० |
| १११ | पार्श्वनाथ जिन स्तवन | २०१ |
| ११२ | श्रावकने उपदेश स्तवन | २०२ |
| ११३ | रिखबनाथजीरो स्तवन | २०४ |
| ११४ | इग्यारे गणधरको स्तवन | २०५ |
| ११५ | चैत्य वंदना स्तवन | २०६ |
| ११६ | सोळेसतीरो स्तवन | २०७ |

११७ श्रीपारसनाथजीरो स्तवन २०८
११८ दीवाळीको स्तवन २०८
११९ श्रीनेमीनाथजीरो बारामासीयो २१२
१२० श्रावकरी सझाय २१३
१२१ पद्मावती आराधना २१५
१२२ द्विवपुरनगरीको स्तवन २१९
१२३ सातवारको स्तवन २२१
१२४ वगन मुनेसरजीरो स्तवन २२२
१२५ महावीरजीको स्तवन २२४
१२६ अरिहंतजीको मंगळ २२६
१२७ उपदेशी फटको २३१
१२८ उपदेशी फटको दुजो २३३
१२९ चोवीस जिनवरका स्तवन २३५
१३० ऋषभजिन स्तवन २३६
१३१ चोविस जिनवरकी स्तुती २३७
१३२ वीस विहरमानकी लावणी २३८
१३३ सोळेस्वप्नाकी लावणी २४०
१३४ शांति जिणेसरकी आरति २४५
१३५ गोमुखकी आरति २४६
१३६ संथनाथजीकी आरति २४७

१३७ जिणेश्वरजीकी आरति २४७

१३८ कलश २४९

१३९ व्यवहार समकितना सिदसठ बोल२५०

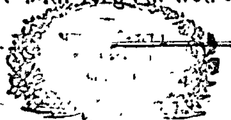
१४० नवतत्व २५४

१४१ पचीस बोलनो थोकडो २७६

१४२ कर्म विपाकनामा द्रवजपर बोल २९३


॥ इति खतावणी १४२ विपयकी समाप्त ॥

इण पोथीको घणा मेहेनतसुं शुद्धि पत्र करायने आ वठी आवृत्ति छपाईछे. पिण हस्त दोप अथवा नजर चूकसुं अक्षर काना मात्रा वती अगर कमती पडी हुवे तो पंडित जन सुधार लीजो.



## इण पुस्तकरी प्रस्तावना.

प्रथम आपणा श्रावक लोकांमे नानापणासुं टाबरानें नणावे, थोडोसो लिखणो आयो, पछे संसार कार उद्यम धंदा रुजगार माहे घालेछे, तिणसुं टाबराने, धर्म मारगरो जाण पणो आवे नही तरुण पणामे तथा वृद्ध पणामे धर्मरी ओळख होय, जठा पछे बुद्धि मंद पडजाय तिणसुं धर्मरो उद्यमकरे पीण अक्षर चडे नही. तिणसुं धर्म अर्थ काम ए तीन अर्थ माहेलो एकही सुजे नही, पिण ए मिनखाजव दम दृष्टांते दोहलो लाधोछे सु काम अर्थ मोक्ष ए तीनो ओळखना वास्ते धर्म शास्त्र शिखणरो उद्यम बाळपणासुं किधो चाहिजे, धर्म इहलोकी अने परलोकी सुखदाइ छे. देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ धर्म केवळी नाख्यो, ए तीन तत्त्व इणाने जाणया चाहिजे ज्ञान दर्शण चारित्र ए तीन रत्न इणरी ओळखणा करने धारिया चाहिजे, जदी श्रावक शुद्ध कहिजे.

प्रथम चोवीस तीर्थंकर नगवानरा दर्शन, आणापूर्व, श्री नवकार मंत्र सहित सामायकनी पाठ्या, विधिसहित पडिक्कमणो [illegible]

मनोरथ दान शीळगे चोढाळीचो, सुभद्रासतीरो चोढाळीयो, चंद्रगुप्त राजाका सपना. अनंत चोवीसी वंदणा, लघु साधु वंदणा. चोवीस तीर्थंकरजीरा न्यारा न्यारा रागना स्तवन, उपदेश श्री मिंदर प्रमुख विस वेहेरमानजीन स्तवन, इण शिवाय साधु मुनिराजका रिखजीका पुण्यवंत, श्रावक श्राविकांना, स्तवन, सज्झाया, बारामासीया, लावण्या, चोढालीया, आरत्या पद्मावती राणी जीवरास खमावे ते स्तवन, इण शिवाय तिलोकरिखजी महाराजका बनावेला नवा नवा स्तवन, व्यवहार समकितना बोल, नव तत्वको जाणपणो विस्तार पूर्वक, पच्चीस बोलनो थोकडो आद देईने संक्षेप विस्तार सर्व सूत्र सिद्धंतको सार जैनधर्मका १४२ विषय इणमाहे लिख्याछे. सुं इण पोथीने वाच्यासुं तथा शिख्यासुं थोडा माहे घणी समज आवे. हिरदा माहे धर्म ग्यानरो प्रकाश हुवे, तिणसुं इण पोथीरो नाम जैनधर्म ग्यान प्रदीपक दीनोछे. सुं वाचणहार घणा जतनसुं राखजो, इण पोथीने जणशी गुणशी तीणरा कायारो कल्याणहुशी.

॥ श्री ॥

॥ श्री पारस्वनाथायनमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभः ॥

---

॥ णमो अरिहंताणं ॥ णमो सिद्धाणं ॥ णमो आयरियाणं ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ एसो पंच ॥ णमुक्कारो ॥ सव्व पाव प्पणासणो ॥ मंगलाणंच सव्वेसिं ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कारः ॥ १ ॥

॥ अथ तिखुत्तारी पाटी लिख्यते ॥

तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं ॥ पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

॥ अथ इरियावहीनी पाटी लिख्यते ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि. इच्छं इच्छामि, पडिक्कमिउं इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरीयक्कमणे, उसाउ

त्तिग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवियाउ, विवरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥इ०

॥ अथ तस्सउत्तरीनी पाटी लिख्यते ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायछित करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नथ उसासिएणं, निसासिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिउ, हुज्जमे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं, वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ लोगस्सनी पाटी लिख्यते ॥
लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तित्थयरे जि
णे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केव
ली ॥ १ ॥ उसभमजियं च वंदे, संभवम
भिणंदणं च सुमइंच॥ पउमप्पहं सुपासं,
जिणंच चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिंच पु
प्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच ॥ वि
मल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदा
मि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरंच मल्लिं वंदे मुणिसुव
यं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठनेमिं, पा
सं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अ
भिथुआ विहूयरयमला पहीण जरमरणा॥
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयं
तु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए
लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहि
लाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदे
सु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास
यरा ॥ सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु ॥ ७ ॥ ८ ॥
॥अथ सामायिक लेवणकी पाटी लिख्यते

करेमि भंते सामायियं, सावज्जं जोगं ।
च्चखामि. जावनियमं पज्जुवासामि, दु
विहं, तिविहेणं, नकरेमि न कारवेमि, मण
सा, वयसा, कायसा. तस्सभंते, पडिक्कम
मि. निंदामि, गरिहामि. अप्पाणं वोसि
रामि ॥ १ ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री नमुत्थुणंनी पाटी लिख्यते ।

नमुत्थुणं. अरिहंताणं. भगवंताणं. आइ
गराणं तित्थयराणं. सयंसंबुद्धाणं. पुरिसुत्त
माणं, पुरिससीहाणं. पुरिसवर पुंडरीयाणं
पुरिसवर गंध हत्थीणं. लोगुत्तमाणं लोगना
हाणं, लोगहियाणं लोगपईवाणं, लोगप
ज्जोयगराणं, अभयदयाणं. चखुदयाणं. मग्ग
दयाणं सरणदयाणं. जीवदयाणं. बोहि
दयाणं. धम्मदयाणं. धम्मदेसियाणं. ध
म्मनायगाणं. धम्मसारहीणं. धम्मवरच
उरंतचक्कवट्ठीणं दिवोताणं सरण गइप
इठाणं अप्पडिहय वरनाणं दंसणधराणं.
विअट्ट छउमाणं. जिणाणं. जावयाणं. तिन्ना
णं. तारयाणं.बुद्धाणं बोहियाणं. मुत्ताणं मो

गाणं. सव्वन्नूणं. सव्वदरिसिणं. सिवमयल
मरुअमणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति
सिद्धिगइ नामधेयं. ठाणं. संपत्ताणं. नमो
जिणाणं. जियभयाणं ॥ १ ॥ ७॥

॥अथ सामायिक पारवानी पाटी लिख्यते॥

नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयार
जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा ते आ
लोउं. मणदुप्पणिहाणे. वय दुप्पणिहाणे
काय दुप्पणिहाणे. सामाइयस्स अकरणया
ए, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणयाए.
तस्स मिच्छामी दुक्कडं. सामायिकने विषे दस
मनना दस वचनना. बार कायाना. एव
त्रीस दोष माहेलो कोई दोषलागो होयतो
मिच्छामि दुक्कडं, आहारसंज्ञा. भयसंज्ञा.
मिहूणसंज्ञा. परिग्गह संज्ञा. ए चार संज्ञा
माहेली कोई संज्ञा करी होय तो मिच्छामि
दुक्कडं. स्त्री कथा, राज कथा, भक्तकथा, दे
शकथा ए माहेली कोई कथा करी होयतो
मिच्छामि दुक्कडं, सामायिक समकाएणं

फासियं, पालियं, सोहियं, तिरियं, किर्ति
यं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भ
वइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ ८ ॥

॥ अथ सामायिकनी विधि लिख्यते ॥

प्रथम श्री सीमंधर स्वामीजीनी आज्ञा
लेईने एक नवकार गुणीने "इरियावही
नी" पाटी भणवी, पछी तस्सउत्तरीनी पाटी
भणीने काउस्सग्ग करवो, काउसग्गमांहि
"इरियावहीया" थकीते "जीवियाउ वि
वरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधीनो
पाठ मनमां बोलीने एक नवकार मनमां
कहीने काउसग्ग पारवो, पछी प्रगट "लो
गस्सकी" पाटी कहीने सामायिकनी आ
ज्ञा लेईने "करेमि भंतनी पाटी" जाव
नियम" सुधी कहीने आगल मुहूर्त [घा
लणी हुवे तिके] घालणो, पछी "पज्जुवा
सामि" थकी "अप्पाणं वोसिरामि" सु
धी पाठ कहीने सामायिक पच्चखवी, पछे
डावो गोडो ऊंचो करीने दोयवार "नमुत्थु

णं " नी पाटी केहवी, दूजा नमुत्थुणंना वे
हरे " ठाणं संपाविउ कामस्स नमो जिणा
णं " एम केहवो; अने सामायिक पारती
वेळां " इरियावही, तस्स उत्तरि " नी पा
टी भणीने काउस्सग करवो काउस्सग
माहि " इरिया वहीनी " पाटी कहीने ए
क नवकार गुणीने काउसग पारवो; पछी
" लोगस्स " भणी " नमुत्थुणं " दोयवार
उपर लिख्यामुजब कहीने नवमा सामायि
कनी पाटी " अणुपालियं भववइ तस्स
मिछामि दुक्कडं " सुधी कहीने तीन नवकार
गुणीने सामायिक पारवुं ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥

॥अथ श्री प्रतिक्रमण विधिसहित लिख्यते ॥

विधीः—प्रथम " चोविस स्तव " कीजे,
ऊभो रहीने " तिखुत्तो " गुणीजे. देव, गुरु
तथा वडा साधर्मीभाईनी पडिक्कमण ठाव
वानी आगन्या लेईने " इछामिणं भंते
नी पाटी कहीजे ते पाटी कहेवे,

॥ अथ इछामिनी भंतणं पाटी लिख्यते

इच्छामिणं भंते तुम्भेहिं अज्ञणुं नायम
माणे देवसि पडिक्कमणुं ठाएमि देवसि ना
ण, दंसण चारित्त तप अतिचार चिंतवणा
र्थ करेमि काउसग्गं ॥ १ ॥ इति ॥
पछी " नवकार " कहीजे " तिखुत्तारा"
पाठसुं पहिला आवसकनी आगन्या मा
गीनें " करेमि भंते " नी पाटी कहीजे
" इच्छामि ठामी " नी पाटी भणीजे.
॥ अथ इच्छामि ठामिनी पाटी लिख्यते ॥
इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ
अइयारो कउ. काईउ. वाईउ माणसिउ उस्सु
त्तो अकप्पो अकरणिज्जो. दुज्झाउ. दुविचिंति
उ. अणायारो अणिच्छियव्वो. असावग पाउ
ग्गो. नाणे तह दंसणे. चरित्ता चरित्ते, सु
ए सामाइए. तिन्हं गुत्तीणं चउन्हं कसाया
णं. पंचन्हमणुव्वयाणं. तिन्हं गुणव्वयाणं. च
उन्हं सिखावयाणं. वारसविहस्स. सावग
धम्मस्स. जं खंडियं जं विराहियं तस्स मि
छामि दुक्कडं ॥ २ ॥ इति ॥

पछी " तस्सउत्तरी " नी पाटी कहीने उभो रहीने काउस्सग्ग ठाईजे. काउस्सग्गमांहि १४ ग्यानका ५ समकितका ६० बारा व्रतका, १५ कर्मादानका, ५ संलेहणाका, एवं ९९ अतिचारनी चिंतवणा कीजे, ते अतिचार, आप्रमाणे [ तपस्या अशक्तपणा, वगेरे कारणसु उभो रहीने काउस्सग्ग करणकी शक्ति न होय तो नीचे बेसीने काउस्सग्ग ठाईजे. ]

[ १४ ग्यानका अतिचार कहेवे.] आगमे तिविहे पन्नते तंजहा, सुत्तागमे, अथागमे, तदु भयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कांई अतिचार लागा होय ते आलाउं. जंवाइद्धं, वचा मेलियं, हीणखरं, अचखरं, पयहीणं, विनयहीणं जोगहिणं, घोसहीणं, सुठदिन्नं, दुठपडिछियं, अकाले कउ सज्झाउ, काले न कउ सज्झाउ, असज्झाए सज्झायं, सज्झाइए न सज्झायं, भणता, गुणतां चिंतवतां, अने

ने ग्यानवंतोनी आसातना कीनी होय॥

[९ समकितना अतिचार] दंसण समकित. परमछ संथवोवा. सुदिठ परमछ संवणावावी. वावन्न कुदंसण वजणा समत्त सद्दहणा॥ एहवा समकितना समणोवासयाणं. समत्तस्स. पंच अइयारा पेयाला जाणियवा. न समायरियवा. तंजहा ते आलोउं. संका. कंखा. वितिगिछा. परपासंडी परसंसा. परपासंडी संथुवो॥

[६० व्रतांका अतिचार] पहिला थुल प्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा पेयाला जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं. वंधे वहे छविछेए अइभारे भत्तपाणवुछेए॥ १॥ वीजा थूल मृषावाद विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं. सहस्सा भखाणे. रहसा भखाणे. सदारमंतभेए. मोसोवएशे कूडलेह करणे॥ २॥ त्रीजा थूल अदत्तादान विरमण व्रतना पंच

अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोडं, तेन्नाहडे, तक्करप्पउगे, विरुद्ध रज्जाइकम्मे, कूडतोले, कुडमाणे, तप्पडिरूवग ववहारे ॥ ३ ॥ चोथा थूल मेहूण विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोडं, इत्तरपरिग्गहिया गमणे, अपरिग्गहियागमणे, अनंग क्रिडा, परविवाह करणे, कामभोगे सु तिवाभिलासा ॥ ४ ॥ पांचमां थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोडं, खित्तवत्थु पमणाइकम्मे, हिरण सोवन पमाणाइकम्मे, धण धन्न पमाणाइकम्मे दुपद चोपद पमाणाइकम्मे, कुविय पमाणाइकम्मे ॥ ५ ॥ छठा दिशि विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोडं, उड्ढदिशी पमाणाइ कम्मे, अहोदिशि पमाणाइकम्मे, तिर्य दिशि पमाणाइकम्मे, खेत्तवूढी, सयंतरद्धा

॥ ६ ॥ सातमा उवभोग परिभोग दुविहे पनंते तंजहा भोयणाउय, कम्मउय भोयणाय समणोवासयाणं पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं. सचित्ताहारे सचित्त पडिबद्धाहारे, अप्पोलसहि भखणया, दुप्पोलसहि भखणया, तुछोसहि भखणया, कम्मउणं समणोवासयाणं पन्नरस कम्मदाणाई. जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं.

[ १५ कर्मादानका अतिचार ] इंगालकम्मे वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे फोडीकम्मे. दंतवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, लखवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंत्तपिल्लणकम्मे, निलंछणकम्मे, दवग्गिदावणया. सरदहतलाव परिसोसणया, असईजणपोसणया ॥ ७ ॥ आठमा अनर्थदंड विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं, कंदप्पे कुकुइए, मोहरिए संजुताहिगरणे, उवभो

परिभोग अइरत्ते ॥ ८ ॥ नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं. मणदुप्पणिहाणे, वय दुप्पणिहाणे, काय दुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणियाए, सामाइयस्स अणवुठियस्स करणयाए ॥ ९ ॥ दसमा देसावगासिक व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं. आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, वहिया पुग्गल पक्खेवे॥१०॥इग्यारमा प्रतिपूर्ण पोषध व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं. अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सज्जा संथारए, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सज्जा संथारए, अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चारपास वण भूमि, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चारपासवण भूमि, पोसहस्स, सम्मं अणणुपालणया ॥ ११ ॥ बारमा अतिथि संविभाग व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा

तंजहा ते आलोउं, सचित्त निखवणीया, सचित्त पिहणीया. कालाइक्कमे, परोवएस मच्छरियाए ॥ १२ ॥

( ५ संलेहणारा अतिचार ) अपछिम मरणांतिव संलेहणा कुसणा आराहणाना पंच अइयारा जाणियवा न समायरिय वा तंजहा ते आलोउं. इह लोगा संसप्पउगे. परलोगा संसप्पउगे, जिविया संसप्पउगे, मरणा संसप्पउगे. कामभोगा संसप्पउगे ॥ १ ॥

[ १८ पापस्थानक ] १ प्राणातिपात्त २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथून ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ माया मोसो १८ मिथ्यादंसणशल्य. एवं १८ पापस्थानक माहिलुं माहारे जीवें जे कोई, मने, वचने, कायाये करी सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतांप्रत्यें भ

लो जाण्यो होय, एम " ९९ अतिचार, १८ पापस्थानक " काउसग्गमां चिंतवीने पछी " इच्छामिठामि " नी पाटी ' जं विराहियं ' सुधी कहीने ' नवकार ' भणीने काउस्सग्गपारीजे ॥ इति प्रथम ' सामायक ' आवश्यक संपूर्ण ॥

विधि- पछी " तिखुत्तारा " पाठसुं दूजा आवश्यकनी आगन्या मांगीजे, प्रगट एक ' लोगस्स ' नी पाटी कहीजे, इति, दूजो ' चउविसछो ' आवश्यक संपूर्ण. पछे तिखुत्तारा पाठसुं तीजा आवश्यकनी आगन्या मांगीजे. दोयवार " इच्छामिखमासमणा " री पाटी कहीजे. पाटी माहे प्रथम जिहां निसिहियाए,शब्द आवे तिहां उभा गोडा करी. हात जोडीने वसीजे; तथा ६ आवर्त करिजे. ते आ प्रमाणें-प्रथम " अहो कायं काय " ए शब्द उच्चारतां तीन आवर्त हुवे छे. ते कहेछे-दोनुं हात लांवाकरी हाथनी. दश आंगुली भूमिउपर

लगावतां मुखसुं " अ " अक्षर कहेवो. पछे तेमज दश आंगुली आपरा मस्तकने लगावतां " हो " अक्षर कहेवो. ए दोनुं अक्षर केहतां ( १ ) एक आवर्त हुवो; इण हिज रीतिसुं " का "ने " यं " ए दो अक्षर उच्चारतां ( २ ) दूजा आवर्त हुवो, अने " का " ने " य " ए दो अक्षर उच्चारतां ( ३ ) तीजो आवर्त हुवो पछी जत्ता ने. जवणिज्जं. च. ने शब्द उच्चारतां ३ आवर्त हुवेछे ते कहेछे– प्रथम " ज " अक्षर मंदस्वरसुं " त्ता " अक्षर मध्यमस्वरसुं, ने " ने " अक्षर उंचास्वरसुं उपरकी रीतिसुं. मस्तके हात लगावतां कहेवो. एवं ३ अक्षर कहेतां प्रथम आवर्त, तथा ( ज ) ( व ) ( णि ) ए तीन अक्षर त्रिविध सादसुं उपर मुजब उच्चारत्तां दूजो आवर्त, तथा ( ज्जं ) ( च ) ( ने ) ए पिण ३ तीन अक्षर पूर्वनी रीते केहतां तीजो आवर्त होय. एवं ६ आवर्त प्रत्येक पाटीमाहे करीजे त

था " तित्तीसन्नयराए " ए पाठ आवे ति हां पावो उन्नो रहीजे, इणविध दोयवार खमासमणारी पाटी संपूर्ण कहीजे, ते पाटी आगमाणे ॥

॥ अथ खमासमणारी पाटी लिख्यते ॥

इच्छामि खमासमणो. वंदिउं जावणिज्जा ए निसीहियाए, अणुजाणह, मे, मिउग्ग हं. निसिही, अहो, कायं. काय संफासं. खमणिज्जो. भे. किलामो. अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे. दिवसो. वइक्कंतो. जता. भे. जवणिज्जं. च, भे, खामेमि. खमासमणो, देवसियं. वइक्कम्मं. आवसियाए. पडिक्क मामि, खमासमणाणं. देवसियाए. आसा यणाए. तित्तीसन्नयराए. जंकिंचि मिच्छाए. मणदुक्कडाए. वयदुक्कडाए. कायदुक्कडाए. कोहाए. माणाए. मायाए. लोहाए. सव्वका लियाए. सव्वमिच्छोवयाराए. सव्वधम्माइक्कम णाए. आसायणाए. जो. मे. देवसिउ अइ यारो कउ. तस्स खमासमणो पडिक्कमामि.

निंदामि. गरिहामि. अप्पाणं. वोसिरामि॥६॥

विधि—इति तिजो " वंदना " आवश्यक संपूर्ण. पछी ' तिखुत्तारा ' पाठसुं चोथा आवश्यकनी आगन्या मांगीजे. प्रथम काउस्सग्गमाहे ,९९ अतिचार कह्या ते " आगमे तिविहे "नी पाटी थकी " इच्छामि ठामि "नी पाटी सुधीं प्रगटपणे केहवा जिणमाहि प्रत्येक पाटी तथा थूलका छेहरे " तस्स मिच्छामि दुक्कडं " केहवुं पछी " तस्स सवस्स " नी पाटी कहीजे. ते कहेछे,

॥ अथ तस्स सवसकी पाटी लिख्यते ॥

तस्स सवस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भा सियं दुच्चिंतियं आलोयंते पडिक्कमामि ॥ ४ ॥

विधि—पछी नीचे वेसिने जीमणो गोडो उभो करीने " नवकार, करेमिभंते " नी पाटी कहीजे तथा " चत्तारि मंगलं "नी पाटी कहिजे ते पाटी कहेछे ॥

॥ अथ चत्तारि मंगलंकी पाटी लिख्यते ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं. सिद्धा मंगलं. साहू मंगलं, केवलि पणत्तो धम्मो मंगलं ॥ चत्तारि लोगुत्तमा. अरिहंता लोगुत्तमा. सिद्धा लोगुत्तमा. साहू लोगुत्तमा. केवलि पणत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि. अरिहंता सरणं पवज्जामि. सिद्धा सरणं पवज्जामि. साहू सरणं पवज्जा[illegible] केवलि पणत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंताजीको सरणो. सिद्धाजीको सरणो. साधुजीको सरणो. केवलि परूप्या दया धर्मको सरणो ॥

दुहा ॥ चार सरणा दुःखहरणा. ओर न बीजो कोय ॥ जो भवि प्राणी आदरे. तो अखय अचल गति होय ॥ ९ ॥

विधि-पछी " इछामि ठामि " तथा " इरियावही " नी पाटी कहीने ' तिखुत्तारा' पाठसुं व्रत, अतिचार भेळा केहवानी आगन्या मांगीजे ते नीचे लिखेवे [illegible] प्रथम " आगमेतिविहे " नी पाटी [illegible] ते कहेवे

॥ अथ आगमे त्रिविहेनी पाटी लिख्यते॥
आगमे त्रिविहे पणंते तंजहा. सुत्तागमे
अत्थागमे. तदुभयागमे. एहवा श्री ज्ञानने
विषे जे कोई अतिचार लागो होय ते आ
लोउं. जंवाइद्धं वच्चामेलियं हीणख्खरं अच्च
ख्खरं. पयहीणं विनयहीणं जोगहिणं घो
होणं सुठुदिन्नं दुठुपाडिछीयं. अकाले कउ
सज्झाउ, काले न कउ सज्झाउ. असज्झाए स
ज्झायं, सज्झाए न सज्झायं जणतां. गुणतां
चिंतवतां ने विचारतां. ज्ञान अने ज्ञानवं
नी आशातना किनी होय तो तस्स
मिछामि दुक्कडं ॥ ६ ॥
पछी दंसण समकितनी पाटी कहीजे, ते कहे
" दंसण समकित परमछ संथवो वा सु
दिठ परमछ सेवणा वावि ॥ कुदंसण व
णाय एवी सम्मत्त सद्दहणा ॥ एहवा सम
कितना समणो वासयाणं समत्तस्स पंच
अइयारा पयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा
तंजहा ते आलोउं. संका. कंखा. वितिगि

णा. परपासंमीपरसंसा. परपासंडी संथवो. एवं पांच अतिचार मध्ये जे कोई अतिचा र लागो होय तो तस्स मिछामि दुकडं॥७॥ ॥पछी बारे "व्रत अतिचार" कहिजे ते कहेवे,

(१) पहिलुं अणुव्रत थूलाउ पाणाइवाया उ वेरमणं त्रसजीव वेइंद्रिय, तेइंद्रिय चउ रिंद्रिय पचेंद्रिय. जाणि प्रीछी विण अपरा धी आकुटी संकल्पी सल्हेशी. हणवानि मिते हणवाना पच्चख्खाण जावजीवाए दु विहं. तिविहेणं. न करेमि, नकारवेमि. मण सा, वयसा, कायसा, एहवा पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा, पइयाला, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउं. वंधे वहे छविछेए. अइ भारे भत्त पाण वुछेए, तस्स मिछामि दुकडं ॥ ८ ॥ इति ॥

(२) वीजुं अणुव्रत थूलाउ मोसावाया उ वेरमणं कन्नालिए, गोवा[illegible] भोमालिए थापण मोसो, [illegible]

दिक मोटकुं कूठ बोलवा पच्चखाण जावजी वाए, दुविहं, तिविहेणं, नकरेमि, नकारवे मिं, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा बी जा थूल मृषावाद विरमण व्रतना पंच अ इयारा जाणियवा, नसमायरियवा, तंजहा ते आलोउं, सहस्सा नखाणे, रहस्सा न खाणे, सदारा मंतन्नेए. मोसोवएसे, कुड लेह करणे, तस्स मिच्छामि दुकडं ॥ १ ।

(३) त्रीजुं अणुव्रत थूलाउ अदिन्न दाणाउ, वेरमणं. खात्तरखणी. गांठभी छे भी. तालुं परकुंचीयें करी, पडी वस्तु धणी याती जाणीलेवी इत्यादिक मोटकुं अदत्त दान लेवाना पंचखाण, सगा संबंधी, व्य पारसंबंधी तथा निभ्रमि वस्तु उपरांत अ दत्तादान लेवाना पच्चखाण जावजीवाए दुविहं, तिविहेणं, नकरेमि नकारवेमि, म णसा. वयसा. कायसा. एहवा त्रीजा थूल अदत्तादान विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा. न समायरियवा. तंजहा ते आ

लोडं; तेनाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइ
क्कमे, कूडतोले, कूडमाणे, तप्पडिरूवगवव
हारे, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १०॥

(४) चोथुं अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वे
रमणं. सदारा संतोसिए अवसेसं मेहुणावि
हं पच्चखाण, ए पुरुषने, अने स्त्रीने सभर्ता
रसंतोसिए, अवसेसं मेहुणनुं पच्चखाण, अ
ने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाएं करी
मेहुण सेववानुं पचखाण होय, तेहने देव
ता मनुष्य तिर्यंच संबंधी मेहुणनुं पचखा
ण, जावजीवाए देवता संबंधि दुविहेणं, ति
विहेणं न करेमि. न कारवेमि, मणसा. वयसा
कायसा. मनुष्य तिर्यंच संबंधि एगविहं एग
विहेणं न करेमि. कायसा एहवा चोथा थू
लमेहुण विरमणव्रतना पंच अइयारा, जा
णियव्वा. न समायरियव्वा. तंजहा ते आलोउं
इत्तरिय परिग्गहियागमणे अपरिग्गहियागम
णे, अनंगक्रीडा, परविवाहकरणे, काम भोग
सु तिव्वाभिलासा, तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥११॥

( ५ ) पांचमुं अणुव्रत थूलाउ परिग्ग
ह. वेरमणं. खित्तवत्थुनुं यथापरिमाण, हि
रणसोवणनुं यथापरिमाण, धनधान्यनुं
थापरिमाण. दुपदचउप्पदनुं यथापरिमा
कुविय धातुनुं यथापरिमाण, ए यथापरि
ण कीधुंछे, ते उपरांत पोतानुं करी परिग्र
राखवानां पच्चखाण.जावजीवाए.एगविहं.
विहेणं न करेमि,मणसा. वयसा. कायसा. ए
वा पांचमां थूलपरिग्रहपरिमाण व्रतना. पं
अइयारा. जाणियवा. न समायरियवा.
जहा ते आलोउं. खित्तवत्थुप्पमाणाइक्क
हिरणसोवणप्पमाणाइक्कमे. धनधाणप्प
णाइक्कमे दुपदचउपदप्पमाणाइक्कमे. कुवि
प्पमाणाइक्कमे. तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१

( ६ ) छठुं दिशिव्रत, ऊर्ध्वदिशिनुं
था परिमाण, अधोदिशिनुं यथापरिमाण
तिरियदिशिनुंयथापरिमाण. ए यथापरि
ण कीधुं छे. ते उपरांत सइच्छायें कायायें
इने पंच आश्रव सेववानां पच्चखाण, जा

जीवाए, दुविहं, तिविहणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा कायसा; एहवा छठादिशि व्रतना पंच अइयारा, जाणियवा न समायरियवा तंजहा ते आलोउं, उड्ढ दिसिप्पमाणाइक्कमे, अहो दिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुढ्ढि सयंतरद्धाए, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥१३॥

(७) सातमुं व्रत उवभोग परिभोग विहं पच्चखायमाणे उल्लणियाविहं, दंतणविहं, फलविहं, अभंगणविहं उवट्टणविहं, मज्जण विहं वछविहं, विलेवणविहं, पुप्फविहं, आभरणविहं, धूपविहं, पेजविहं, भखणविहं, उदनविहं, सूपविहं, विगयविहं, सागविहं, माहुरविहं, जिमणविहं, पाणीविहं, मुखवासविहं, वाहनिविहं, वाहनविहं, सयणविहं, सचित्तविहं, दव्वविहं, इत्यादिकनुं, यथापरिमाण कीधुं छे ते उपरांत उवभोग परिभोग भोगनिमित्तें भोगववा पचखाण, जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं, न

करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सात
मा उवभोग परिभोग दुविहे पन्नत्ते तंजहा.
भोयणाउय. कम्मउय. भोयणाउ. समणो
वासयाणं पंच अइयारा. जाणियवा. न स
मायरियवा. तंजहा ते आलोउं. सचित्ता
हारे, सचित्तपडिबद्धाहारे, अप्पोलिउसहि
भखणया, दुप्पोलिउसहिभखणया, तुछो
सहिभखणया, कम्मउण समणोवासयाणं,
पनरस कम्मादाणाइ. जाणियवा. न समा
यरियवा, तंजहा ते आलोउं, इंगालकम्मे, वण
कम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे,
दंतवाणिज्ज, लखवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, रसवा
णिज्ज, विसवाणिज्ज, जंतपिल्लणकम्मे, निलं
छणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलाव
परिसोसणया, असईजण पोसणया, तस्स
मिछामि दुक्कडं ॥ १४ ॥ इति ॥

(८) आठमुं अनर्थदंड विरमण व्रत,
ते चउविहे, अणट्ठादंडे, पणत्ते, तंजहा,
अवझाणायरिए, पमायायरिए, हिंसप्पया

ा, पावकम्मोवणसे, एहवा अनर्थदंड से
वा पच्चखाण जावजीवाए, दुविहं, तिवि
हेणं. न करेमि न कारवेमि. मणसा. वय
सा, कायसा. एहवा आठमा अनर्थदंड वि
रमण व्रतना पंच अइयारा. जाणियवा, न
ायरियवा, तंजहा ते आलोउं, कंदप्पे
कुइए. मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे. उवभोग
रिभोग अइरत्ते. तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥१८॥
(९) नवमुं सामायिक व्रत. सावज्जजो
गं, वेरमणं. जावनियमं. पज्जुवासामि, दु
विहं. तिविहेणं. न करेमि, न कारवेमि. म
णसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणु, जाणा
इ. वयसा. कायसा, एहवी सद्दहणा. परू
—ा, करियें तिवार फरसनायें करी शुद्ध.
हवा नवमा सामायिक व्रतना पंच अ
यारा, जाणियवा. न समायरियवा. तंज
हा, ते आलोउं. मणदुप्पणिहाणे, वयदु
प्पणिहाणे काय... सामाइयस्स
सइविहूणे पच्चखियाए ...

अणवुठियस्स करणयाए. तस्स मिच्छामि
दुक्कडं ॥ १६ ॥ इति ॥

( १० ) दसमुं देसावगासिक व्रत. दि
व्रतें प्रनातथकी मारंनीने पूर्वादिक दिश
जेटली नूमीका मोकली राखी वे, ते उ
गंत. सइच्छायें. कायायें. जइने. पांच
श्रव सेववा पच्चखाण. जाव अहोरत्तं.
विहं. तिविहेणं. न करेमि. न कारवेमि
मणसा. वयसा. कायासा. करंतं नाणुज
णिज्जा. वयसा. कायसा. जेटली नूमिक
मोकली राखी वे. तेमांहिज जे द्रव्यादि
नो मर्यादा कीधी वे. ते नोगववी ते उ
गंत. उवनोग. परिनोग. नोगनिमित्ते न
गववा पच्चखाण. जावअहोरत्तं. एगविहं.
विहेणं. न करेमि. न कारवेमि, मणसा,
यसा. कायसा, एहवा दशमा. देशावग
शिक व्रतना. पंच अइयारा जाणियवा
समायरियवा, तंजहा. ते आलोउं, आण
णप्पओगे. पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाइ. रूव

र दिशि. पल्यंकादिक आसणें बेसीने कर
यल संपरिग्गहियं सिरसावत्तं मच्छए अंज
ली त्तिकट्टु. एवं वयासी नमोत्थुणं. अरिहं
ताणं भगवंताणं, जावसंपत्ताणं. एम अनं
ता सिद्धजीने नमस्कार करीने, जयवंता
वर्तमान तीर्थकरने, नमस्कार करिने, पो
ताना धर्माचार्यने नमस्कार करिने, साधु
प्रमुख चारे तीर्थ खमावीने सर्व जीवराशि
खमावीने, पूर्वे जे व्रत आदर्यां छे तेना
जे अतिचार दोष लाग्या होय, ते सर्वने
आलोइ पडिकमी. निंदी. निःशल्य थइने,
सव्वं पाणाइवायं पच्चखामि, सव्वं मुसावायं
पच्चखा[illegible], सव्वं अदिन्नादाणं पच्चखामि.
[illegible] पच्चखामि सव्वं परिग्गहं पच्चखा
कोहं माणं जाव मिच्छा दंसण स
अकरणिज्जं पच्चखामि. जावजीवाए.
[illegible]विहेणं. न करेमि. न कारवेमि.
[illegible]णुजाणामि मणसा. वयसा काय
अढारे पाप स्थानक पच्चखीने. स

णणुपालणया. तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ १८॥
(१२) बारमुं अतिथि संविभागव्रत.
समणे निग्गंथे. फासुअं एसणिज्जेणं. असणं
पाणं. खाइमं. साइमेणं. वच्छ. पडिग्गह. कं
बल. पायपुच्छणेणं, पाडिहारिय. पीढ, फल
ग, सिज्जासंथारएणं, उसह भेसज्जेणं, पडि
लाभेमाणे. विहरामि, एहवी सद्दहणा,
रूपणा. फरसनायें करी शुद्ध. एहवा बा
मा अतिथि संविभाग व्रतना, पंच अइय
रा जाणियवा, न समायरियवा. तंजहा ते
आलोउं, सचित्त नीखेवणिया. सचित्त पि
हणिया, कालाइक्कमे, परोवएसे.मछरियाए
तस्स मिछामिदुक्कडं॥ १९॥ इति॥
पीछे "संलेपणा" को पाठ कहीजे. तेकहे
अपछिम मरणांतिय संलेहणां, झूसणा
आराहणा. पोषधसाला पूंजीने, उच्चार प
सवण भूमिका. पडिलेहीने. गमणागमणे
पडिक्कमीने. दर्भादिक संथारो संथारीने
दर्भादिक संथारो दुरुहिने, पूर्व तथा उत्त

र दिशि. पल्यंकादिक आसणें वेसीने कर यल संपरिग्गहियं सिरसावत्तं मच्छए अंज ली त्तिकट्टु. एवं वयासी नमोत्थुणं. अरिहं ताणं जगवंताणं, जावसंपत्ताणं. एम अनं ता सिद्धजीने नमस्कार करीने, जयवंता वर्तमान तीर्थकरने, नमस्कार करिने, पो ताना धर्माचार्यने नमस्कार करिने, साधु प्रमुख चारे तीर्थ खमावीने सर्व जीवराशि खमावीने, पूर्वे जे व्रत आदर्यां छे तेना जे अतिचार दोष लाग्या होय, ते सर्वने आलोइ पडिक्कमी. निंदी. निःशल्य थइने, सव्वं पाणाइवायं पचखामि, सव्वं मुसावायं पचखामि, सव्वं अदिन्नादाणं पचखामि. सव्वं मेहुणं पचखामि सव्वं परिग्गहं पचखा मि. सव्वं कोहं माणं जाव मिच्छा दंसण स ल्लं. सव्वं अकरणिज्जं पचखामि. जावजीवाए. तिविहं तिविहेणं. न करेमि. न कारवेमि. करंतंपि नाणुजाणामि मणसा. वयसा काय सा. एम अढारे पाप स्थानक पच्चखीने. म

यं. असणं. पाणं खाइमं, साइमं चउविहंपि आहारं पच्चखामि. जावजीवाए. एम चार आहार पच्चखीने, जंपीयं. इमं सरीरं इठं कंतं, पियं, मणुणं, मणाणं. धिज्जं, विसासि यं समयं. अणुमयं. वहुमयं. भंडकरंडसमाणं रयणकरंडगभूयं. माणसियं. माणं उन्हं. माणं खूहा, माणं पीवासा. माणं वाला. माणं चोरा. माणं दंसा, माणं मसगा. माणं वाहियं, पित्तियं, कप्फियं संभीमं. सन्निवाहियं विवहारोगायंका, परिसहा, उवसग्गा, फासा फुसंति. एवं पीयणं चरिमेहिं, उस्सास निस्सासेहिं. वोसिरामि त्तिकट्ठु. एम शरीर वोसिरावीने, कालं अणवकंखमाणे, विहरामि, एहवी सद्दहणा परूपणा करियें. ति वारे फरसनाये करी शुद्ध. एहवा अपच्छिम मरणांतिय. संलेहणा. झूसणा, आराहणा ना पंच अइयारा. पयाला जाणियवा तंजहा ते आलोउं. इहलोगासंसप्पउगे. परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे. मरणासं

उमि, आराहणाए, विरउमि विराहणाए, ति
विहेणं पमिकंतो. वंदामि जिणे चउवीसं॥२४॥
विधिः—पछी " इच्छामि खमासमणा "
नी पाटी दोय वार विधि पूर्वक कहीजे, प
छी आज्ञा लहीने उक्कडु आसणे बेसी बेहु
हाथ गोडानी वचाले राखी धरतीयें मस्त
क लगावीने.
" पांच पदारी वंदणा " करीयें ते कहेवे:-
इहां प्रथम नवकार कहेवो, पछी १ पहि
ले पदें श्री अरिहंतजी ते जघन्यथी वीश
तिर्थंकरजी. उत्कृष्टा एकसो सित्तेर दे
वाधिदेवजी तेमांहि वर्त्तमान कालें वीश
विहरमानजी माहाविदेह क्षेत्रमांहि विचर
वे. एक हजार आठ लक्षणना धरणहार;
चोत्रीश अतिशय पेंतीस वाणीयें करी वि
राजमान वे. बार गुणें करी सहित, अढार
दोषथकी रहित. चोसठ इंद्रना वंदनिक पू
जनिक, अनंत ज्ञान. अनंत दर्शन. अनं
त चारित्र. अनंत बलवीर्य, अनंत सुख.

... पर्यांस, आर्यदत्त स्वांदि सिंहासन ... सोमदत्त, ... ... च ... प्रकार प्रकार ... ... पुण्याकार पताका ... पुण्याकार, ... ... ... नी ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... सर्व द्रव्य ... ... आणवाकार ॥

... ॥ नमुं श्री अरिहंत, कर्मा ... ... नां ... ... करुणा ... ... ॥ ... ... धार, ... वाणी ... ..., ... नर नार, प्र उपगारी है। ... ... ... ॥ ... ... ... ... दोष परिहारी है ॥ ... ... ... मन वच काय करी, ... ... वारंवार, वंदणा हमारी है ॥ १॥ ... अरिहंत भगवंत दीन दयाळ महाराज ... दिवस संबंधी अविनय, आशातना, ... हाथ नां हाथ जोडी, मान मोडी.

काय संकोडी, वारंवार खमावुं छुं मळ्ए
वंदामि १००८ वार नमस्कार करुं छुं. ।
रखुत्तो. आयाहिणं, पयाहिणं वंदामि. न
सामि. सकारेमि. सम्माणेमि. कल्लाणं.
गलं. देवयं. चेइयं पज्जुवासामि " आप
गलिकछो. उत्तम छो. हे स्वामिनाथ ! अ
पको इण भवें परभवें भवोभवें सदाका
शरणो होजो ॥ २३ ॥

॥ इति प्रथम पद संपूर्ण ॥

२ बीजे पदें श्री सिद्धभगवंत महाराज
पन्नर भेदे अनंता सिद्ध छे, आठ कर्म
पावीने मोक्ष पहोता छे. १ तीर्थ सिद्धा.
अतीर्थ सिद्धा. ३ तीर्थंकर सिद्धा. ४ अ
र्थंकर सिद्धा. ५ स्वयं बुद्ध सिद्धा. ६ प्र
क बुद्ध सिद्ध.७ बुद्ध बोधित सिद्धा. ८
लिंग सिद्धा. ९ पुरुष लिंग सिद्धा. १०
पुंसकलिंग सिद्धा ११ स्वलिंग सिद्धा.
अन्यलिंग सिद्धा. १३ गृहस्थलिंग सिद्धा.१
एक सिद्धा. १५ अनेक सिद्धा. जिहां जन

नही. जरा नही, मरण नही. नय नही. रोग नही. सोग नही. दुःख नही. दारिद्र नही. कर्म नही. काया नही, मोह नही; माया नही. चाकर नही. ठाकर नही. नू ख नही तृपा नही, ज्योतिमे ज्योति विरा जमान, सकल कारज सिद्ध करीने चउदे प्रकारे पन्नरे नेदें अनंता सिद्ध नगवंत हु वा, अनंत सुखमां लीन, अनंत ज्ञान, अनं त दर्शन, अनंत चारित्र. द्यायिकसमकि त, निरावाध, अटल अवगाहना. अमूर्ति, अगुरुलघु, अनंतवीर्य आठगुणें करी सहित

॥ सवैया ॥ सकल करम टाल. वश कर लियो काल ॥ मुगतिमें रह्या माल, आत माका तारी हे ॥ देखत सकल नाव, हुवा हे जगत राव, सदाही क्षायिक नाव, नये अविकारी हे ॥ अचल अटल रूप. आवे नविनवकूप ॥ अनुप सरूप ऊप, ऐसे सि द्धधारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, बतावां ए वास प्रनु ॥ सदाही उगत सूर, वंदणा

हमारी है ॥ २ ॥ ऐसा सिध्द भगवंतजी
महाराज आपको दिवस संबंधी अविनय
आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मा
न मोडी काय संकोडी वारंवार खमाउं
छुं, तिखुत्ताना पाठसुं मत्थएण वंदामि नम
स्कार करुं छुं. १००८ वार यावत् भवो भ
व शरणं होजो ॥ २४ ॥

३ त्रीजे पदें श्रीआचारजजी छत्तीस गु
णं करी विराजमान. पांच महाव्रत पाले
पांच आचार पाले, पांच इंद्रिय जीते. च
र कषाय टाले. नव वाड शुध्द ब्रह्मचर्यना
पालणहार, पांच समितियें समित्ता तीन गु
प्तियें गुप्ता. आठ संपदा सहित ॥
॥सवैया॥ गुण हे छत्तीस पूर. धारत धरम उर
मारत करम क्रूर, सुमति विचारी हे॥शुध्दसं
आचारवंत, सुंदर हे रूपवंत, जाणिया स
बि सिद्धंत, वांचणी सुप्यारी हे ॥ अधि
क मधुरवेण, कोइ नहीं लोपे केण, सकल
जीवांका सेण, कीरत अपारी हे॥ कहत हे जि

लोकरिख. हितकारी देत सीख. ऐसा आचारज ताकुं, वंदणा हमारी हे॥ १ ॥ऐसा आचारज न्यायपक्षी. भद्रकपरीणामि. परम पूज्य. कल्पनिक अचित वस्तुका ग्रहणहार. सचित्तका त्यागी, वैरागी, महागुणी गुणका अनुरागी, सोभागी, एहवा श्री आचारजजी महाराज आपकी दिवस संबंधि अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोडी काया संकोची वारंवार खमावुं छुं, १००८ वार तिखुत्ताना पाठथी मच्छएण वंदामि एटले नमस्कार करुं छुं, यावत् भवोभव शरणुं होजो॥२८॥

४ चोथे पदे श्री उपाध्यायजी महाराज पच्चीश गुणें करी सहित छे. ते पच्चीश गुण कहेछे ? इगियारा अंगना भणणहार, ते इगीयार अंग कहे छे, श्री आचारांगजी, सूयगडांगजी. ठाणांगजी. समवायांगजी, भगवत्तीजी, ज्ञाता धर्मकथाजी, उपासकदसांगजी. अंतगडदसांगजी. अनुत्तरोववा

ईजी, प्रश्नव्याकरणजी, विपाकसूत्रजी ॥
इग्यारा अंगनो अर्थ पाठ संपूर्ण जाण
( १२ उपांग भणे, ते ) उववाइजी, रायप
सेणीजी, जीवाभिगमजी, पन्नवणाजी. जंबु
द्वीपपन्नत्ती, चंदपन्नत्ती, सूरपन्नत्ती. निरया
वलिया, कप्पवडंसिया. पुप्फिया, पुप्फचू
लिया, वन्हिदिशा ( ४ मूल सूत्र ) उत्तरा
ध्ययन. दशवैकालिक. नंदीसूत्र, अनुयो
द्वार ( ४ छेद ग्रंथ ) दशाश्रुत स्कंध, वृह
त्कल्प. व्यवहार. निशीथ अने बत्तीस
आवश्यक ॥ आदि देइ अनेक ग्रंथना ज
णनार. चौद पूर्वना पाठी. सात नय. नि
श्चय व्यवहार. चार प्रमाणादिकें करी स्व
मत तथा अन्यमतका जाण. मनुष्य अ
वा देवता कोइ पिण जेने विवादमा छ
वाने समर्थ नही. जिन नही पिण जिन
सरिखा. केवली नही पिण केवलीसरिखा

सवैया ॥ पढन इग्यारा अंग. करमा
करे जंग. पाखंडीको मान भंग. करण

स्यारी है॥ चउदे पूरवधार. जानत आगम
सार ॥ भवियनके सुखकार, भ्रमता निवारी
है ॥ पढावे भविक जन, थिर कर देत मन
॥ तप करी तावे तन. ममता निवारी है ॥
कित है तिलोक रिख, ज्ञानभानु परतिख ॥
ऐसे उपाध्याय ताकुं, वंदणा हमारी है ॥
॥ १ ॥ ऐसा श्री उपाध्यायजी महाराज
थ्यात्वरूप अंधकारना मेटणहार, सम
तरूप उद्योतना करणहार, धर्मथ
ो रुगतां प्राणीने थिर करे. सारए, वारए.
ारए. इत्यादिक अनेक गुण सहित छे.
हवा जे श्री उपाध्यायजी महाराज आप
की दिवससंबंधी अविनय आशातना की
धी होय तो हाथ जोडी मान मोडी. का
या संकोडी, वारंवार खमावुं छुं १००८ वा
र तिखुताना पाठथी मछएण वंदामि एट
ले नमस्कार करुं छुं या ... वोभव शर
एं होजो ॥ २६ ... ति ... ते
पांचमें ...

र्माचार्यजी (आ ठेकाणें आप आपका गु
रु महाराजको नाम लेणो) आद देइने ज
घन्य तो दोय हजार क्रोड साधु साधवी.
उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधु साधवी.
अढाईद्वीप पन्नरे क्षेत्रमें जयवंता विचरे छे.
ते साधुजी केहवा छे ? पांच महाव्रतका पा
लणहार. पांच इंद्रियोंका जितणहार. च
र कषायका टालणहार. भाव सच्चे. कर्ण स
च्चे, जोगसच्चे, क्षमावंत. वैराग्यवंत ...
धारणीया. वयसमाधारणीया, क... पू
रणीया. नाण संपन्ना, दंसणसंपन्ना, च
त्तसंपन्ना. वेदणीसमा अहियासनिया.
णांतिसमा अहियासनिया. एहवा सत्त
वीस गुणे करी सहित, बार भेदें तपका क
रणहार. सत्तर भेदें संजमना पालणहार
तत्तीस आशातनाका टालणहार, बेतालीश
दोष टालीने आहार पाणीका लेवणहार.स
त्तेनालीस दोष टालीने आहारपाणी भोग
णहार,बावन अनाचीर्णका टालणहार,तेड्या

टले नमस्कार करुं छुं. जावत सदाकालशा
णुं होजो ॥२७॥ इति पांचमुं पद संपूर्ण॥५॥

विधिः—पछी ऊना थइ आयरिय उव
ज्झाए कहीजे. ते कहे छेः—

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए
कुलगणे अ ॥ जे मे केइ कसाया. सव्वे ति
विहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघ
स्स, भगवउ अंजलिं करिय सीसे ॥ सं
खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥
सव्वस्स जीव रासिस्स, भावउ धम्म निहि
य नियचित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि
सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पछी अढाइ द्वीपनो पाठ कहीजे. ते कहेछेः—

अढाइद्वीप तथा पन्नर क्षेत्र मांहि त
था बाहर. श्रावक श्राविका दान देवे. शी
ळ पाळे. तपस्या करे, भावना भावे, संव
र करे सामायिक करे, पोसह करे, पडिक
मणा करे, तीन मनोरथ. चउदे नियम
चिंतवे. एक व्रत, धारी, जाव बारव्रतधारी

का जे भगवंतकी आज्ञामांहि विचरे, अ
ाराथकी मोटाने हाथ जोडी, पगें लागीने.
खमावुं छुं, मोटाने वारंवार खमावुं छुं ॥३०॥
विधिः—पछी " चोराशी लाख जीवा यो
नि " खमाववानो पाठ कहीयें पछी " खा
मेमि सव जीवेनो " पाठ कहीयें ते लखीयें छैये,
॥ अथ चोराशीलाख जीवायोनि प्रारंभः॥
सात लाख पृथ्विकाय. सात लाख अ
पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वा
उकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय,
चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे
लाख बेंद्रिय, बे लाख तेंद्रिय, बे लाख चौ
रिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नार
की. चार लाख तिर्यच पंचेंद्रिय, चौद लाख
मनुष्य, एवं चोराशी लाख जीवायोनिमा
हे महारे जीवें, जे कोइ जीव हण्यो होय.
हणाव्यो होय. हणतां प्रत्यें अनुमोद्यो हो
य. ते सवि मनें, वचनें, कायायें करी १८
२४, १२० अठारे लाख चोवीस हजार

कसोवीस प्रकारे तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥३१॥
॥ अथ खामेमि सव्वजीवेनो पाठ प्रारंभः ॥
खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे
॥ मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ
॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहि
अ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिकंतो,
वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ३२॥ इति ॥
विधिः—पछी "अढारे पापस्थानक" क
हीजे, इति सामायिक, चउविसच्छो, वंदणा,
पडिक्कमणुं चार आवश्यग्ग पूरां थयां.
व तिखुत्ताना पाठसेंति पांचमा अ व२
ग्गनी आज्ञा लीजे ॥
पछी "देवसिक प्रायश्चित्त" कहिजे तेकहे
देवसिक प्रायश्चित्तविशुद्धनार्थं करे
काउस्सग्गं ॥ ३३ ॥ इति ॥
विधिः— पछी " नमो अरिहंताणंथी
डी यावत् नवकारनो संपूर्ण पाठ " कही
जे, पछी " करेमि भंते सामाइयंथी मांडी
अप्पाणं वोसिरामिथी पाठ कहीजे " पछी

ामि ठामि काउस्सग्गथी मांमीने यावत्
तस्स मिच्छामि दुक्कडं" पर्यंत पाठ क
जे पछी " तस्स उत्तरीकरणेणं " थी मां
नि अप्पाणं वोसिरामि सुधीनो पाठ क
निं पछी काउस्सग करवो. तेमां मनमां
वसि. राइसि ( ४ लोगस्स ) नुं ध्यान की
जे, पखी पडिक्कमणे ( १२ लोगस्स) नुं ध्या
न कीजें. चोमासी पडिक्कमणे ( २० लोग
— ) नुं ध्यान कीजे, संवत्सरी पडिक्कमणे
० लोगस्स ) नुं ध्यन कीजे, संवत्सरी
धि चालीश लोगस्सनी काउस्सग्ग लि
यो छे, परंतु एमां केटला एक न्याइया
गुन काउस्सग्ग पिण करे छे, माटे जेमना
र्माचार्यना आदेश उपदेश मुजब जेट
श लोगस्सना काउस्सग्ग करवानी परंप
रा चालती आवेली होय तेमणे तेटला लो
गस्सनो काउस्सग करवो. पछी नमो अ
हंताणं कही काउस्सग्ग पारीजे. पछी क
उस्सग्गमांहि आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, ध

युं होय, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्यायुं होय. तस्स मिच्छामि दुक्कडं, एम कहिजे, पछी प्रगटपणे ( एक लोगस्स ) कहिजे. पछी पूर्वली परे " इच्छामि खमासमणाथी मांडीने अप्पाणं वोसिरामि " पर्यंतनो पाठ दोय वार कहीजे. इति सामायिक. चोविसत्थो. वंदनक. पडिक्कमणुं अने काउस्सग्ग ए पांच आवश्यक पूरां थया ॥

हिवे छठा आवश्यकना कामी इम कही. पछी गुरु मुनिराज पासें तथा वडेरा पासें, इणरो योग न हुवे, तो आपणामेले पच्चखाण धारणा प्रमाणे करीयें ते कहेछे:-

गंठीसहि मुठीसहि, नवकारसी, पोरिसी, साड्ढ पोरिसी. आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहंपि. चउविहंपि, आहारं. असणं. पाणं. खाइमं. साइमं. अन्नत्थणाभोगेणं. सहसागारेणं. महत्तरागारेणं. सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥ ३१ ॥

विधिः—सामायिक. चउविसत्थो. वंदनक,

पडिकमणुं, काउस्सग्ग अने छठुं पच्चखाण,
ए छ आवश्यकमांहि जाणतां अजाणतां जे
कांइ अतिचार दोष लाग्यो होय, तथा पा
ठ उच्चारतां कानो, मात्रा, मींडुं, पद अक्ष
र अधिको ओछो हलवो भारी आघो पाछो
कह्यो कहेवाणो होय. तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥
मिथ्यात्वनुं पडिकमणुं, अव्रतनुं पडिकमणुं,
कषायनुं पडिकमणुं, प्रमादनुं पडिकमणुं,
अशुभ जोगनुं पडिकमणुं ए पांच पडिक
मणामांहेलुं पडिकमणुं नहीं कीनुं होय, त
स्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ गया कालनुं पडिक
मणुं, वर्तमान कालना संवर, आवता का
लनां पच्चखाण, तेने विषे जे दोष लाग्यो
होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३९ ॥ थूइ थ
इ मंगलं ॥

हिवे नीचें वेसी भावो गांडो उभो रा
खीने वे वार नमोत्थुणं कहीजे, पछी उभा
थइने श्री सीमंधरस्वामीजी प्रत्यें पांचे अं
ग नमावीने तिक्खुत्ताना पाठथी १००८ वार

वंदना करुं छुं, एम कहीने नमस्कार क
वो, पछी पोताना धर्माचार्यजीने
ना पाठथी वंदना करीने उपाश्रयमां ज
कोई मुनिराज होय तो तेमने पिण
त्ताना पाठथी वंदना करीने खमाववुं,
छी तिहांज रहेला साधर्मिभाइउ मां
जे तपस्या करनार होय तेमने सु
पूछीने खमत खामणां करवां, अने न्य
धर्मिभाइउ साथे,पिण अविनय अ
संबंधी खामत खमणां करवां,
णामाहे मिछामि दुक्करं आवे, तिहां दिवस
संबंधी, मिछामि दुक्कडं दीजे. राइसीमें रा
इसी संबंधी. पखीमें देवसीपखी संबंधी
चोमासीमें. देवसी चोमासी संबंधी. संव
रीमें संवत्सरी संबंधी. मिछामि दुक्करं
म कहीजे ॥ए परिक्रमणविधि कह्यो. बीजो
अंतर विधि वली ग्रंथमांथी जाणवो ॥
॥अथ विधि सहित दश पच्चखाण प्रारंभः॥
॥ तिहां प्रथम नमुकारसहिअंनुं पच्चखाण॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खामि
चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसि
रामि ॥ १ ॥

॥अथ बीजुं पोरिसि साढपोरिसिनुं पच्चखाण॥
उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चखामि चउव्विहं
पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ
न्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं
दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्ति
आगारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥ एम साढपोरि
सियं पच्चखामि पिण कहेवो.

॥ अथ त्रीजुं पुरिमढनुं पच्चखाण ॥
उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चखामि चउव्विहं
पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ
न्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं
दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं
सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथुं विगइ निविगइनुं पच्चखाण
विगइओ निविगइओ पच्चखामि अन्नत्थ

णाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंस
ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्च मक्खिएणं पारि
ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमा
हिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ॥ ४ ॥

॥अथ चोथुं निविगइनुं एकासणनुं पच्चखाण॥

उग्गए सूरे निविगइ एकासणं पच्चखामि
तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ
न्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिह
त्थसंसठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं
पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्व
समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

अथ पांचमुं एकासणाबियासणानुं पच्चखा

उग्गए सूरे एगासणं बियासणं पच्च
मि दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खा
मं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सा
गारियागारेणं आउंटण पसारेणं गुरुअब्भुट्ठा
णेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं स
व्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ६ ॥

॥ अथ छठुं एकलठाणनुं पच्चखाण ॥

उग्गए सूरे एगलठाणं पच्चखामि ॥ ति
हंपि आहारं असणं. खाइमं, साइमं, अ
न्नछणा नोगेणं सहसागारेणं सागारिआगा
रेणं गुरुअभ्भुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं
महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वो
सिरामि ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमुं आंबिलनुं पच्चखाण ॥

उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चखामि तिवि
हंपि आहारं असणं. खाइमं. साइमं, अन्न
छणानोगेणं सहसागारेणं लेवालेवणं गिहछ
संसठेणं उखित्तविवेगेणं पारिठावणिआगा
रेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगा
रेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण
वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा
वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ आठमुं चउविहार उपवासनुं पच्चखाण
उग्गए सूरे अन्नत्तठं पच्चखामि चउवि
पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ
न्नछणा नोगेणं सहसागारेणं पारिठावणि

गारेणं महत्तरागारेणं ... समाहिवत्तिया
णं वोसिरामि ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमुं ... पचख
उग्गए सूरे अन्नत्तठं पचखामि
पि आहारं असणं खाइमं साइमं
णाजोगेणं ... गारे
महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं
एहार पोरिसिं पचखामि ॥ अन्नछणाभो
णं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहे
साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिव
यागारेणं पाणस्स लेवेण वा. अलेवेण वा
अछेणवा. बहुलेवेण वा, ससिछेण वा
असिछेण वा, वोसिरामि ॥ ९ ॥

॥ अथ दसमुं राते उचविहार करवो, तेनुं प
खाण तथा भवचरिमनुं पचखाण लिख्यते
दिवसचरिमं पचखामि चउविहंपि
हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्
नागेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवस
हिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ १० ॥

य गंठ,मुठसहियादि अभिग्रहनुं पचखाण
सूरे उग्गए गंठसहिअं मुठसहिअं पच्च
ामि चउविहंपि आहारं असणं पाणं खा
मं साइमं अन्नच्छणाभोगेणं सहसागारेणं
महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वो
सिरामि ॥ ॥ इति ॥
अथ चउद नियम धारनारने देसावगासिक
॥ अभिग्रहनुं पचखाण ॥
देसावगासिअं उवभोगं पचखामि अन्न
न्ना भोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं
ोसिरामि ॥ इति पचखाण विधि संपुर्ण ॥
अथ श्रावकने चार शरणां लेवांनो पाठ प्रारंभ
चत्तारि सरणं पविज्जामि, अरिहंता स
रणं पडिवज्जामि, सिद्धा सरणं पडिवज्जामि,
ाहु सरणं पविज्जामि, केवलिपणत्तं धम्मं
रणं पविज्जामि, ॥ पहिलुं सरणुं श्री अ
रिहंत भगवंतजीनुं उत्पन्न विमल केवलना
णें करी, सूर्यनी परें प्रकाशना करणहार,
मिथ्यात्वरूप तिमिर ... णहा

र, समकित शुद्धधर्मना दयणहार वे, अनं
त ज्ञानी वे, अनंत चारित्र, अनंतलोचन,
अनंतगुण, अनंतजीवना रक्षपाल, जगदा
रु,जगतूजीवन, जगत्लोचन, परमआल्हाद
क, हर्षआनंदना उपजावणहार, मोक्षमा
गना देखाडणहार, अन्नयदानना दयणहा
र,शरणना दयणहार, संजम जीवितव्यन
दयणहार, जगत्ना मित्र, जगदीश्वर,
समोसरणमां विराजमान थइने ...
वर्त भवनी परें धर्मना वचनोने ...
ने नविक जीवोना संदेहने नांजतां थका
विचरे वे, एवा निर्विकारी जेमनी शांतमु
द्रा जोवाथी काम, क्रोध, लोन्न अने मो
हादिक अनादिना दोषमिटे, अंतरमां शां
वरनी शेली प्रगटे, सर्व समकती जीवना
प्राणाधारक, सकलगुनि मनमोहन, एवा
श्री अरिहंत नगवंत पांच नरत पांच एर
वत, पांच माहाविदेह क्षेत्रनेविषे अनंता
अरिहंत नगवंत थया अने हमणां माहा

देह क्षेत्रने विषे संख्याता अरिहंत नग
ंत केवलि घणा नव्य जीवोने तारता वि
चरे छे, एहवा श्री अरिहंत नगवंतजीनुं प
हिलुं सरणुं पमिवजुं छुं ॥ इति प्रथम शर
णुं ॥ समाप्त. ॥ १ ॥

अथ द्वितीय शरणुं श्री सिद्धनगवंतनुं प्रारंनः

सिद्ध नगवंतजी इकतीस गुणे करी शा
ता शोने छे, ते गुण कहे छे. पांच नेदें
ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयना करणहार, न
व नेदें दर्शनावरणीय कर्मना क्षयना कर
णहार, बे नेदें वेदनीय कर्म तेना क्षयना
करणहार, बेहु नेदें मोहनीय कर्म तेना क्ष
यना करणहार, चार नेदें आयुःकर्म तेना
क्षयना करणहार, बे नेदें नाम कर्म तेना
क्षयना करणहार. बेहु नेदें गोत्रकर्मना क्ष
यना करणहार, पांच नेदें अंतराय कर्मना
क्षयना करणहार, वली घणा अतिशये क
री विराजमान ते अतिशय कहियेछे. ण
दीहे, ण हस्से. ण वट्टे, ण तंसे. ण च

ने, ण परिमंडले, ण किल्हे, ण निल्हे, ण लो
हिए, ण हलीदे, ण सुकिले, ण सुरहिगंधे,
ण दुरहिगंधे, ण तिखे, ण कडुवे, ण कसा
ले, ण अंबिले, महुरे, ण ककडे, ण म
ए, ण गुरुए, ण सीए, ण उन्हे, ण सनिद्धे, ण
लुखे. ण काउ. ण रूवे, ण संगेहणे, ण इत्थी
ण पुरिसे. ण नपुंसगे, ण मोहे. एहवा
इ नेदें पनरे प्रकारें करी सिद्धनगवंत
ठ ज्ञान, केवलदरिसण. क्षायिक
गा धरणहार. अनंत अतिशयें करी
जमान, सिद्धे. बुद्धे परंपारगते. अजर.
मर. अखय. अव्याबाध. निःकलंक. नि
कार. निरंजन. अशरीरी. जीवस्वरूपी.
हां एकसिद्ध. तिहां अनंता सिद्ध. लोकाग्र
नागने विषे विराजी रह्या छे. सर्व कर्म
क्चूर करी खपावीने ज्ञानानंदे करी नरपू
र थकां मोक्षनगरनुं राज्यनोगवे छे. अनं
त कालें अनंता मोक्ष पहूतां. हमणां वर्त
मान कालें संख्याता मोक्ष पहुंचे छे. आ

गामिककालें अनंता मोक्ष पहूंचशे. एहवा अतींद्रिय. अविनाशी. अनुपाधि, अबंधी. अक्लेशी. अमूर्त्ति. शुद्धचैतन्य. ज्ञान दर्शन चारित्रादि अनंतगुण नाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवा अनंता सिद्ध नगवंतनुं शर एुं पत्रिवजुं डुं. ॥इति वीजुं शरणुं समाप्त॥२॥ हिवे त्रीजुं शरणुं साधु नगवंतजीनुं कहे ढे.

साधु नगवंतजी केहवा ढे? अनंत ज्ञानी अनंतदरसी जघन्य दोय क्रोम उत्कृष्टा, नव क्रोम केवली. वली गणधर. आचार्य. उपाध्याय बहुश्रुत. द्वादशांगीना नणणहार. ऋजुमति. अवधिज्ञानी. वैक्रिय लब्धिना धणी. तपस्वी, महोटा माहानुनाव. ज्ञानवंत. दरिसणवंत. चारित्रवंत. ज्ञानदरिसणना धरणहार. वारें नेदें तप करी कर्मना क्षयना करणहार. इरियासमिया. नासासमिया. एसणासमिया. आयाणनंडमत्त निखेवणासमिया. उच्चारपासवण खेलसिंघाण जलपारिठावणियासमि

धवो नहीं. एहवो श्रीकेवलिज्ञापित दय
धर्म सत्य नित्य शाश्वतो संदेहरहित
संसार समुद्रमां पडता जीवने द्वीप सम
न छे, प्रवहण समान छे, तारण शरण ग
प्रति आधार छे. एहिज कल्याणक छे,
हिज मांगलिकछे. धर्म ते किशुं कहियें?
दुर्गति पडता जीवने धरे, तेणे धर्म कहि
यें, जे धर्म, पापरूप जलमांथी तारवा
नाव समान छे, जेने परमेश्वरें परसुखन
हेतु कह्यो छे, एह धर्म अतीतकाले अनंत
तीर्थंकरे कह्यो, वर्त्तमान कालें संख्याता
हे छे, आगामिक कालें अनंता तीर्थंकर
हेशी एहवो श्री जिनधर्म अतीतकालें वि
धीने अनंताजीव नमता हुवा, वर्तमा
कालें संख्याता नमे छे. आगामिककाल
अनंता जीव नमशी. एहवोश्री ती
करजीनो मार्ग आराधीने गये कालें
नंता जीव तरया. वर्त्तमान कालें
संख्याता, छे आगामिक कालें अनंता

व आराधीने तरशी. एहवा श्रीकेवलिप
रूपित दयाधर्मनुं शरणुं पच्चिकुं छुं ॥ ४ ॥

॥ इति चार शरणा संपूर्ण ॥

॥अथ श्रावकना तीन मनोरथ लिख्यंते ॥

श्रावकजी नीचें लिखेला तिन मनोरथने
चिंतवतो थको महा महोटी निर्जरा करे.
संसारनो अंत करे, ते लखियें छैयें ॥

तिहां पहेलो मनोरथ कहे छे. श्रमणोपा
सक श्रावक एम चिंतवे जे केवारे हुं बाह्य
तथा अभ्यंतर एवो आरंभ अने परिग्रह
थोडा ने घणो, न्हानो अने महोटो. स
चित अचित अने मिश्र, हलवो ने भारी.
जे महापापनुं मूल दुर्गतिने वधारनारो. म
हा काम, क्रोध, मान, माया, लोभ, विष
य अने कषायनो स्वामी. महादुःखनुं का
ण. महाअनर्थकारी, महा दुर्गतिनो झि
ठो. माठी लेश्याना अध्यवसायनो परि
णामी. महा अज्ञान. मोह. भ्रम, राग
अने द्वेषनुं मूल. दशविध यतिधर्मरूप

ल्पवृक्ष तद्रुप वननो दावानल, ज्ञान,
था, क्षमा. दया. सत्य. संतोषनो नाश
रनारो. तथा बोधबीजरूप समकितनो
श करनारो. संजम व्रत अने ब्रह्मचर्य
घात करनारो. महा कुमति तथा कु
रूप दुःख दारिद्रनो देवावालो. शुभ
ने सुबुद्धि रूप सुख सौभाग्यनो नाश
रनारो, महा तप संजम रूप धनने लूंट
रो, महा लोभ क्लेशरूप समुद्रनो वधार
रो. महा जन्म जरा अने मरण भयनो
वावालो. महा माया एटले कपटनो भं
र, मिथ्यात्व दर्शनरूप शल्यें भरेलो.
हा मोक्षमार्गनो विघ्नकारी. महा
डवा कर्मविपाक फलनो देवावालो. अन
संसारनो वधारनारो. महा पापी. पांच
द्रियना विषयरूप वेगनी पुष्टिनो करना
महा संसाररूप अगाध वक्षिनो सिंचवा
लो, महा कुकपटनुं आगर. महा
म क्लेशनो आगर. मोहोटा गारवखेद

र्म वंधना मंदिरनो करावनारो. महा मंद
द्धिनो आदर्यो, उत्तम पुरुष साधु नि
थीयें जेने निंद्यो छे. अने सर्व लोकमां
नर्व जीवोने एना सरिखो वीजो कोइ वि
काम नथी, मोहरूप पाशनो प्रतिबंधक. इ
तथा इलोक तथा परलोकना सुखनो नाश कर
, महापापी. पांच आश्रवनुं आगर, म
अनंत दारुण कर्कशकठोर अवता एवा
व अने नयनो देवावालो, महोटा सा
र व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादाननो क
वनारो, महा अध्रुव, अनित्य अशाश्व
ो. असार. अत्राण, अशरण, एवो जे आ
न अने परिग्रह तेने हुं केवारे छंडीश !
ते दिवसे छंडीश, ते दिवस महारो धन्य
। १ एवी रीतें प्रथम मनोरथ श्रावक करा॥१॥
२ हिवे दूजा मनोरथमां श्रमणोपासक
श्रावक एम चिंतवे जे केवारे हुं इ
दश प्रकारें यतिधर्म धारि वि
द्ध ी सर्व

रना सत्ताविस गुणधारी, पांच स
णगुप्तियें विशुद्धविहारी, महोटा
नो धारी, बेहेंतालीश दोष रहित
आहारी, सत्तरें भेदें संजमधारी,
दें तपस्याकारी, अंत आहारी, प्र
हारी, अरस आहारी, विरस आ
स आहारी, तुच्छ आहारी अंतजी
जीवी, अरसजीवी, विरसजीवी,
वी तुच्छ जीवी, सर्वरसत्यागी; छक
याळ, निर्लोभी निःस्वादि कुक्षीर
ख तुल्य वायरानी परें अप्रतिबं
वीतरागनी आज्ञासहित, एहवा
धारक ज अणगार ते हुं केवारें थ
दिवस हुं पुर्वोक्त गुणवान थाइश
धन्य छे ! ए रीतें बीजो मनोरथ श्रा
३ त्रीजा मनोरथमां श्रमणोपा
चक एम चिंतवे केवारें हुं सर्व प
क आलोइ निंदी, निःशल्य थई,

ढार पापस्थानकथी त्रिविधे करी वोसि
रीने, चारे आहार पच्चखीने. आ इठं कां
तं. पियं माणं. मणाणं धीजियं. वेसासियं
समयं. अणुमयं. वहुमयं. नंभ्करंभगसमाणं.
रयणकरंभगचुयं. माणंसिया माणंउन्हा. मा
णं खुआ. माणं पीवासा. माणं वाला. माणं
चोरा. माणं दंसमसगा. माणं वाइयं. पित्ति
सवेसन्निवाइयं. विविहारोगायंका. परि
सहा उवसग्गा. फासा फूसंति. एहवुं महा
रुं शरीर छे तेने. छेहेले श्वासोश्वासे वोसि
रावीने. त्रण आराधना आराधतो थको.
चार मांगलिकरूप चार शरण मुखें उच्चार
तो थको. सर्व संसारने पूठ देतो थको. ए
क अरिहंत. वीजा सिद्ध. त्रीजा साधु
ने चोथो केवलिप्ररूपितदयाधर्म. तेना ध्य
नने ध्यावतो थको शरीरनी ममता रहि
थयो थको. पादोपगमन संथारा सहित.
डित मरणना पांच अतिचार टालतो थ
मरणने अणवांछतो थको. एहवुं पंडित म

अंतकालें मूकने होजो॥ए त्रीजो मनोर्थ॥३
. ए त्रण मणोरथने समणोपासक श्रावक
नि. वचन अने कायायें करी शुद्धपणे ध्य
तो थको परि जागरणमाणे करतो थको स
र्मनी निर्जरा करीने संसारनो अंत क
ोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्यें पामे॥

॥ इति तीन मनोरथ समाप्त ॥

॥ अथ दान शील तप जावनो संवाद ॥

॥ चोढालियो लिख्यते ॥

दुहा॥ प्रथम जिणेसर पायनमी. पाम
सुगुरु प्रसाद॥ दान शील तप जावन
ालीस वहु संवाद॥ १॥ वीर जिणंद
ोसरचा. राजग्रही उद्यान ॥ समवसर
देवें रच्युं. वेठा श्री वर्द्धमान ॥ २ ॥ वे
चार परखदा. सुणवा जिनवर वाणं॥ दा
कहे प्रभु हुं वडो. मुजने प्रथम वखाण॥३
ांजलजो साहु को तुमे. कुण छे मुज स
न॥ अरिहंत दीक्षा अवसर. आप पहि
दान॥ ४॥ प्रथम पोहोर दातारनो, ते

गहुकोइ नाम ॥ दीधारी देवल चढे, सी
जे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरने पारणे, कु
ण करसी मुज होड़॥ब्रखाकरी सोवण तणी,
त ऊ वारे क्रोड़ ॥ ६ ॥ हुं जग सघलो वस
करुं, मुज मोठी छे वात ॥ कुण कुण दान
थकी तिरचा, ते सुणजो अवदात ॥ ७ ॥
ढाल १ ली ॥ मधुकरणी ॥ ए देशी ॥ ध
न सारथवाह साधुने, दीधो घृतनो दान॥
ललना ॥ तीर्थंकर पद में दीयो, तिण मुज
ने अभिमान ॥ ललना ॥ १ ॥ दान कहे ज
ग हुं वडो. मुज सरिखो नही कोय ॥ ल०॥
ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दाने दोलत हो
य ॥ ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नामे गा
थापति. पडिलाभ्यो अणगार ॥ लल० ॥ कु
मर सुबाहु सुख लह्यो. ते तो मुज उपगार
ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचसें पार
णे, देतो वोहोरी गत ध
यो

ने, में दानतणी वात दीठीरे ॥ शी०॥१॥ कलीकारज जग जाणीयो, वली विरति न हीं पिण कांइरे ॥ ते नारद में उद्धरया, मु ज जोवो ए अधिकांइरे॥ २॥ वाहे पेहेरया वेहरखा, संख राजायें दूपण दीधोरे ॥ का प्या हाथ कलावती, ते में नवपल्लव तसु की धोरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ रावणघर सीतारही, तो रामचंद्रें घर आणीरे ॥ सीतारें कलंक उतारीयो, में पावक कीधो पाणीरे ॥ शी० ॥ ४ ॥ चंपा बार उघाडियो, वली चालणी यें काढ्यो नीरोरे ॥ सतीय सुभद्रा जसथ यो, में तसु कीधी भीरोरे ॥ शी० ॥ ५ ॥रा जा मारण मांगीयो, राणी अभयायें दूपण दाख्योरे ॥ सुली सिंघासण में कीयो, में शे ठ सुदर्शन राख्योरे ॥ शी० ॥ ६ ॥शीलस नाह मंत्रीसरे, आवंतां अरिदल थंभ्योरे ॥ तिहांपिण सानिध्य में करी ॥ वली धरम कारज आरंभ्योरे ॥ शी० ॥ ७ ॥पेहरण ची र प्रगट कीया, में आठोत्तरसो वारोरे ॥पां

न नारी द्रौपदा. में राखी माम उदारोरे
शी० ॥ ८ ॥ ब्राह्मी चंदनवालिका. वली
शीलवंती दमयंतीरे ॥ चेग्गनी साते सुता,
राजमती सुंदरी कुंतीरे ॥ शी० ॥९॥ इत्या
दिक में उद्धरया, नर नारीना वृंदोरे ॥ स
मय सुंदर प्रभु वीरजी, पहिला मुझ आणं
दोरे ॥ शी० ॥ १० ॥

दुहा ॥ तप वोल्यो त्रटकी करी, दान
ने तुं अवहील ॥ पिण मुझ आगल तुं कि
शुं, सांभलरे तुं शील ॥ १ ॥ सरसा भो
जन में तज्या, नगमे मींठानाद ॥ देहत
णी ममता तजी. तुजमें किशुं संवाद ॥२॥
नारी थकी डरतो रहे॥ कायर किस्युं वखा
ण ॥ कूड कपट बहु केलवी, जिम तिम रा
खे प्राण ॥ ३ ॥ के विरलो तुज आदरे. वंभी
सहू संसार॥ आप एक तुं भांजतो, वीजा
भांजे चार ॥४॥ करम निकांचित तोग्गवा,
भांजुं भव भय भीरु ॥ अरिहंत भुजने आ
दरे, वरस वभासी सीम ॥ ५॥रुचक नंदी



में कियो, स्त्री वल्लभ वसुदेवहो ॥ सुं० ॥ व
होत्तर सहस अंतेउरी, सुख भोगवे नित मे
वहो ॥ सुं० ॥ तप० ॥ ४ ॥ रूप कुरूप का
लो घणुं, हरिकेसी चंडालहो ॥ सुं० ॥ सुर न
र कोडी सेवा करे, ते में कीधो चालहो ॥
सुं० ॥ त० ॥ ५ ॥ विष्णु कुमार लब्धे की
यो, लाख जोयणनुं रूपहो ॥ सुं० ॥ श्रीसंघ
केरे कारणे, ए मुज सक्ति अनूपहो ॥ सुं०
॥ तप० ॥ ६ ॥ अष्टापद गौतम चढया, वां
द्या जिन चोवीसहो ॥ सुंदर ॥ तापस पिण
प्रतिबूजव्या, तिण मुज अधिक जगीसहो ॥
सुं० ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौदे सहस अणगार
में, धन धन्नो अणगारहो ॥ सुं० ॥ वीर जि
णंद वखाणीयो, ए पिण मुज अधिकारहो ॥
सुं० ॥ त० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगले,
दुःकरकार कहेयहो ॥ सुंद० ॥ ढंढण नेमी
प्रसंसीयो, मुज महिमा सवि तेहहो ॥ सुं०
॥ तप० ॥ ९ ॥ नंदीषेण वोहोरण गयो, ग
णिकायें कीधी हासहो ॥ सुंदर ॥ धूपा क

रयारे, मूक्या शिवपुरवास ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी रे, मुझने प्रथम प्रकाश ॥सो० ॥१९॥
दुहा ॥ वीर कहे तुमें सांभलो, दान शील तप भाव ॥ निंद्याठे अति पापणी, धर्म करो प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंद्या करतां थकां, पापे पिंड भराय ॥ वेढ राढ वाधे घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरखो पापीयो, भुंडो कोई न दीठ ॥ वली चंडाल समो कह्यो, निंदक मुख अदिठ ॥३॥ आप प्रशंसा आपणी, करतो इंद्र नरिंद्र ॥ लघुता पामे लोकमें, नासे निजगुण वृंद ॥४॥ को केहनी मकरो तुमें, निंद्या ने अहंकार आप आपणे ठामे रहो, सहुको भलो संसार ॥ ५ ॥ तोपिण अधिको भावछे, एकेको समरछ ॥ दान शील तप तूणे भला, पिण भाव विना अकयछ ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां, इधकी आणी रेख ॥ रजमाहिथी ज काढतां, इधको भाव विशेष ॥ ७ ॥ गगन हठ भजण भणी, चार सरिखा

ति ॥ चार करी मुख आपणा, चतूर्विध ध र्म जणंति ॥ ८ ॥

ढाल ५ मी ॥ वीर जिणेसर इम जणेरे, बेठी परखदा बार ॥ धरमकरो तुमे प्राणीयारे, जिम पामो जव पारोरे ॥ धरम हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारोरे, जविय ण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुख कारोरे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ धर्म थकी धन संपजेरे, धर्मथ की सुख होय ॥ धर्म थकी आरतीटलेरे, धर्म समो नही कोयरे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ दुर्गति पमतां प्राणीयारे, राखे श्री जिन धर्म ॥ कुटुंब सहुको कारमोरे, मत जूलो जविज मरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ जीवजीके सुखीया थयारे, वली होसे वे जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथीरे, मत कोई करो संदेहरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोलहसें बासट समेरे, सांगानेर मजार ॥ पद्म प्रजु सुपसाउलेरे, एह जण्यो अधिकारर ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ सोहमसामी परंपरारे॥ खरतर गछ कुलचंद ॥ युग प्रधान जग पर

रयारे, मूक्या शिवपुर वास ॥स :थसुंदर
न्नु वीरजीरे,मुक्ने प्रथम प्रकाश ॥सो०॥१९॥

दुहा ॥ वीर कहे तुमें सांन्नलो, दान शी
ल तप न्नाव ॥ निंद्यावे अति पापणी. धर्म
करो प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंद्या करतां थकां
पापे पिंड न्नराय ॥ वेढ राढ वाधे घणी,दु
र्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरखो पा
पीयो, न्नुंडो कोई न दीठ ॥ वली चंमाल
समो कह्यो, निंदक सुख अदिठ ॥३॥ आ
प प्रशंसा आपणी, करतो इंद्र नरिंद्र ॥ ल
घुता पामे लोकमें, नासे निजगुण वृंद ॥४॥
को केहनी मकरो तुमें, निंद्या ने अहंकार
आप आपणे ठामे रहो, सहुको न्नलो संसा
र ॥ ५ ॥ तोपिण अधिको न्नावठे, एकेको
समरछ ॥ दान शील तप तृणे न्नला, पिण
न्नाव विना अकयछ ॥ ६ ॥ अंजन आंखे
आंजतां, इधकी आणी रेख ॥ रजमाहि त
ज काढतां, इधको न्नाव विशेष ॥ ७ ॥न
गवंत हठ नंजण नणी, चारे सरिखा गण

ति ॥ चार वर्गे मुख आपणा, चतुर्विध धर्म भणंति ॥ ८ ॥

ढाल ५ मी ॥ वीर जिणेसर इम भणेरे, बेठी परखदा बार ॥ धरमकरो तुमे प्राणीयारे, जिम पामो भव पारोरे ॥ धरम हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारोरे, भविय ण सांभलो ॥ धर्म मुक्ति सुख कारोरे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ धर्म थकी धन संपजेरे, धर्मथकी सुख होय ॥ धर्म थकी आरतीटलेरे, धर्म समो नही कोयरे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ दुर्गति पम्तां प्राणीयारे, राखे श्री जिन धर्म ॥ कुटुंब सहुको कारमोरे, मत भूलो भविभ्रमरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ जीवजीके सुखीया थयारे, वली होसे वे जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथीरे, मत कोई करो संदेहरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोलहसें बासट समेंरे, सांगानेर मझार ॥ पद्म प्रभु सुपसाउलेरे, एह भण्यो अधिकाररे ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ सोहमसामी परंपरारे॥ खरतर गछ कुलचंद ॥ युग प्रधान जग पर

गडेरे, श्री जिनचंद सुरिंदरे ॥ धर्म० ॥७॥
तास शिष्य अति दीपतोरे. विनयवंत ज
सवंत ॥ आचारज चढती कलारे, जिन सिं
ह सूरि महंतरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ प्रथम शिष्य
श्री पुज्यनारे, सकलचंद तसु शिष्य ॥ स
मयसुंदर वाचक नणेरे. संघ सदा सुजगी
सोरे ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ दान शील तप नावनारे.
सरस रच्यो संवाद ॥ नणतां गुणतां नाव
शुरे, ऋद्धि समृद्धि सुप्रसादो रे ॥ ध० ॥ १०॥
॥ अथ सुनद्रा सतीरो चोढालीयो लिख्यते॥
ढाल १ ली ॥ सरसत सांमण वीनवुं, आ
पजो अविरल वांणरे ॥ सीयल तणी महि
मां कहुं. सांनलो चतुर सुजाणरे ॥ १ ॥ सी
यल सुरतरु सेवजो ॥ ए आंकणी ॥ जिम
हुवे छुटक वाररे ॥ सीयल सुनद्रा सेवियो,
पामीयो नवतणो पाररे ॥ सी० ॥ २ ॥ सु
नद्रा श्रावकनी सुता. परणी मिथ्याती जां
णरे ॥ सुनद्रा मनमाहे चिंतवे. वखत लि
ख्यो प्रमाणरे ॥ सी० ॥ ३ ॥ देव अरिहंत

बीजो नही, गुरूगुणवंत अणगाररे॥ केवली भाषीत धरमनो, ध्यान धरूं निरधाररे॥ सी० ॥ ४ ॥ इण परें समकित पालती, टालती दोखण पांचरे॥ कुमत कदाग्रह वारती, तजिया प्रमाद प्रपंचरे॥ सी० ॥ ५ ॥ श्रावकना व्रत सांचवे, विधसुं सुणे वखाणरे॥ चवदे नेम संभारती, गुरु मुख करे पचखाणरे॥ सी० ॥ ६ ॥ दुधने कांजी कने कने, जैनने शीव वीचाररे॥ राखणहार पंडित हुवे, विगरे नही तिलमातरे॥ सी०॥ ॥ ७ ॥ अवसर पडिक्कमणो करे, अवसर करे जिन सेवरे॥ अवसर साधु सेवा करे, ध्यान धरे नीत मेवरे॥ सी० ॥ ८॥ पेहेली ढाल पूरी थइ, समकित सील विचाररे॥ मांनसागर कहे सेवजो, जिम लहो भवतणो पाररे॥ सी० ॥ ९ ॥

ढाल २ जी॥ एक दिवस जिन वांदवा, गइ सुभद्रा नारीजी॥ सासु दिठी आवती, कोप कियो [illegible] ॥१॥ तिणवा

र सासु कोप किधो, वयण विरुआ उच्चां ॥ कुलहीन वहूंअर किसुं जांणे, वांदवा जि न संचरे ॥ एक शीख अमनी सुणो वहूंअ र, पारस देवने परिहरो ॥ वसुदेव नंदन कीसन केरो, ध्यान सदा हियरू धरो ॥ ३ ॥ दोख अठार दिसे नहीं, देव तिको अरिहं तोजी ॥ ध्यांन धरुं तेहनो सदा, टाल म ननी भ्रंतोजी ॥ ३ ॥ मनभ्रंत टाले अवर देवा, वांदवा चित आखडी ॥ घर गाय घू जे कांमधेनु, मोल कुणले बाखडी ॥ कल्प वृक्ष ऊगो राय आंगण, तोड आख न वा वीये ॥ सेलरी गंभी कंठक शाली, खांत क री नहीं वावीये ॥ ४ ॥ सासु कहे सुण खणी. मांन अमारो वयणोजी ॥ कुल र राखो सदा, वचन करो परमाणकीजे वचन अमनो, कहे सासु" तरी ॥ अती गाल गळ सदाइ काढे, पि कांनी जा परी ॥ ६ ॥ खिम्या खग्ग वां ट वहूंअर, पांच इंद्री वस किया ॥ अ हत

दे. सदाई ध्यावे, पापतणा दल खे कीया
॥ ६ ॥ एक दिवस मुनी गोचरी, करता न
गर मझारोजी ॥ मास खमणने पारणे, जि
ण कलपी अणगारोजी ॥ ७ ॥ जिण कलप
...र सुध पाले, एकलो विचरें नहीं ॥ सिंह
सरप मारग टले अलगा, आप तिहां टलवो न
हीं ॥ इम नगर भमतां साधु आया, वहूंअ
र घर वोहोरण भणी ॥ तस आंख पड्यो
त्रिणे देखी, थइ सुभद्रा दयामणी ॥ ८ ॥ न
यण झरे जलबिंदुआ, देख थइ दिलगीरोजी
॥ जिन कलपी जिन सारीखो, मेरुतणी परें
धीरोजी ॥ ९ ॥ मेरुतणी परें धीर देखी,
आंख तिणें काढीयो ॥ वहूलीक मुनिवर
...य दीठो, सासु लंछन चाढीयो ॥ मत
...ा वहूंअर लखण देखी, देखवा सवी व
...र मिली ॥ एक वोहोरवा मुनि आज
...यो, वहूंअर हुइ सांनणी ॥ १० ॥ धिग
...ा ताहारो जीवीयो, धिग धिग ताहारी
...तोजी ॥ धिग धिग ताहारा तातनें, धि

गनंन कीगी ज्यांरी नीर ॥ नगी० ॥ धारी
नांगी चालणी. काढनो कूंन नीर ॥ नगि
ण ॥ भ० ॥ १० ॥ पाल उघाणी पदमणी.
पाणी भींनी गंड ॥ नगीयण ॥ धांगी
दान्ड उगाडजो. जे मन राखो षांट ॥ न
गीयण ॥ भ० ॥ ११ ॥ मन वचन कागा
करानी. सुणो पाल्यो शील ॥ नगीयण
मारी कूना देवता. जढने देन नकील ॥ न
गीयण ॥ भ० ॥ १२ ॥ पग लागा ते थांरी
करी. पग लागी नरनार ॥ नगीयण ॥ फू
लां [illegible] करी, शील तणा अधिकार ॥ न
गीयण ॥ भ० ॥ १३ ॥ शील पर मानीये
नर, शील [illegible] गोपाल ॥ नगीयण ॥ सु
[illegible] कूंन [illegible], कणीयार कूंन पुत्र. गा
॥ न० ॥ भव० ॥ १४ ॥ नगीयरा मांहे [illegible]
[illegible], नव नव मुनि [illegible] ॥ नगीय
[illegible] पटरांनडी, पांच्यो नवनां [illegible]
[illegible] नगीयण ॥ भव० ॥ १५ ॥ [illegible]
[illegible] मुनि [illegible] ॥ नगी०

द्र संजम पाली, कर दीयो जवपार ॥ ७ ॥
मली इखुकार राजा, घर कमलावतीनार ॥
नगुने जशा, जेहना दोय कुमार ॥ वए रि
द्धिगर्डनि, लीनो संजम जार॥ इण अल्प
काळमे, पाम्या मोक्ष दुवार ॥ ८॥ वळे सं
गती राजा, हरण आहिंमें जाय ॥ मुनिवर
गद्वाळी, आण्यो मारग ठाय ॥ चारित्र
लेईने, जेटचा गुरुनापाय ॥ क्षत्री राज रि
षीसर, चरचा करी चित्तलाय ॥ ९ ॥ व
ळी दस चक्रवर्ति, राज रमणीरिद्धि जंरू ॥
दसे मुक्ते पोहोतां, कुलने शोजा मंरू ॥ इण
उत्सरपण माही, आठ राम गया मोक्ष ॥
बलजद्र मुनिसर, गया पंचमे देवलोक॥१०॥
दशार्णजद्र राजा, वीर वांद्या धरी मान ॥
नवे इंद्र हटायो, दीयो व्काया अजय दा
न ॥ करकंडु प्रमुख जे, चारे प्रत्येक बुद्ध॥
मुनि मुक्ते पहुंता, जीत्या कर्म महाजुद्ध ॥
॥ ११ ॥ धन मोटा मुनिवर, मृघा पुत्र ज
गीश ॥ मुनिवर अननाथी, जीत्या रागने

रिश ॥ वली समुद्रपालमुनि, राजेमति र
नेम ॥ केशीने गौतम, पाम्या सिवपुर से
॥१२॥धन विजय घोपमुनि,जयघोप वली ज
ण॥ श्री गर्गाचारज, पोहोताछे निरवाण ॥श्री
उत्तराध्ययनमे, जिनवर कस्या वखाण ॥ शु
द्धे मन ध्यावो, मनमे धीरज आण ॥१३
वली खंदक संन्याशी, राख्यो गौतम स्ने
ह ॥ महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥
तपकठण करीने, कुशी आपणी देह ॥
या अचुत देवलोके. चवीलेशे भव छेह ॥
॥ १४ ॥ वली रिखवदत्त मुनि, शेठ सुदर्श
न सार ॥ शिवराज रिखीसर, धन गंगय
अणगार ॥ शुद्ध संजम पाली, पाम्या के
ल सार ॥ए चारे मुनिवर. पहुंता मोक्षम
र ॥ १५ ॥ भगवंतनी माता, धन सती दे
वानंदा ॥ वली सती जयवंती. मेरु दीया
घर फंदा ॥ सती मुक्ते पहुंती. वली वीरनी
नंदा ॥ महासती सुदर्शना, घणी सतीनाउ
दा॥१६॥ वली कार्तिक शेठे. पडिमावहीश

र वीर ॥ जिम्यो मारा उपर, तापस वलती खीर ॥ पोते चारित्र लीधो, मंत्री पांचसे वीर ॥ मरी हुवा शक्रेंद्र, चवलेशे भवतीर ॥ १७ ॥ धन राय उदाई, दीयो भाणेजाने राज ॥ पोते चारित्र लीधो, सारघा आतम काज ॥ गंगदत्त मुनि आणंद, तारण तरण जिहाज॥कोसल मुनिरोहो, दीयो घणाने सा ज ॥ १८॥धन सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभू ति अणगार ॥ आराधिक हुयने, गया देव लोक मझार ॥ चविमुक्ते जाशी, वली सि हा मुनिसार ॥ बीजा पिण मुनिवर, श्री भ गवती इधकार ॥ १९ ॥ श्रेणीकनो बेटो, मो टा मुनिवर मेघ ॥ त्यजी आठ अंतेउर, आण्यो मन संवेग ॥ वीर पाशे व्रत लेइने, बांधी तपनी तेग ॥ गया विजय विमाने, चवलेशी सिव वेग ॥ २० ॥ धन्य थावर चा पुत्र, तजी बत्तीसुं नार ॥ तिण साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ॥ सुखदेव सं न्याशी, एक सहेंस शिष्य सार ॥ पांचसे

सुं सेलिग, लीधो संजम चार ॥ २१ ॥
वे सहेस अढाई, घणा जीवाने तार ॥
डु गिरि उपर, कर्यो पादोपगमन संथा
आराधिक हुयने, करदिनो खेवो पार॥
या मोटा मुनिसर, नाम लीया निस्तार
॥ २२ ॥ धन जिनपाल मुनिवर, तीन १
नावा साध ॥ गया प्रथम देवलोके,
जाशी आराध ॥ श्री मल्लीना मंत्री. मह
ल प्रमुख मुनिराय ॥ सर्व मोक्ष ि.धाय
गणधर पदवी पाय ॥ २३ ॥ वली जीत
त्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान ॥ पोते च
रित्र लेईने. पाम्या मोक्ष निधान ॥ धन्य
तेतली मुनिवर, दीयो छकाया अभय दान॥
पोटीला प्रतिबोधि, पाम्या केवल ज्ञान ॥
॥ २४ ॥ धन्य पांचे पांडव, छठी द्रोपदा
नार ॥ थविराने पाशे, लीधो संजम भार॥
श्री नेम वांदनरो, एहवो अभिग्रह कीध
मास मास खमण तप. शत्रुंजय जाय ि
द्ध ॥ २५ ॥ धर्मघोष मुनितणा शिष्य.

ची अणगार ॥ कीडीयानी करुणा, आ
दया धरम सार ॥ कडवा तुंवानो, कि
सघलो आहार ॥ सरवार्थ सिद्ध पोहो
चवलेशी अवपार ॥ २६ ॥ वली पुंडरी
राजा, कुंडरीक भगीयो जाण ॥ पोते चा
लेईने, न घाली धर्मनी हाण ॥ सर
र्थ सिद्ध पहूंता, चवी लेशी निरवाण ॥
ज्ञाता सूत्रमे, जिनवर कर्यो वखाण ॥
२७ ॥ गौतमआदिक कुंअर सगा अठारे
त ॥ अंधक विष्णुसुत, धारणी ज्यांरी
त ॥ त्यजी आठ आठ नारी, कादी दी
नी वात ॥ चारित्र लेईने, कीधो मुक्ती
साथ ॥ २८ ॥ श्री अणीसेणादिक, छह
ोदर भाय ॥ वसुदेवना नंदन, देवकी
ारी माय ॥ भद्दिलपुर नगरी. नाग गा
वई जाण ॥ सुलसा घरे वधिया, सांभ
नेमनी वाण ॥ २९ ॥ त्यजी वत्तीस व
स नारी, निकलिया छटकाय ॥ नल कु
सभाणा, भेट्या श्रीनेमना पाय ॥ छ

री छठ्ठ पारणा, मनमें वैराग्य लाय ॥१
क मास संथारे, मोक्ष विराज्या जाय ॥३०
वली दारूण सारूण, दुमुख सुमुख
नाम ॥ कुवर अणाढी, गया मुक्त गति ठा
म ॥ वसुदेवजीना नंदन, धन धन गजसु
खमाळ ॥ रूपे अती सुंदर, कलावंत
वाल ॥ ३१ ॥ श्री नेम समीपे,
मोह जंजाल ॥ जीकुनी पडीमा, गया
णाकाल ॥ देखी सोमल कोप्यो,
बांधी पाल ॥ खेराना खीरा,
अशराल ॥ ३२ ॥ मुनि नजर न खंरी,
टी मननी जाल ॥ कठण परिसह सहीने
मोक्षगया तत्काल ॥ धनजाली मयाली
उवयालादिक साध ॥ सांबने प्रद्युम्न, अनि
रूद्ध साध अगाद ॥ ३३ ॥ सत्यनेमी द
नेमी, करणी कीधी वाध ॥ दश मोक्ष पहो
ना, जिनवर वचन आराध ॥ धन अर्जुन
माळी, कर्यो कदाग्रह दूर ॥ वीरपे व्रत
लइने, मन्य वादी हुवा सुर ॥ ३४ ॥ कर्

छह छह पारणो, क्षमा करी भरपूर ॥ छ मा
सामाहे, कर्म करयो चकचूर॥वली कुमर अ
इमंतो, दीठो गौतम स्वाम॥ सुणी वीरनी
वाणी, कीधो उत्तम काम॥ धुर आद म
काइ, अनंत अलक मुनिनाम॥ चारित्र
पालीने, पहुतां शिवपुर ठाम॥ ३५॥ वली
कृष्ण रायनी, अग्रमहिषी आठ ॥ पुत्र व
हू दोये, संचिया पुण्यना थाठ ॥ चारित्र
लेइने, तपकरी कर्मज काट ॥ एक मास सं
थारे, पहुंती सिवपुर वाट॥ यादव कुल स
तीया, टाल्यो दुःख उचाट ॥ पोहोती सि
वपुरमें, एहे सुत्रनो पाठ ॥ ३६ ॥ श्रेणीक
नीराणी, कालियादिक दसजाण ॥ दस पु
त्र वियोगे, सांभली श्रीवीरनी वाण ॥ चं
दन वालापे, संजम लीयो सुजाण
॥ तप करी देह कुंशी, पोहोतीवे निरवाण
॥ ३७ ॥ नंदादिक तेरे, श्रेणीक नृपनी ना
र ॥ चंदन बालापें, लीधो संजम भार॥ ए
कमास संथारे, पहोती मोक्ष

तु जिएयानो. अंतगडमां अधिकार ॥ ३८॥
अणीकना बेटा, जालियादिक तेवीस ॥
वीरपे व्रत लेईने, पाल्यां विश्वा वीस ॥ त
प कठण करीनें. पूरी मननी जगीस ॥ दे
वलोक पोहोता, मोक्ष जासे तजी रीस ॥
॥ ३९ ॥ काकंदीनो धन्नो. तजी बत्तीशना
र ॥ माता [illegible] गर्भापि. लीधो संजम सार ॥
करी छठ छठ पारणां, आंबिल उज्जित आ
हार ॥ श्री वीर [illegible], धन धन्नो अ
णगार ॥ ४० ॥ एक मास संथारे, [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] करसे
[illegible] ॥ [illegible], हुवा [illegible]
॥ श्री [illegible] उत्पाटिये, जाणगणा [illegible]
॥ ४१ ॥ सुबाहु प्रमुख वळी, पांच पां
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

देहिनो कस ॥ संजम आराधि. देव लोक
मां जई वश ॥ महाविदेह क्षेत्रमां, मोक्ष
जासे लेई जश ॥ ४३ ॥ बलभद्रजीना नं
दन, निषधादिक हुवा वार ॥ पचास प
चास अंतेउर, त्यागदियो संसार ॥ सहु
नेम समीपे, चार महाव्रत लीध ॥ सरवार्थ
सिद्ध पहुंता, हुसी विदेहमे सिद्ध ॥ ४४ ॥
धन्नोने साळभद्र, मुनिश्वरानी जोड ॥ ना
रीना वंधन, तटके नाख्या तोड़॥ घर कुटुं
व कवीलो, धन कंचननी कोड ॥ एक मा
स संथारे, टाली भवनी खोड ॥ ४५ ॥
श्री सुधर्माना शिष्य, धन धन जंवु स्वामी
॥ त्यजी आठ अंतेउर, मात पिता धन धा
म ॥ प्रभवादिक महामुनी, पहुतां सिवपुर
ठाम ॥ सूत्र प्रवर्त्तावी, जगमे गख्यो नाम
॥ ४६ ॥ धन ढंढण मुनिवर, कृष्ण रायन
नंद ॥ शुद्ध अभिग्रह पाली, टालदीयो
हफंद ॥ वली खंदक ऋषिनी, देह उता
खाल ॥ परीसह सहिने. भव फेरा दि

टाल ॥ ४७ ॥ वली खंदकऋषिना, इ
पांचसे शिष्य ॥ घाणीमे पीलत, मोक्ष
या तजी रीस ॥ संभूति विजय शिष्य,
द्रबाहू मुनिराय ॥ चवदे पूरव धारी,
गुप्त आण्यो ठाय ॥ ४८ ॥ वली अंद्रगु
मुनि. थूलिभद्र नंदिषेण ॥ अरणक अ
तो, मुनिश्वरानी श्रेण ॥ चोविसीना मुनि
वर, संख्या अठावीस लाख ॥ सहेस अ
ताळीस उपर, सूत्र परंपरा भाख ॥ ४९
कोई उत्तम वाचो, मुखे जयणा राख ॥
थारे बोल्या, लागे पाप विपाक ॥ धन
रूदेवी माता, ध्यायो निरंजन ध्यान ॥
ज होदे पाम्या, निर्मळ केवल ज्ञान ॥५
धन आदिश्वर पुत्र्यां, ब्राम्ही सुंदरी
॥ चारित्र लेइने, मुक्ति गई शुद्ध होय ॥
वीशे जिननी. वली शिष्यणी चोवीस
तीं मुक्ते पहुंती. पूरी मननी जगीस ॥
वीशे जिननी. सर्व साधवी सार ॥ अ
लीस लाखने, आठसें सीत्तर हजार ॥५१

चेडानी पुत्री, राखी धर्मसुं प्रीत ॥ राजेमति विजया, मृघावती सुविनीत ॥ पद्मावती मेणरया, द्रोपदा कोसल्या सीत ॥ इत्यादिक सतीया, गई जमारो जीत ॥९२॥ चोवीशे जिणना, साधु साधवी सार ॥ गया मोक्ष देवलोके, हिरदे राखो धार ॥ इण अढीद्वीपमां, गरढा तपसी बाल ॥ पंच महाव्रत धारी, नमुं नमुं त्रीकाल ॥९३ ॥ इण जति सतीसुं, राखो उज्ळ भाव ॥ सुधे मन ध्यावो, एहिज तीरणरो डाव ॥ या जत्या सत्यांरा, लीजे नित्य प्रतें नाम ॥ इम कहे रिखजेमलजी. एहिज तीरणरो ठाम ॥ संमत अठारे. वरसानो सिरदार. सहेर जालोरमे. एह कह्यो अधिकार ॥ ९४ ॥
॥इति अनंत चोवीसी साधु वंदणा समाप्तः॥

॥ अथ लघु साधु वंदणा लिख्यते ॥

प्रहसमे उठीया भावसुं, समरो पंच नवकारो ए ॥ सूत्र सिद्धंत ज्यारे मुख वसे, चवदे परव धारोए ॥ १ ॥ नित करुं सा

धुजीने वंदणा ॥ ए आंकणी ॥ आणी हा
ख उमेदोए ॥ सफल करुं भव नर तणा,
मिट जावे दुःखने खेदोए ॥ नि० ॥ २ ॥
बारे गुण कह्या दीपता, पहेले पद जगदी
सोए ॥ देव आराधुं एहवा, जीत्या रागने
रीसोए ॥ नित० ॥ ३ ॥ आठ गुण सिद्धा
तणा, अतिसेवे इगतीसोए ॥ दोय पदारा
भेला किया, गुण हुवा पूरा वीसोए॥ नि०
॥ ४ ॥ आचारज तिजे पदे, दीपे गुण छत्ती
सोए ॥ उपाध्यायजीने म्हारी वंदणा, हो
जो अह नीस दिसोए ॥ नि० ॥ ५ ॥ द्वा
दस सूत्रां तणें, भणे ने भणावेए ॥ गुणपं
चवीस करी शोभता, ज्यांरी सेवा किया
सुख पावेए ॥ नि० ॥ ६ ॥ गुण सत्तावीस
साधुना, विचरेछे अवारुंए ॥ ज्याने होजो
म्हारी वंदना, आठोत्तरसो वारोए ॥ नि०
॥ ७ ॥ एकसो आठज गुण कह्या, नवकरवा
लीना पराए ॥ एकेको चितकरी समरल्यो,
आखरछ अति रूपाए ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रथम

जिणसर सभरीए, आदेसरजीना पायोए ॥ शासन सुध वरतावीने, मोक्ष नगर सीधा याए ॥ नि० ॥ ९ ॥ प्रथम जिणेश्वर सुत हुवा, एकसोने पूराए ॥ इण नव मुक्त सिधाविया, करणी कर हुवा सूराए ॥ नि० ॥ ॥ १० ॥ चउरयाशी गणधर हुवा, लवध तणा भंडारोए ॥ सहेस चोरयासी शिष्य हुवा, ज्यां लिधो संजम भारोए ॥ नि० ॥ ॥ ११ ॥ तीनलाख शिष्यणी हुइ, ज्यांमे सहेस चालीस सीवपुर पोहोतीए ॥ तिण मे हुई वाई मोटकी, ज्यारो तो नाम [illegible] रामी ए ॥ नि० ॥ १२ ॥ कंपिल [illegible] टको, सोनोलाउं दोय मासोए ॥ [illegible] पाग वल्यो नही, त्रष्णारो [illegible] ॥ नि० ॥ १३ ॥ व्हे [illegible] राय नरेसोए ॥ ममत [illegible] सीरना केसोए ॥ नि० ॥ १४ ॥ [illegible] छ प्रति वोधने, [illegible] म खयाती [illegible]

ए ॥ नि० ॥ १५ ॥ नमि राय हुवा न
को, प्रत्येक बुद्ध श्रीकारीए ॥ गेडी प
ऋद्धि साहेबी. एक सहेस आठ नारीए
नि० ॥ १६ ॥ शक्रेंद्र तिहां आवीया, ;
री ब्राह्मणनो रूपोए॥दस प्रश्न तिहां ,
या, सांभलजो तुमे नूपोए ॥ नि० ॥ १७
हेतु कारण कह्या घणा, न्यारा न्यारा भेदा
ए ॥ उत्तर दिधो आवितरे, न आण्यो
नमे खेदोए ॥ नि० ॥ १८ ॥ इंद्र सुणी ह
रषीत हुवो, धन धन आपरी वाणीए ॥ अ
ठेई आप उत्तम हुवा, आगे उत्तम निरवा
णीए ॥ नि० ॥ १९ ॥ वीरकहे गोतम स
णी, सांभलजो तुमे साधुए ॥ पांचे इंद्रीय
पायके, रखे करो प्रमादोए ॥ नि० ॥ २०॥
बहुश्रूती साधा भणी, होजो म्हारो नम
स्कारोए ॥ थारातो गुण कह्या घणा, सोल
ओपमा श्रीकारोए ॥ २१ ॥ हरकेसी नाम
जती, जात तणा चंडालोए ॥ ज्यारी सेवा
कर देवता, धन व कायना प्रतिपालोए

नि० ॥ २२ ॥ यज्ञपाने उठ्या गोचरी, वी
छे अनाग्जतम्भोए ॥ देवता नीरु आव्या
तिहां. वार्ता घणारी धम्मोए ॥ नि०॥२३॥
मरण्या ब्राह्मण तीनसे, राय अपिसर रु
ठाए ॥ वीनंती करी प्रतिलाभीया, पांच
द्रव्य तिहां वुठाए ॥ नि० ॥ २४ ॥ ज्ञाति
रो कारण को नहीं, करणीरा फल साराए॥
हरकेसी मोटा मुनी, पोहतां मुक्त मझारोए
॥ नि० ॥ २५ ॥ चित्त उपदेस दीयो आ
यने, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति आगेए ॥ पेली वंद
ना पगीगया, अवेकारी केसी लागेए ॥ नि०
॥ २६ ॥ हातीका दाडमें कलिरह्यो, तिम मु
जण जाणोए ॥ चित्त उत्कृष्टी आदरी, पो
हतांजे निरवाणोए ॥ नि० ॥ २७ ॥ इखुका
र राजा तिहां, घर कमलावती नारोए ॥
भृगु पुरोहीत जसा जारजा, ब्राह्मणरा दोय
कुमारोए ॥ नि० ॥ २८ ॥ छउं अनुक्रमें नि
सग्या, लिधो संजम भारोए ॥ करम खपा
ी मुक्ते गया, चउदमा अध्येन विस्तारो

ए ॥ नि० ॥ २९ ॥ संजती आहिंडे निसरचो, वायो मृगने वाणोए ॥ गदभालि गुरु देखने, मनमे घणो संकाणोए ॥ नि० ॥ ॥ ३० ॥ खमजो अपराधज माहरो. इण अवसर हुं चूकोए ॥ कृपाकरो हो महा मुनी, हुं थारी वाणीरो भूकोए ॥ नि० ॥ ३१ ॥ म्हासुं राजा थें डरपीया, थासुं डरपे घणा जीवोए ॥ सुण तुं राजा मोटका, मती देवान रकारी निवोए ॥ नि० ॥ ३२ ॥ सात भय संसारमे, मरण तणो भय भारीए ॥ ऋपिसर कोप्या पछे, कोणरी करदेवे घारीए ॥ नि० ॥ ३३ ॥ अधिपति राजा तुज भणी, म्हारो भयमती राखोए ॥ भोग जीतवने कारण, समता रस तुमे चाखोए ॥ नि० ॥ ३४ ॥ अथिर राजा थारो आऊखो, जीवाने काइ संतापोए ॥ थारेतो राजा साथे चालसी, एक पुण्य बीजो पापोए ॥ नि० ॥ ॥ ३५ ॥ वीमलीरे चमकारसुं, जेसा संध्यारंग वाणोए ॥ डाबआणी जळ वींदुवा

जेसो कुंजररो कानोए ॥ नि० ॥ ३६ ॥हय गयरथ पायक दल, सेन्या चार प्रकारोए ॥ थेई राजा गोभने, लेवोनी संजमभारोए ॥ नि० ॥ ३७ ॥ इत्यादिक उपदेस दीयो, खूली भितरनी गाठीए ॥ संजती राजा संजम आदर्यो, कांरे घटे लागि गंटाए ॥ नि० ॥ ३८ ॥ अनेक चक्रवर्ति नीसर्या, छोणी राज भंडारोए ॥ चोसठ सहँस अंतउरी, दो दो वारंगणा लारोए ॥ नि० ॥ ३९ ॥ भरतेसरजी आददे, दसुई चक्रवर्ति सारोए ॥ सुध संजम पालने, करदीया खेवा पारोए ॥ नि० ॥ ४० ॥ इण सरपणी माहे हुआ, आठ राम गया मोक्षोए॥ बलभद्रजी आठ होवसी, तीन लोकरा नाथोए॥ नि० ॥ ४१ ॥ करकंडू आददे, प्रत्येक बुद्ध थीचारोए ॥ राय उदाई हुवा भोटका, सोले देस सिरदारोए ॥ नि० ॥ ४२॥ भोसन किरती न पांदीया, भनंग एग विचारोए ॥ इंद्र जाणनि कोपीयो, दियो अहंकार उला

चित देवे. वांकी बुद्धिमे खामी॥ तुं धन०॥३॥ अलख निरंजन मुनि मनरंजन, जय भंजन वी सरामी॥ सिवदायक नायक गुणगायक, पायकहे शिव गामी॥ तुं धन० ॥४॥ रत्नचंद प्रभु कहुअन मांगे, सुण तुं अंतरजामी॥ तुम रहेवाकी ठोर ब तावो, तो हुं सहु नरपामी॥ तुं धन० ॥५॥ इति॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीजीको स्तवन ॥

॥ स्वाध्याय लिख्यते ॥

महावीर स्वामीने सीवरूं, पलक पलक प घडी घडी॥ वर्धमान स्वामीने सीवरूं॥ पलक०॥ ए आंकणी॥ सिद्धारथ घर सुंदर नारी, त्रिसला रूपे जाण श्री॥ दसमा स्वरग थकी चवि आये, स्वपनंतरमुं खबर पड़ी ॥ म० ॥ १ ॥ मधुमास सुकळ पख तेरस, रजनी पूर्व अर्ध सरी ॥ ज नम थयो सुरपत निज करमे, ले चाल्या प्रभु गीर ॥ म० ॥ २ ॥ सब इंदर नर अवत मीलकर, मोहछव विध तिहां सकळ करी॥ चर अंगुठे मेर कंपायो, महावीर तब नाम धरी॥ महा० ॥ ३ ॥ नर जोबन सुंदर सुख जोगी अंदगी प्रभु राजसिरी ॥ संजम ले तप

रमहण, केवळ ले सिव वेग वरी ॥ महा० ॥
। ४ ॥ महावीर मन माहे जपतां, जानत अ
लगा करम अरी ॥ रिख कुशालचंद कहे सिवपुर
दिजे, जनम मरण दुःख दूर हरी ॥ महा० ॥५॥

अथ नेमिनाथजी स्तवन लिख्यते ॥

सांवलिया साहेब सुख दायक, सुणजो अर
ज हमारी ॥ जग सागर कारागृह सरिखो, ति
णसेती मोयतारी ॥ सां० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥
जनमत नयन कमळ दल निरखी, हरखीहे मे
हेतारी ॥ पिता परम सुख पायो प्रभुको, मूरत
मोहन गारी ॥ सां० ॥ २ ॥ योवन वय माहे
जोर दिखायो, विस्मय थये मुरारी ॥ सब सज्ज
न मिल व्याह वणाये, मोह्यो दसा मन धारी ॥
सां० ॥ ३ ॥ व्याह विरधमे जीव छुडाये, तारी
राजुल नारी ॥ सहँस पुरखसुं संजम लेकर, आ
प रहे ब्रम्हचारी ॥ सां० ॥ ४॥ परजुन संब कुं
मरकुं तारी, आठ कृष्णकी नारी ॥ धन धन ने
म जिणेसर साहेब, पंडव पंच उधारी ॥ सां० ॥
॥ ५ ॥ सहसे अनेक पुरुष निसतारे, पहुंता मु
क्त मझारी ॥ रतनचंदजी कहे अबतो आई

आज हमारी वारी ॥ सां० ॥ ६ ॥

॥ अथ उपदेसी पद लिख्यते ॥

जोबनीयारी मोजां फोजां, जाय नगारां दे
तीरे ॥ चेत चेत तुं चेत चतुर नर, चिडिया चु
गई खेतीरे ॥ जोबनी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बे
नक छीनकमे आवु छीजे, क्युं करडा मण एती
रे ॥ उदर जीतव कारण चेतन, पडे मुक्तसुं वे
तीरे ॥ जो० ॥ २ ॥ मोती कडा किलंगी पांचां
शोभा इधकी लेतीरे ॥ पारकी नार देखे नेणा
सुं, वचन कहे मुख सेतीरे ॥ जो० ॥ ४ ॥ मात
पिता तिरिया सुत बंधव, मिली संप्रदा एती
॥ छनिक छीनकमे सगळी छीजे, ज्युं जळ गा
यो रेतीरे ॥ जो० ॥ ३ ॥ काळकी फोज लगा
सीर तेरे, घुरे नगारा देतीरे ॥ पलक माहे
वसकर देवे, जरा लपेटा लेतीरे ॥ जो० ॥ ५ ॥
जोबन लेहरा रंग पतंग सम, कहुं सीखामण दे
तीरे ॥ इणमे रतन दया सुखकारी, आराधो हे
स सेतीरे ॥ जो० ॥ ६ ॥

॥ अथ उपदेसी पद लिख्यते ॥

रे चेतन पोते तुं पापी, परना छिद्र चितां

तुं ॥ निरमळ होय करम फरदमसुं, निजगुण अंबु नितारे तुं ॥ रे० ॥ १ ॥ ए ॥ आंकणी ॥ समकित दृष्टी नाम धरावे, सेवे पाप अठारे तुं ॥ नरक निगोद थकी कीम छूटे, जो पर हियो न ठारे तुं ॥ रे० ॥ २ ॥ जिम तिम करने शोभा आपणी, या जग माहे दीखावे तुं ॥ प्रगट कहाथ धर्मको धोरी. अंतर भरयो विकारे तुं ॥ रे० ॥३॥ परमेश्वर साखी घटघटको, ज्याकी सरम न धारे तुं ॥ पचसी कुंभी पाक नरकमे, अंतस वल न निवारे तुं ॥ रे० ॥ ४ ॥ पर निंद्या आप्य पिंड भरीजे, आगम साख संभारे तुं ॥ वनेचंद करे आतम निंद्या, भव भव दुकृत टाळे तुं ॥ रे० ॥५॥

॥ अथ सोळे जिन स्तवन लिख्यते ॥

( श्री नवकार मंत्रजीरो ध्यान धरो ॥ एहनीदेसी )

श्री रिखव अजीत संभव स्वामी, वंदु अभिनंदण अंतरजामी ॥ राग धेप दोय खय करणा. वंदु सोळेई जिन सोवन वरणा ॥ १ ॥ सुमतनाथजीने सूपासो, प्रभु मुगत गया मेटयो गरभावासो ॥ मेट दिया जनमने मरणा ॥ वंदु० ॥ ॥ २ ॥ शीतळ श्रेयंस जिन दोई, प्रभु चवंदेई

राज रह्या जोई ॥ विमल मत निरमल क॰
॥ वंदु० ॥ ३ ॥ अनंतनाथ अनंत ज्ञानी,
मनडारी बात नही छानी ॥ धर्मना जीको
हिरदे धरणा ॥ वं०॥४॥ संतनाथ प्रभु साताकारी,
कुंथुनाथ स्वामीजीरी जावुं बलीहारी ॥
नाथ आतम उद्धरणा ॥ वंदु० ॥ ५ ॥ महा
धणीहो नमीनाथ तणी, महावीरजी हुवा
णरा धणी ॥ मैं धारिया प्रभु थारां चरणा ॥ वं
॥ ६ ॥ तीन लोकमे रूप प्रभु पायो, ऐसो
यडी पुत्र वीजो नही जायो ॥ चोसठ इंद्र
चरणा ॥ वं० ॥ ७ ॥ शरीर संपदा सुंदर सो
निरखंतारा नयण तुरत मोहे ॥ चतुराराती
त हरणा ॥ वं० ॥ ८ ॥ जिगमीग दीप रही
ही, ज्यांने सुरनर निरख रह्याकेई ॥ ज्यांरी
खां जाणे अमी ठरणा ॥ वं० ॥ ९ ॥ पग न
सुं मस्तक तांई, ज्यांरो सरीर बखाणयो सुरत
ई ॥ चारुई संघ लेवे सरणा ॥ वं० ॥ १० ॥
म चेहे आरज सुणो सोळे, रिख रायचंदजी
परे बोळे ॥ म्हारी आवा गमण दुःख दू
॥ वं० ॥ ११ ॥ संमत अठारे गुनीस वरसे,

रो नागोर चउमासो ज्ञावसरसे ॥ ज्यारो ज्ञजन केया ज्ञवसायर तिरणा ॥ वं० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्ट जिन स्तवन लिख्यते ॥

( श्री नवकार जपो मनरंगे ॥ एहनी देसी )

पह ऊठी परज्ञाते वंदूं. श्री पदम प्रज्ञुजीरा पाय रीमाई ॥ वासुपूज्यजी तो म्हारे मन वसीया, कमीयन राखी काय रीमाई ॥ उपजे आणंद आठ जिन जपता, आठुं कर्म जाय तूट रीमाई ॥ ॥ १ ॥ सुख संपदने लीला लाधे, रहे ज्ञरिया ज्ञंडार आखूट रीमाई ॥ उ० ॥ २ ॥ दोनुं जिनवर जोड बिराजे, हिंगुल वरण लाल रीमाई ॥ तीरथ थापीने करमाने कापी, पाप किया पयमाट रीमाई ॥ उ० ॥ ३ ॥ चंदा प्रज्ञुजीने सुपुधि जिणेश्वर. दोय हुवा सुपेत रीमाई ॥ मोत्या वरणी देही दीपे. मुज देखण अधीक उमेद रीमाई ॥ उप० ॥ ४ ॥ मलियनाथ जिन पारस परज्ञु. एनीला मोरनी पांख रीमाई ॥ निरखंता रा नयण न धापे, अमिय ठरे ज्यांरी आंख रीमाई ॥ उ० ॥ ५ ॥ मुनिसुव्रत जिन नेमिजिणेश्वर, सांवल वरण सरीर रीमाई ॥ इंद्रानं वन्दा

संगी, खोल देखो दोय नेण ॥ व० ॥ ३ ॥ इति॥
॥ अथ वेलावल रागमां पद लिख्यते ॥
रे जीव जिन धर्म किजीये, धर्मना चार प्र
कार ॥ दान शियल तप भावना, जग माहे ए
तंतसार ॥ रे० ॥ १ ॥ वरस दिवसने पारणे, श्री
आदेसर आहार ॥ इक्षु रस प्रतिलाभियो, श्री
॥ श्रेअंस कुमार रे० ॥ २ ॥ गजभव ससीलो
राखीयो, कीधी करुणा सार॥ श्रेणिक नृप ग्रहे
आवतरयो, अंगज मेघ कुमार ॥ रे० ॥ ३ ॥ चं
पा पोल उघाडीयो, चालणी काढ्यो नीर ॥ सती
ए सुभद्रा जस थयो, तिणरो शिल सधीर ॥
॥ रे० ॥ ४ ॥ तपकरी काया सोखवी, अरस वि
रस ले आहार॥ वीर जिणंद वखाणियो, धन ध
न्नो अणगार ॥ रे० ॥ ५ ॥ अनंति भावना भाव
तां, धरता निरमल ध्यान ॥ भरत आरिसा भुव
नमें, पाम्यो केवल ग्यान ॥ रे० ॥ ६ ॥ एह धर्म
सुरतरु समो, एहनी सीतल छाय ॥ समय सुंदर
कहे सेवतां, मोक्ष तणा फल पाय ॥ रे० ॥ ७ ॥
॥ अथ ने संवरनी स्वाध्याय लिख्यते ॥
श्री वीर जिणेश्वर गौतमने कहे, संवर धर

तारे सहु जन सुख लहे ( त्रोटक छंद ) सुख ल
हे संवर, कहे जिनवर, जीव हंसा टालिये ॥ सु
क्ष्म बादर, त्रस थावर, सर्व प्राणी पाळिये ॥ म
न वचन काया, धरी समता, ममता कछु न आ
णिये ॥ सुण वछ गोयम वीर जंपे, प्रथम संवर
जाणिये ॥ १ ॥ बीजे संवर जिनवर इम कहे, सा
चो बोल्यारे सहु जनसुख लहे ( त्रोटक छंद ) सु
ख लहे साचो, सुजस सगळे, सत्य वचन संभा
रिये ॥ जिहां होय हंसा जीवकेरी, तेह भाषा टा
ळिये ॥ असत्य टाळो सत्य आगम, मंत्र नवकार
भाषिये ॥ सुण वछ गोयम वीर जंपे, जीव जतन
कर राखिये ॥ २ ॥ तीजे संवर घर याहे सही
अदत्त परायोरे लेतां गुण नही [ त्रोटक छंद ]
गुण नही लेतां अदत्त जोतां, दूर परायो परिह
रो ॥ जिनराज दंडे लोक भंडे, ऐसो भंभण काइ क
रोजी ॥ ऐसो जाण मन विवेक आणो, संचयोग
लाधे आपणो ॥ सुण वछ गोयम वीर जंपे, नही
लिजे पर थापणो ॥ ३ ॥ चउथे संवर चवथो व्रत
धरो, शियळ सघळेरे अंग अलंकरो [ त्रोटक छं
द ] अलंकरो अंगे शियळ सगळे, रंग राचो ए

सुखकारी ॥ तीस वरस प्रभु कंवर पदे, रह्या
अभिग्रह धारी ॥ सुमेर गिरपर इंद्र चोसठ,
मिल मोहोछव कीनो ॥ अनंत बळी अरिहंत ज
णी, नाम प्रभुनो दीनो ॥ ज्यांरी मात पिता सु
रगति ले आये, पछे लीनो संजम भार ॥ त
स्यां किनी निरमळी, प्रभु साडी बारे वरस म
झार ॥ ३ ॥ नव चोमासी तप कियास, प्रभु ए
क छमासी ॥ पांच दिण ऊणो अभिग्रहे, ए
छमास चोमासी ॥ एक एक मासी तप किय,
प्रभु द्वादश विरियां ॥ बोहोत्तर पक्ष दोय दो
मास, छ वीरिया गिणीया ॥ दोय अमाई तीन
दोय. इम दिढमासी दोय ॥ भद्र महा भद्र ति
च भद्र तप तप्या, इम सोळे दिन होय ॥ ४ ॥
निसुनी पडिमा आठ, भगतनी द्वादश कीनी
दोयसोने गुणतीस छट्ठम, तप गिणती लीनी ॥
इग्यारे वरस छमास, पच्चीस दिन तपस्या क
॥ इग्यारे मास ऊगणीस दिवस, पारणा ज
रा ॥ इण विध स्वामीजी तप तप्याए, पछे वि
नो केवळ नाण ॥ तीस वरस उण विचरिद
ने प्रणमुं वर्धमान ॥ ५ ॥ प्रथम अस्ती दु

चंपापुरी, पोस्ट चंपा दोय कहिए ॥ वाणीय
विसाळापुर, वेहु मिलीस द्वादश लहिए ॥ चन
रदश मालंदो पाड, व मथुला गिणीये ॥ नहि
लपुरी दोय सब मिली, अडतीस नणिए ॥ ए
क आलंबिया एक सावथीए, एक आनारज
जाण ॥ चरम चोमासो पावापुरी, जठे प्रभु प
हुंता निरवाण ॥ ६ ॥ मुनिवर चवदे सहेंस, स
हेंस छत्रीस अरजका ॥ एक लक्ष गुणसठ स
हेंस श्रावक, तीन लाख श्राविका॥ अधिक अ
ठारे सहेंस, इग्यारे गणधरनी माळा ॥ गोतम
स्वामी वडा शिष्य, सती चंनण बाला ॥ ज्यांरे
केवळ ग्यानी सातसोए, प्रभु पहुंता निरवाण॥
सासण वरते स्वामीनो, इकवीस सहेंस वर्ष प्र
माण ॥ ७ ॥ पूरव तीनसो धार, तेरासे आवधि
ज्ञाणी ॥ मन प्रजव पांचसो जाण, सातसो
केवळ नाणी ॥ वेक्रिये लब्धिना धार, सातसो
मुनिवर कहिये ॥ वादी च्यारसो जाण, जिन जि
न चरचा लहिये ॥ एकाएक चारित्र लीयोए,
प्रभु एकाएक निरवाण ॥ षोसठ वरस लग
पालियो, दरसण केवळ नाण ॥ ८ ॥ वारा नर

वळ तृपन, तृपन दस एक जिम हैवर ॥ बा
हैवर माहिख, महिखपांचसे एक गैवर ॥ पांचसे
गज हरी एक, महेंस दोय हरी अस्टापद ॥
दसलाख बलदेव वासुदेव, अरु दो दोय घर
॥ कोड चक्रि एक सूर कह्योये, कोड सूरा ए
इंद्र ॥ इंद्र अनंता सुननमे, चिटी अंगुळी अ
जिणंद ॥ ९ ॥ आपतणा प्रभु गुण अनंत, [illegible]
इ पार न पावे ॥ लख प्रभावे कोड काय, [illegible]
इ गुण जिम थणावे ॥ मोर मोर कोडा कोड
दृन अग केरम् ग्यानी ॥ जिव्या जिव्यामु
ह, कोड गुणकरगुग्यानी ॥ कोडा कोड साग
रोप, करे ग्यान गुण सार ॥ आपतणा प्रभु
गु अनंता, केहेनो न आवेजो पार ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] लोक, नाग्या वाळूदा कणीया ॥ [illegible]
[illegible], तहां आग गिणिया ॥ [illegible]
[illegible], प्रभु आनंत अनंता ॥ [illegible]
[illegible], नहीं आवे छेहडा
[illegible], सागर जिणंद ॥ [illegible]
[illegible] निणंद ॥ [illegible]
[illegible] ॥

कायनारे, पग पग जयणा करीने चालरे ॥श्री०
॥ १ ॥ टाळे मुनि सुक्ष्म आठ विरादनारे, तं
ने वळी मदमछर परमादरे ॥ तप जप खप कर
काया सोसइरे, जीपे इंद्रियाना विलय संवादरे ॥
श्री० ॥ २ ॥ जराजा न करे देही जोजरीरे, न व
धे रोग पीडा घटमाह्यरे ॥ इंद्रिया तो हिणी न प
डे जिहां लगेरे. तिहां लग कर धर्म उहाह्यरे ॥
श्री० ॥३॥ क्रोधथी वैर वधे घटे प्रीतडीरे, मा
णथी विणसे विनय आचाररे ॥ माया वाला वा
ले सरनी गमेरे. लोभथी विनसे सहु संसाररे ॥
श्री० ॥ ४॥ जोतिप निमत्त सुहयणा फळ कहेरे.
जंतर मंतर कामा तेमरे ॥ ओखद वेखद काम
ण केळवेरे, ते गुरु तीरे न तारे केमरे ॥ श्री०॥
॥ ५ ॥ चित्त भीती न जोवे नारी चित्तरीरे, वा
ळ लोचन जिम रवी तेजरे ॥ हिणीतो खांणी सो
वरसा तणीरे, न धरे ब्रह्मचारी तिणसुं हेजरे॥
श्री० ॥ ६ ॥ कुकडीरा बचरा डरे विलावसुंरे, डरे
ब्रम्हचारी नारीसुं तेमरे ॥ मोळा सिनगारने ख
टरस खायवोरे, ताळे पुट जेहर करे तेमरे॥ श्री०
॥७॥ वस्ती सयणासण पाप पुठणोरे, पाडे ले

वळ वृषभ, वृषभ दस एक जिम हैवर ॥ बार
हैवर महिख, महिखपांचसे एक गैवर ॥ पांचसे
गज हरी एक, सहेंस दोय हरी अस्टापद
दसलाख वलदेव वासुदेव, अरु दो दोय चक्र
॥ कोड चक्रि एक सूर कह्योये, क्रोड सूरा ए
इंद्र ॥ इंद्र अनंता सुननमे, चिटी अंगुळी अ
जिणंद ॥ ९ ॥ आपतणा प्रभु गुण अनंत,
ई पार न पावे ॥ लब्ध प्रभावे कोड काय.
ड गुण सिस वणावे ॥ सीर सीर कोडा कोन.
दन जस करेसु ग्यानी ॥ जिभ्या जिभ्यासु
ड, कोड गुणकरेसुग्यानी ॥ कोडा कोड सागर
गेये, करे ग्यान गुण सार ॥ आपतणा प्रभु
ण अनंता, केहेतां न आवेजी पार ॥ १० ॥ च
देई रजु लोक, भरिया वालुंदा कणीया ॥ स
जीवना रोम राय, नही जावे गिणिया ॥ एक
क वालु गुण करेस, प्रभु अनंत अनंता ॥ गु
प्रसाद रिख लालचंदजी, नही आवे केहेतां
संमत अठारे बासठेए, मास मिगसर छंद ॥ स
पूरे गुण गाइया, धन श्री वीर जिणंद ॥ १

॥ अथ उपदेशी पद लिख्यते ॥

कायनारे, पग पग जयणा करीने चालेरे ॥श्री० ॥ १ ॥ टाळे मुनि सुक्षम आठ विरादनारे, छंरू वली मदमछर परमादरे ॥ तप जप खप कर काया सोसहेरे, जीपे इंद्रियाना विखय संवादरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ जराजा न करे देही जोजरीरे, न वधे रोग पीडा घटमाह्यरे ॥ इंद्रिया तो हिणी न पडे जिहां लगेरे. तिहां लग कर धर्म उछाह्यरे ॥ श्री० ॥३॥ क्रोधथी वैर वधे घटे प्रीतडीरे, माणथी विणसे विनय आचाररे ॥ माया वाला वाले सरनी गमेरे. लोभथी विनसे सहु संसाररे ॥ श्री० ॥ ४॥ जोतिप निमत्त सुहयणा फळ कहेरे. जंतर मंतर कामा तेमरे ॥ ओखद वेखद कामण केळवेरे, ते गुरु तीरे न तारे केमरे ॥ श्री०॥ ॥ ५ ॥ चित्त भीती न जोवे नारी चित्तरीरे, वाळ लोचन जिम रवी तेजरे ॥ हिणीतो खीणी सो वरसा तणीरे, न धरे ब्रह्मचारी तिणसुं हेजरे॥ श्री० ॥ ६ ॥ कुकडीरा वचरा डरे बिलावसुंरे, मरे व्रम्हचारी नारीसुं तेमरे ॥ सोळा सिनगारने खटरस खायवोरे, ताळे पुट जेहेर करे तेमरे॥ श्री० ॥७॥ वस्ती सयणासण पाप पुठणोरे, पडि ले

॥ २ ॥ साज सिवपुरका सब सजिया, करमं
खूब कीया कजिया ॥ मेरे सिरपती शाममूज
नेम बीन और नही दूजा ॥ अनूपण गातें
ज खुचता; चगतका भोग नही रुचता ॥ लगत
जन जीता है जिनकुं ॥ स०॥३॥ नेम गिरना
हुवा ध्यानी, बात तेरी सब जुग माहे जाणी ॥ जन
तेरा जपतां पार पावे. अलख जिणदास ख्या
गावे ॥ मुक्त पद दीजे प्रभु हमकुं ॥ स० ॥

॥ अथ लावणी उपदेशी लिख्यते ॥

तुम तजो जगतके ख्याल, इसकका गाणा ॥ इ
॥ तेरी अल्प उमर खुट जाय, नरक उठ जा
तें दिन च्यार जुगबीच, लीयो थें वासा ॥ ली
तेरे सिरपर बैठा काळ, करतहे हांसा ॥ मैं
लं साचि वात, झुठ नहीमासा ॥ झु० ॥ तुं
वे किण निंद, किमिकेरे आसा ॥ अब सेव
जिनराज, खलक माहे खासा ॥ ख० ॥ तेरा
यन पतंगके रंग, झुठ सब आसा ॥ अब
अरो मेरी सीख. समजरे शाणया ॥ स० ॥
॥ १ ॥ तुं विसर गयो जग बिच, नाम जिना
का ॥ ना० ॥ पचरह्यो कटुबके काज, किया

जे सीसोजी ॥ पाय उनराणारे वेळू परजळे, तन सुखमाळ मुनिसोजी ॥ अरण० ॥ १ ॥ मुख कुमळानोरे मालती फूल ज्युं, ऊमो गोखां हेठोजी ॥ खरी दुपेहरारे दिठो एकलो, मोह्यो मननी मिठोजी ॥ अरणक० ॥ २ ॥ वयण रंगीलीरे नयणां विंदियो, रिख थंभ्यो तिण ठायेजी ॥ दासीने कहेरे जाय उतावळी, रिख तेडीने ल्याओजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ पावन कीजेहो मुज घर आंगणो. वेहेरो मोदक सारोजी ॥ नव जोवनमेरे काया काई दहो, सफल करो संसारोजी ॥ अ० ॥ ४ ॥ चंदावदनीसुं चारित्र चूकीयो, सुख विलसे दीन रातोजी ॥ एक दिन गोखेरे रमता सुगटा, तव दिठी नीज मातोजी ॥ अ०॥ ॥ ५ ॥ अरणक अरणक करती मा फिरे. गळिया गळिया मझारोजी ॥ कहो किण दिठोरे ह्मारो वालुडो, लारे वहु नर नारोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ तिहांथी उतरीरे जननीरे पाय नम्यो, वहू लाज्यो मन माह्योजी ॥ धिग वज तोनेरे चारित्र चूकीयो. लेथी सिवपुर जायोजी ॥ अ० ॥ ७ ॥ अगन धुकंतीरे सिल्ला उपरे, अरणक अणसण

रव नेह विकार ॥ निज कुळ छंडीरे नट
नाणी शरम लिगार ॥ क० ॥ २ ॥ एक पुर
व्योरे नाचवा, उंचो वांस विसेक ॥ तिहां
आव्योरे जोयवा, मिलीया लोक अनेक ॥
॥ ३ ॥ दोय पग पेहेरीरे पावडी, वांस च
गज गेल ॥ निरधारा उपर नाचतो, खेले
नवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल वजावेरे ना
गावे किंन्नर साद ॥ पाय घुंगरा घम घमे,
जे अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तव राजिंद्र मन
तवे, लुनधो नटवीनें साथ ॥ जो नट पडे
रातां, तो नटवी मुज हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥
न आपेरे नूपती, नट जाणी नृप वात ॥
न वंछुरे रायनो, राय वंछे मुज घात ॥ क०
तव तिहां मुनिवर पेखीया, धन धन साधु
राग ॥ धिग धिग विक्यारी जीवने, इम प
वैराग ॥ क० ॥ ८ ॥ संवर भावेरें केवळी,
थयो करम खपाय ॥ केवळ महिमारे सुर
लब्द विजे गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति

॥ अथ अरणक मुनिनी सज्झाय लिख्यते

अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके

जे सीसोजी ॥ पाय उनराणारे वेळू परजळे, तन सुखमाळ मुनिसोजी ॥ अरण० ॥ १ ॥ मुख कुमळानोरे मालती फूल ज्युं, ऊनो गोखां हेठोजी ॥ खरी दुपेहरारे दिठो एकलो, मोह्यो मननो मिठोजी ॥ अरणक० ॥ २ ॥ वयण रंगीलीरे नयणां विंदियो, रिख थंभ्यो तिण ठायेजी ॥ दासीने कहेरे जाय उतावळी, रिख तेडीने ल्याओजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ पावन कीजेहो मुज घर आंगणो. वेहेरो मोदक सारोजी ॥ नव जोवनमेरे काया काई दहो, सफल करो संसारोजी ॥ अ० ॥ ४ ॥ चंदावदनीसुं चारित्र चूकीयो, सुख विलसे दीन रातोजी ॥ एक दिन गोखेरे रमता सुगटा, तव दिठी नीज मातोजी ॥ अ०॥ ॥ ५ ॥ अरणक अरणक करती मा फिरे. गळिया गळिया मझारोजी ॥ कहो किण दिठोरे ह्मारो वालुडो, लारे बहू नर नारोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ तिहांथी उतरीरे जननीरे पाय नम्यो, बहू लाज्यो मन माह्योजी ॥ धिग वत्र तोनेरे चारित्र चूकीयो. जेथी सिवपुर जायोजी ॥ अ० ॥ ७ ॥ अगन धुकंतीरे सिला उपरे, अरणक अणसण

कीधोजी ॥ समय सुंदर कहे धन ते मुनिव
मन वंछीत फल लीधोजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति
॥ अथ ढंढण मुनिनी सज्झाय लिख्यते ॥
ढंढण रिखजीने वंदणा हूंवारी, उत्कृष्टो अ
ाररे हूंवारी लाल ॥ अभिग्रह कीधो एहवे
ारी. लन्धे लेशु आहाररे हूंवारी लाल ॥ ढं
॥ १ ॥ दिन प्रते जावे गोचरी हूंवारी, न मि
ुजतो जातरे हूंवारी लाल ॥ मूळ न लिजे
सुजतो हूंवारी, पिंजर हुय गयो गातरे हूंव
लाल ॥ ढं० ॥ २ ॥ हरी पूछे श्री नेमनें हूंवा
मुनिवर सहेंसे अढारे हूंवारी लाल ॥ उत्
कुण एहमें हूंवारी. मुजनें कहो किरताररे ह
री लाल ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखी
हूंवारी, श्रीमुख नेम जिणंदरे हूंवारी लाल ॥
दण उमाह्यो वांदवा हूंवारी, धन जादव कुल
रे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गळियारे मुनि
मिल्या हूंवारी, वांद्या कृष्ण नरेसरे हूंवारी
ल ॥ कोइक मायापती देखने हूंवारी, उपनो
व विसमरे हूंवारी लाल ॥ ढंढण० ॥ ५ ॥ मु
घर आवो साधुजी हूंवारी, वहिरो मोदिक

निलापरे हूंवारी लाल ॥ वेहेरीने पाछा फिरया हूंवारी, आया प्रभुजीने पासरे हूंवारी लाल ॥ ॥ ढंढ० ॥ ६ ॥ मुज लनधे मोदक मिल्या हूं वारी, मुजने कहो किरपाळरे हूंवारी लाल ॥ लनध नहींओ वछ ताहारी हूंवारी, श्रीपति लनध निहाळरे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने कळपे नहीं हूंवारी, चाल्या परठण ठोररे हूंवारी लाल ॥ इंद्र निहाळे जायने हूंवारी ॥ चूरया करम कठोररे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ ८ ॥ आई सुधी भावना हूंवारी, लपनो केवळ ग्यान रे हूंवारी लाल ॥ ढंढण रिखमुक्ते गया हूंवारी, कहे जिनहर्ष सुजाणरे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ ९ ॥

॥ अथ सीता सतीनी सझाय लिख्यते ॥

जल चलती मिलती घणीरे लाल, [illegible] [illegible] ळ विचाररे ॥ सुजाण सीता ॥ [illegible] [illegible] फ लियेरे लाल, राता खेर अंगाररे ॥ सुजाण [illegible] ता ॥ धीज करे मोठी सतीरे [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] तणे परमाणरे, सुजाण सीता ॥ लिखम[illegible] तिहां खडारे लाल, [illegible] जाण सीता ॥ [illegible]

अथ चवदे थांनकनी सझाय लिख्यते ॥

चवदे थांनकरा जीवण ज्यांमें, दुःख कह्या अ
ए॥ तिणरोए तिणरो विवरो, हिवे सांभळोए
॥ वडी नीत उच्चारए, पास वण एम विचारए
घडीए वे घडी, पछे जीव उपजेए ॥ २ ॥ आ
स भयंकर रातरो ए, भेळोकर राखे मातरो ए ॥
ग वातरो ए निरणय, हिवे तुमे सांभलो ए ॥
३ ॥ कसकस दाणा एवडाए, जंबुद्विपज जेव
ाए ॥ एवफाए असनीया मूवा घणाए ॥ ४ ॥
अस्त्री पुरुष संजोगमे र, मरतग जीव विजोग
वेए॥ इण जोगमे ए, नगर असुची नाळा भरेए
५ ॥ इमहीज खेळमे जाणजोए, ना करो मेळ
रगाणजोए ॥ वमनजए. वमनज पीत्त दोनुं क
रोए ॥ ६ ॥ इमहीज लोही रांधमेए, शुक्र त
णी मरजादमें ए ॥ सुकोए , सुको पुदगळ नी
लो हुवेए॥७॥ सर्व असुची ठामए. चवदे थांन
करा नामए ॥ जतनजए, जतनज कोई विरळा
करेए ॥ ८ ॥ ग्यानी पुरपां देखीयाए. ज्यां आप
सरीखा लेखीयाए ॥ जाणजए, जाणज पुरुष
जयणा करेए ॥ ९ ॥ न्हाना [illegible]

अंगुळ असंख्यातमे जागए ॥ ग्राजजए, ग्रा
ज आवे ग्यानी तणोए ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ पंच जिन स्तवन लिख्यते ॥

आदिये आदिये आद जिणेसरूए, अगाठ
उज्जल गढ शिणगारके ॥ नयरी वनीता समो
स्याए, नवीयण नवीयणने हित कारके ॥
आदिये आद जिणेसरूए ॥ए आंकणी ॥ आदिये
आद जिणंद जाणु, गुणवखाणु जेहना॥नवरंग मा
नव देवदानव, पाय पूजु तेहना ॥ लाख चोरासी पू
रव आयु, पेहलो जेहनो जाणीए॥श्री आदिस्वामी
मुक्तिगामी, ध्यान निरमळ आणीए॥१॥दिठोए दि
ठोए देविंद्र मंडणोए, मीठोए मीठो अमिय समान
के ॥ संत जिणेसर सोलमाए, कायाए कायाए कं
न वाणके॥ दीठोये देविंद्र मंडणोये ॥ देविंद्र
ण दूरी खंडण, दिठां दालिद्र दूरए ॥ सेविया
सहु संकट हरे, पूजियां आसा पूरये ॥ सुर के
री माया, सरणे आया, पारेवो जिण राखीयो॥
दाता नलेरो, दान केरो दया मारग दाखीयो॥
प्रभु दया धर्म प्रगट कियो ॥ २ ॥ गिरवोए गि
रवोए गढ गिरनारनोए, तिहां श्री श्री नेम

रुणपणे बहू तप तप्या ॥ आस पूरे पाप चूरे, जाप जोगीसर जप्या ॥ मुखी मंडण दूरी खंडण, दीठां हरप सुहामणो॥ जिनराज आज दयाल भेटया, उपजे आणंद अति घणो ॥ प्रभु उपजे हरप अति घणो ॥ ५ ॥ ए पांचुर पांचुर मेरू समानके, एजि न वरने सदा जपे ए ॥ तस घर तस घर नवनि धानके, मुनि लावएयसमे इम जणे ए ॥ ६ ॥

॥ अथ नेमिसरजीरो स्तवन लिख्यते ॥

समुद्रवीजे सुत घर नेमजी आया, बाळब्रह्मचारी ॥ यतो राजुल लाया ॥ जागो जागोरे जीव, साधुजी वांदण चालणो ॥ जागो जागोरे जीव, नेमजी वांदण चालणो ॥ १ ॥ ढोल ददामा वाजे, निसाण गुडे, चोसठ इंद्र मिलकर मोहछव करे॥ समुद्रवीजे राजुल नेमकुमार, सेवादेवी राणी च्यारु मुक्ति मजार ॥ जा० ॥ २ ॥ दान दिया विन सिद्ध नही होय, एहयो जाणी दान देवो नी सहु कोय ॥ दान दीयो श्री श्रेअंस कुंवार, सुबाउजी आददेने पाम्या जव पार ॥ जा० ॥ ३ ॥ शियल पाळ्या विन सिद्ध नवी होय, एहयो जाणी शियल पाळोनी सहु कोय ॥ शि

ळ पाळयो ब्रांह्मी सुंदरी, चनण बाळा राजे
तीजी, ध्रादेदेने पाम्या ञवपार ॥ जा०॥४॥
ताप तप्या विन करम क्षय नवी होय, एहवो
जाणी ताप तपोनी सहु कोय ॥ ताप तप्या हो
श्री श्री नेम महावीर, धन्नाजी ध्रादेदेने पाम्या
ञवतीर ॥ जा० ॥ ५ ॥ ञावना ञाया विन ञव
गर न होय, एहवो जाणी ञावना ञावोनी सहु
कोय ॥ ञावना ञाई हो माता मरूदेवी माय,
ञरतेश्वरजी ध्रादेदेने पाम्या ञवपार ॥ जा० ॥
॥ ६ ॥ खीम्या कीया विन करम क्षयनवी होय,
एहवो जाणी खिम्या करोनी सहु कोय ॥ खिम्या
किधीहो श्री श्री गजसुकमाळ, ध्ररजुन माळी
ध्रादेदेने पाम्या ञवपार ॥ जा० ॥ ७ ॥ दान
शियळ तप ञाव ए च्यार, खिम्या कीया प्राणी
मुक्ति मझार ॥ जा० ॥ ८ ॥ इति ॥
॥ ध्रथ गजसुकमाळजीको स्तवन लिख्यते ॥
देवकी नंदन सिरोमणि सुंदर, नेम [illegible]
बाणी ॥ तज संसार संजम ध्रादर्यो, [illegible]
वैराग मन ध्राणी ॥ तुम परवारी, [illegible]
वारी वारी, तुम परवारी ॥ माता [illegible]

दाता, दीन जाण दया करो. ॥ सिद्धार्थ नंदन ज
गत वंदन, महावीर मया करो ॥ ९ ॥ इति॥
॥ अथ चार सर्णाको स्तवन लिख्यते॥
हीरदे धारोहो नवियण, मंगलीक सर्णा
ए टेर ॥ पोहो उठी नित समरीजेहो, नविय
मंगलीक सर्णा च्यार ॥ आपदा टले संपदा मि
हो, नवियण, दोलतना दातार ॥ ही० ॥१॥ अ
हंत सिद्ध साधु तणाहो ॥ नवी० ॥ केवळी भा
त धरम. ए चारूं जपतां थकांहो ॥ न० ॥
टे आठुई करम ॥ ही० ॥ २॥ ए सरणा सुख
रीयाहो ॥ न० ॥ ए सरणा मंगलीक ॥ ए
त्तम कह्याहो ॥ न०॥ ए सर्णा तप तेज ॥
॥ ३ ॥ सुख साता वरते घणीहो ॥ न० ॥ जे
चे नरनार ॥ परनव जांता जविने हो ॥ न०॥
द्द तणो आधार ॥ ही० ॥ ४ ॥ डाकण
नणीहो ॥ न० ॥ सिंह चित्ताने सूर ॥ वैरी
मण चोरटाहो ॥ न० ॥ रहे सदाई दूर ॥ ही
॥ ५ ॥ निसदीन याने ध्यावतांहो ॥ न० ॥ पा
परम आणंद ॥ कमी नही कांनी वातरी हो
न० ॥ मेघराजे सुरचंद्र ॥ ही० ॥ ६ ॥ गेले प

वालताहो ॥ न० ॥ रात दिवस मझार ॥ गा
शां नगरां विचरंताहो ॥ न० ॥ विघन निवारण
हार ॥ ही० ॥ ७ ॥ इण सरिखा सणी नहीहो ॥
न० ॥ इण सरिखो नही नाव ॥ इण सरिखो मं
त्र नहीहो ॥ न० ॥ जपतां वाधे श्राव ॥ ही० ॥
॥ ८ ॥ राखो सणीरी श्रासताहो ॥ न० ॥ नेमो न
श्रावे रोग ॥ वरते श्राणंद जीवनेहो ॥ न० ॥ ए
ह तणो संजोग ॥ ही० ॥ ९ ॥ मन चिंत्या मनोरथ
फले हो ॥ न० ॥ नीश्चे फल निरवाण ॥ कमी
नहीं देवलोकमेहो ॥ न० ॥ मुक्त तणा फल जा
ण ॥ ही० ॥ १० ॥ संमत श्रठारे वावनेहो ॥ न० ॥
पाली सेखे काल ॥ रिखचोथमलजी इम कहेहो ॥
न० ॥ सुणजो वाल गोपाल ॥ ही० ॥ ११ ॥ इति
॥ श्रथ श्रीऋषभ देवजीरी लावणी लिख्यते ॥
सुणीयेरे वाता सदाशीवजी, निहचल नाना
धूलेवा ॥ गढपती उनका वडा श्रटंगा, मत वे
मो तुम उण देवा ॥ सु० ॥ १ ॥ सरग मृत्यु पा
ताल सबेही, सुरनर याकुं ध्यावतहे ॥ इंद्र चंद्र
मुनी दरसण श्रावे, मनकी मोजां पावतहे ॥ सु०
॥ २ ॥ सकतावत चूडावत वाले, हमही नोकर

गनहीका ॥ हिंदुपत वाकुं हात जोडे, तिन न सिरहै टिका ॥ सु० ॥ ३ ॥ गया राज गनहै आवे, निरधनीयाकुं धन देवे ॥ वांझ तिनें सुंदर वेटा, सदासुखी जो नित सेवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ तारे जहाज जाय समुद्रमे, रोग निवारे सव वका ॥ भूप भूयंग नाहर गज नदीया, चोर बंधन आंरिदलका ॥ सु० ॥ ५ ॥ गिगरदी गिरदी धों धों धों धुंसावाजे, दसो दिसाने डंका ॥ नावे जिणसुं आण मिलावे, मतवतना गढवंका ॥ सु० ॥ ६ ॥ राणाजी कंई राव वसतहै, मानत नहीहै ए वाता ॥ किनी थेइज पावो, म्हे नही आवा तुम साथ ॥ सु० ॥ ७ ॥ मूठमरोडे चढे अभिमाना, शेर भरयाहै निजरांमे ॥ रिखवदास कहे साहेब ऐसा, देख तमासा फजराये ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ अथ संतनाथजीनो स्तवन लिख्यते ॥

संत जिणेसर सोळमारे लाल ॥ तात तरे किरतारेरे ॥ सोनागी ॥ आर्ण हरप वधामणां लाल, सुख संपतना दातारेरे ॥ सो० ॥ मंगा ए. आंकणी ॥ १ ॥ हसतीयणापुर सोनतोरे

आवतर्यारे लाल. जुगमाहे वरतीयो संतरे॥ सो०॥ सं०॥८॥ हलुकरमी जिनजी आवतर्यारे लाल, जेठ वद तेरस साररे॥ सो०॥ कंचण वरण सुहामणारे लाल, दिपे तेज अपाररे॥ ना०॥ संत०॥ ९॥ छप्पन कुंवरी मिली रीरे लाल, कुवर करे मनवाररे॥ सो०॥ चो ठ इंद्र पधारयारे लाल, मुख जंपे जैजैकाररे सो०॥ सं०॥ १०॥ पांच रूप इंद्र कियारे ल, ले जावे मेरुरे श्रृंगरे॥ सो०॥ मेरु सि र न्हवरावीयारे लाल, मूक्या मातारे पासरे सो०॥ सं०॥ ११॥ दुंदुभी वाजे घणीरे ल, मांदल टाळ कंसालरे॥ सो०॥ रुणरुण णके नेपुरोरे लाल, झवझव झवके टाळरे॥ स ना०॥ सं०॥ १२॥ भुंगळ भेरी अति भले रे लाल, वाजे नवनवा रंगरे॥ सो०॥ इंद्र त तज नचावीयारे लाल, गावे गीतने ग्यानरे॥ सो०॥ संत०॥ १३॥ आय इंद्र मोहछव की यारे लाल, मूक्यो मातारे पासरे॥ सो०॥ रा जाजी मोहछव मांडीयारे लाल, मूक्यो माता पा सरे॥ सो०॥ सं०॥ १४॥ राजा ऋद्धि पांमी

वणीरे लाल, भोगवे भोग अपाररे ॥ सो० ॥ म
नमेतो वैराग आणीयारे लाल, ओ संसार अ
साररे ॥ सो० ॥ संत० ॥ १५ ॥ अचळारे कूख
ज आवतरयारे लाल, जुगमाहे वरत्यो संतरे ॥
॥ सोना० ॥ तीण गुण नामज थापीयारे लाल,
संतकुवर सुखकाररे ॥ सो० ॥ संत० ॥ १६ ॥
राजाजी संजम आदरयारे लाल. करतां उग्र वि
हाररे ॥ सो० ॥ जप तप अति करीरे लाल, न
चळे मेरु समानरे ॥ सो० ॥ संत० ॥ १७ ॥
जप तप केवळ पामीयारे लाल, दीपे पुनमचंद
रे ॥ सो० ॥ आठ करम खे कीयारे लाल, पो
ोता मुगति मझाररे ॥ सो० ॥ सं० ॥ १८ ॥
॥ अथ रहनेमजीनी सझाय लिख्यते ॥
देखी देवरको मन डोल्यो, राजेमती कहे ए
म ॥ कामकेल करणी इण काया. नेम विना मोहे
नेम ॥ देवर दूर खसोरे, लोकां भरम धरेगा ॥
नारी संग कियासुरे. पापे पिंड भरेगा ॥ १ ॥ ए
आंकणी ॥ जोवन रूप रूपो जगदिसर. जगमे
मोटो जाळ ॥ कामी मिनख मारण करतारे. मृ
म पडहे फाळ ॥ देवर० ॥ २ ॥ केसर वरणी

खी काया, मूढ करे मन हंस ॥ पिण ए. जेहे
हळाहळ गोटी, जैसे थुळीके तूंस ॥ देव० ॥३॥
देखी नेण काजलसुं भरीया, जाणे दळ वादळ
का ॥ कांमी पुरुष मारण विष लिना, कामदेव
.का भलका ॥ देवर० ॥ ४ ॥ कनक कलश सा
खा थण देखी, मूढ जाणे मन माह ॥ कांमी ध
ज मरावण करता, लोहो गोळाकी एह लाह ॥
देवर० ॥ ५ ॥ उज्जल कुळने कळंक चढावे, ना
खे दुरगत ऊंडी ॥ खोवे लाज जनमकी खोटी, ना
री नरकनी कुंभी ॥ देव० ॥ ६ ॥ राजा जाणे
तो घर लुंटे, खरचाढे सिर मुंडो ॥ जग सगळाही
मुह करे कथा. ए करणी जग भूंभी ॥देव०॥७॥
फिरतां गिरतां राजदुवारे, संचरता फिर गळीया॥
हंसे हात दे टाळी महाजन, देखाडे आंगळीया
॥ देव० ॥ ८ ॥ दुसमणारो होसी चिंतवियो,
सांभळ वात तु मिणी ॥ काख वजावी करसे हां
सो, जासी साख लाखीणी ॥ देव० ॥ ९ ॥ वंस
गोत लागे तुम कुलथी, सहुजग लेसी सिचो ॥
परियानो पाणी उतरसे, जादव जोसी नीचो ॥
॥ देव० ॥ १० ॥ भोजाइसुं एह अकारज, उत

वाण ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूरव पुण्य पसाउले, पुंडरी कगिर पायो ॥ कुंतीविजय हरपे करी, श्रीविमला चल गायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥

॥ अथ राणापुराजीरो स्तवन लिख्यते ॥

राणापुरो रळीयामणोरे लाल, प्रथम तिर्थंकर देव ॥ सुखकारीरे ॥ हुं आयो उलट धरीरे लाल, संप्रत करवा सेव ॥ सुखकारीरे ॥ राणापु० ॥ १ ॥ नयण कमळरी पांखडीरे लाल, अथवा अमिय कचोल ॥ सुख० ॥ मूरत दिठी जिनवर तणीरे लाल, मुज मन हरप किलोल ॥ ॥ सु० ॥ रा० ॥ २ ॥ दरसण जोता हीरा जडीयारे लाल; अधर प्रवालीनो रंग ॥ सुख० ॥ बाहे सोव बेहेरखारे लाल, तिलक विराजत भाल ॥ सु० ॥ रा० ॥ ३ ॥ चोवीस मंडप चहु दीसेरे लाल, प्रतमा चार हजार ॥ सु० ॥ त्रीलोक दिपक देहरोरे लाल, इम सम वमो नही संसार ॥ सु० ॥ रा० ॥ ४ ॥ दिठी वोहोत्तर देह रीरे लाल, माहे आस्टापद मेर ॥ सु० ॥ भूयरा दिठा अति भलारे लाल, सूता कट सवेर ॥सु०॥रा०॥५॥ पंच निरथ भलारे लाल, शत्रुंजो

गिरनार ॥ सु० ॥ तोरण एकसो जाणीयेरे लाल,
धजा दोय हजार ॥ सु० ॥ रा० ॥ ६ ॥ पांचसे
बावन पुतलीरे लाल, अपछराने उणीहार ॥ सु० ॥
आदिनाथ दरशन देखीयेरे लाल, पोल चहु दि
स चार ॥ सु० ॥ रा० ॥ ७ ॥ चौमुख दीपे देह
रारे लाल, क्षण एक मेलो न जाय ॥ सु० ॥ जिम
निरधन धन पामीयारे लाल, जीव रहे लपटा
य ॥ सु० ॥ रा० ॥ ८ ॥ जिणवर गुण सायर
नणेरे लाल, झील रह्यो मन मीन ॥ सु० ॥ त्ते
काईक धीमो नहीरे लाल, नयण हुवा लयलीन
॥ सु० ॥ रा० ॥ ९ ॥ देवांगना तिण देहरीरे ला
ल, तिणरो रंग पतंग ॥ सु० ॥ फाटे पिण फि
टे नहीरे लाल, जिनवर मंजीठरो रंग ॥ सु० ॥
॥ रा० ॥ १० ॥ देखंता नयण न ठरेरे लाल,
भेटंता सुख थाय ॥ सु० ॥ सुपनामे नवी वीस
रेरे लाल, श्री आदेसरजीरा पाय ॥ सु० ॥ रा०
॥ ११ ॥ राणापुरारी मेहमारे लाल, कहेतां न
आवे पार ॥ सु० ॥ जिण भेटंता जाणजोरे ला
ल, मेरू तणे विस्तार ॥ सु० ॥ रा० ॥ १२ ॥
सानन्द साहिबा वीनतीरे लाल, एक करूं प्यर

दास ॥ सु० ॥ जो सेव करे तुम तणीरे लाल,
तो पूरो मन आस ॥ सु० ॥ रा० ॥ १३ ॥ कुबे
रा सम मोटो हयोरे लाल. मोटो देस मेवाड ॥
॥ सु० ॥ मोटो तिरथ मंमाणीयारे लाल, धन
धन्नो पोरवाड ॥ सु० ॥ रा० ॥ १४ ॥ संमत सत
रेसे पनरामेरे लाल, चैत्र पुनम सोमवार ॥ सु० ॥
जात्रा कीधी जिनवर तणीरे लाल, धन धन ज
य जयकार ॥ सु० ॥ रा० ॥ १५ ॥ तपगछ म
हे दिपतारे लाल. श्रीवीजे प्रभुराय ॥ सुख० ॥
नाजिनंदण गुण गावतारे लाल, कवी जणने
सुख थाय ॥ सु० ॥ राणा० ॥ १६ ॥ इति ॥
॥ अथ सती चंनण बालारी सझाय लिख्यते ॥

श्रीदुधवाहे पुत्री जाणी, जिणरी माता धा
णी राणी ॥ नणे गुणेने रुप रसाळा, धन धन
श्री चंनण बाला ॥ १ ॥ अपछरा गुण जाणी इं
द्राणी, तिणसुं पिण रुप अधिको जाणी ॥ देह
दिपे दिपक जिम कमला ॥ ध० ॥ २ ॥ चंद
लूटीने सती वांदण गई, जठे सेठ धनोए मोल ल
ही ॥ जोवे जोर करमरा चाला ॥ ध० ॥ ३ ॥ मू
ट मस्तक कुटीने दुःख दीनो, सती जोयग म

हे तेलो किनो, सेठ आवीने काढो ततकाला ॥ ध० ॥ ४ ॥ जाई चूने बाकला उडदतणा, कोई साध आवेतो देउ भाव घणा ॥ भूख तृपाने देही सुखमाला ॥ ध० ॥ ५ ॥ वीर जिणंद नि जरा दिठा, सतीरे रोम लागे मिठा ॥ सामे जोय रही उजीयाला ॥ ६ ॥ तेरे बोले अधुरा जाणी, सतीरे पा माहे न दीसे पाणी ॥ वीर पाछा फिरगया ततकाला ॥ ध०॥ ॥ ७ ॥ में पूरव भव पापज करीया, वीर आय आंगण पाछाजी फिरिया ॥ नेण नीर वहे जिम परनाला ॥ धन० ॥ ८ ॥ श्रीवीर जिणंद केवळ पाया, जठे सतीरे भणी देवता लाया ॥ संजम लेई सोडी जंजाला ॥ धन० ॥ ९ ॥ सती छतीस हजारारी हुई गुरणी. सती उतकृष्ठी किधी करणी ॥ मेटयो मिथ्यातणारे जाला ॥ ध०॥१०॥ श्री वीर जिणंद पारणो किधो, जठे देवता आय उछव किधो ॥ हात कंकण गल मोतीरी माला ॥ धन० ॥ ११ ॥ जठे देवता तणी दुंदुभी वाजे, आकासा माही अंबर गाजे ॥ पंच द्रुव सूटा तिण वेला ॥ धन० ॥१२ ॥ पुज गुमानचंद प्र

सादे जोषी, जपतां तूटे करमांरी कोडी ॥ रत्नव
दजी ढालजोडी रसाला ॥ धन० ॥ १३ ॥ इति॥
॥ अथ तिर्थमालाको स्तवन. लिख्यते ॥
शत्रुंजे ऋषभ समोसरया, भला गुण भरिया
रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तिरथ ते नमुंरे ॥१॥
तींन कल्याणक तिहां थया, मुक्ति गयारे ॥ ने
मिसर गिरनार, तिरथ ते नमुंरे ॥ २ ॥ समेत
सिखर सुंहामणो, रळियामणोरे ॥ सिद्धा तिर्थंक
र बीस ॥ तिरथ० ॥ ३ ॥ अस्टापदजी देहर
शिर सेहरोरे ॥ भरत भरायो बिंब ॥ तिर० ॥४॥
आबु चोमुख अतिभलो, त्रीभुवन तीलोरे ॥ वि
मलवंसी वस्तुपाल ॥ तिरथ० ॥ ५ ॥ नगरी चंपा
निरखीये हीये हरखीएरे ॥ सिद्धा श्री वासपूज्य ॥
तिं० ॥६॥ पूरब दिशी पावापुरी, ऋद्धे भरीरे ॥ मु
क्ति गया महावीर ॥ तिरथ० ॥ ७ ॥ जसलमेर
जुहारीए, दुःख वारीयेरे ॥ अरिहंत बिंब अने
क, तिरथ ते नमुंरे ॥ ८ ॥ सेरीसो संखेसरो,
पंचासरोरे ॥ फलुंधी थंभण पास ॥ ति० ॥९॥
बीकानेर वंदीए, चिरनंदीयेरे ॥ अरिहंत देहरा
आठ ॥ ति० ॥ १० ॥ अंतरीक आजाहरा

जी, लागा मातार्जीरे पाय ॥ ए जननी अनुमत दे मोरी माय ॥ ३ ॥ तुं सुखमाळ सुहामणोजी, जोगो संसारना जोग ॥ यौवन वय पाछी पके जब, आदरजो तुम जोग ॥ रे जाया तुंजविन घ डोरे ठमास ॥ ४ ॥ पाव पलकरी खबर नही ए माय. करे काळरोजी साज ॥ काळ अजाण्यो ऊडपडेजी, ज्युं तितरपर बाज ॥ ए माता खिण लाखिणीरे जाय ॥ ५ ॥ रत्न जडीत घर आंगणो जी. तुं सुंदर अवतार ॥ मोटा कुळनी ऊपनीजी; कांई छेमो निरधार ॥ रे जाया ॥ तु० ॥ ६ ॥ वादी गरवादी रचिये ए माय. खिणमें खेरुज थाय ॥ ज्युं संसारनी संप्रदाजी, देखतमां विल जाय ॥ ए माता० ॥७॥ पिलंग पथरणे पोढणोजी, तु जो गीरे रसाळ ॥ कनक कचोळे जिमणोजी, काचलडी मे आहार ॥ रे जाया ॥ तु० ॥ ८ ॥ सायर जळ पीया घणा ए माय, चुंग्या मातारा थान ॥ तृप्त न हुवो जीवडोजी, इधक अरोग्या धान ॥ ए माता ॥ खी० ॥ ९ ॥ चारित्र छे जाया दोहिलोजी, चा रित्र खांडानी धार ॥ विन अपराधे ऊजणोजी ॥ ओखद नइये लिगार ॥ रे जाया ॥ तु० ॥ १० ॥

चारित्र छे माता सोह्यलोजी, चारित्र सुखनीजी खान ॥ चक्रदेई राज लोकनाजी, फेरा टळसी २ ॥ ए माता० ॥ ११ ॥ सियाळे सी लागसीजी, उनाळे लूरे वाय ॥ चोमासे मैला कापडाजी, ए दुःख सह्यो न जाय ॥ रे जाया० ॥ १२ ॥ वनमें रे एक मृगलोजी, कुणकरे उणरिज सार ॥ मृगानी परे विचरसुंजी, एकलडो अणगार ॥ ए माता० ॥ १३ ॥ मात वचन ले निसरयाजी, घया पुत्र कुमार ॥ पंचमहाव्रत आदरयाजी, लीधो संजमभार ॥ ए माता० ॥ १४ ॥ एक मासनी सलेखणाजी, उपनो केवळ ग्यान ॥ कर्म खपाय मुक्ते गयांजी, ज्यांरा लीजे नित प्रत नाम ॥ ए माता० ॥ १५ ॥

॥ अथ पंचमा आराको स्तवन लिख्यते ॥

पहिले पद अरिहंत जाणी, ज्यांरा जतन करो भवियण प्राणी ॥ ज्यांरां नामथकी जय आय कागे, पूरो सुख नहीं ओ पंचमे आरो ॥ १ ॥ दिने जीव पचेरे घणा, कोई पार नहीं रे दुःखा णा ॥ तेरे जीणगा लागी रह्या लारो ॥ पू० ॥ २ ॥ नितरो नित गांवड आवे, जळे मारे ब हटाई लावे ॥ नित नित पेट भरी जीवारो

।पू० ॥ ३ ॥ देस विदेसामे नित भमे, वली आ
ळस सेती दिन गमे ॥ वलि आमीने सामी ऊ
ड़पा मारे ॥ पू० ॥ ४ ॥ किणहीकने वणिज मा
ही तोटो, इम जाणीने दुःख लागो मोटो ॥ वले
रात दिवस वलवल पाडे ॥ पू० ॥५॥ किणने व
णिजमे नफोरे घणो, पीण सोच लाग्योरे पुत्र त
णो ॥ पुत्र हुमीतो नाम रेमी लारे ॥ पू० ॥ ६ ॥
पुत्र नणो तो सुख फर्लीयो, पीण पाम़ोसी खो
टो मिलियो ॥ उलेणाएत लागो लारे ॥ पू० ॥
। ७ ॥ मायडी पुत्र जायारे घणा, नारी आया
सेवे जुदारे हुवा ॥ एक एकरे कोई नहीं सारो ॥
पू० ॥ ८ ॥ पाम़ोसीनी द्रीष्टी निकी, पीण घरमे
नारी काली कीकी ॥ वा रात दिवम ग़ाती वाळे
। पू० ॥ ९ ॥ हिवे नारी भुगता पुण्य जोगे, पांण
देहीने आण घेरयो रोगे ॥ फांफा फुणगलाने
वलवल पाडे ॥ पू० ॥ १० ॥ देहीमे सर्व सातारे
थाइ, पीण घरमे पुत्री घणीरे जाई ॥ तिणरी
तो चिंता घणी साले ॥ पू० ॥ ११ ॥ संसारमे
तो दुःख घणा, कोई राजा कालने धनतणा ॥ ए
क एकर लागे लारा ॥ पू० ॥ १२ ॥ एहावो जाणीने

धर्म करो, वलि समतारस मन माहे धरो॥धुन नेमलजी कहे ए सुख भारो ॥ पू० ॥ १३ ॥

॥ अथ नव घाटीको स्तवन लिख्यते ॥

नव घाटीमाहे भटकत आयो, पाम्यो नाम व सार ॥ जेहने धंठे देवता. जीवा ते किम जावो हार ॥ ते किम जावो हार, जीवाजी ते किम जावो हार ॥ दुलभतो मानव भव पायो, ते दिम जावो हार ॥ १ ॥ धन दोलत रिद्ध संपदा पाई, पाम्यो भोग रसाळ ॥ मोहो माया माहे कुंवर ह्यो, जीवा नही लिवी सुरत संभाळ ॥ नही लिवी सुरत संभाळ, जीवाजी नही लिवी सुरत संभाळ ॥ दु० ॥ २ ॥ कायातो थांरी कारमी दिसे जिन धर्मसार ॥ अवसो जातां वार न लागे चेतो कियुनी गिवार ॥ चेतो कियुनी गिवार, जीवाजी चेतो कियुनी गिवार ॥ दु० ॥ ३॥ योवन माहे धंदो लागो. लागो हे रमणीरे लार ॥ धन मायने दोलत जोडी, नही किनो धर्म लिगार ॥ नही किनो धर्म लिगार, जीवाजी नही किनो धर्म लिगार ॥ दु० ॥ ४॥ जरा आवेने योवन जावे. जावे या विकार ॥ धर्म किया विन हात घसोला, द

खासो मार ॥ परभव खासो मार, जीवाजी परभव खासो मार ॥ दु०॥ ५ ॥ हातांमे कमाने कानामे मोती, गले सोवनकी माळ ॥धर्म किथा वीना एह जीवाजी, अजरणठे सहुनार ॥ अजरणठे सहुनार, जीवाजी अजणठे सहूनार ॥ दु० ॥ ६ ॥ एजग है सब स्वारथ केरा, तेरो नहीरे लिगार ॥ वारवार सतगुरु समजावे, ल्यो तुमे संजम भार ॥ ल्यो तुमे संजम भार, जीवाजी ल्यो तुमे संजम भार ॥ दु० ॥ ७ ॥ संजम लेईने कर्म खपावो. पामो केवल ग्यान ॥ निरमळ हुयने मोक्ष सीधावो, ओठे साचो ग्यान ॥ ओठे साचो ग्यान, जीवाजी ओठे साचो ग्यान ॥ दु० ॥ ८ ॥ संवत अठारे ने वरस गुणपाशी, हरकेन शिष जी उल्लास ॥ चेत वद सातम सायपुरमे, किनो ग्यान प्रकाश, किनो ग्यान प्रकाश, जीवाजी किनो ग्यान प्रकाश ॥ दलभतो० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ वीजेसेठ विजया सेठाणीरो स्तवन लिख्यते

शिल तणीरे महिमा सांभल, सुमता चितलाई ॥ एक चित्त आदरया जीवरो, पाप परो जाई ॥ १ ॥ करे ज्याकु कमी नही काई ॥ चित्त

चोखे मन शिल आदरयो, नर जोबन माहीं ॥
ए आंकणी ॥ कछु देस कछुवी नगरी, दिखण देस माहीं ॥ धरम ध्यान अधकेरो सोजे, नरत सेत्र माही ॥ करे० ॥ चित्त० ॥ २ ॥ पुण्य जोगे ज्यारे माहो माहे, हुई सगपण सगाई ॥ ब्याव थयोने प्रितम पीछे, सुंदर सेजाई ॥ करे० ॥ ३ ॥ देखने तो प्रितम बोले, सुंदर जले आई ॥ हिवेतो म्हारे काम नहीछे, फिर पाछी जाई ॥ करे० ॥ ४ ॥ कृष्ण पक्षरो नेम लियोछे, कवर पणा माही ॥ तीन दिवसउने वाकी रह्याछे, पिछे वतलाई ॥ करे० ॥ ५ ॥ वचन प्रितमरा सांजल विजया, तनमन मुरछानी ॥ मो सरीखो कंतो मिलीयो, तुं क्युं विलखाणी ॥ करे० ॥ ६ ॥ शुक्ल पक्षरो नेम लियोछे, गुरुणीपे जाई ॥ हिवे तो म्हारे काम नहीं छे, जाव जीवताई ॥ करे० ॥ ७ ॥ खाण पिछुरी आस हुती, रही मन माही ॥ थेंतो कंताजी दुजी परणो. सुख विलसो चित्तलाई ॥ करे० ॥ ८ ॥ तो सरखी सती छोडकर, दुजी कुण लाई ॥ रतन छोडकर पछे फत्तर, कुण वांधे जाई ॥ करे० ॥ ९ ॥ काम धेनु थारे आंगण दुजी, कर्म

दे नले आई ॥ क० ॥ १८ ॥ मात तात सो
मेलीया पीछे, खिजीया घरमाही ॥ मैंतो पोतारी
वाट जोवता, पूगा वेद नाई ॥ क० ॥१९ ॥ शिवं
तरा गुण अथकेरा, टुक एक बनाई ॥ रिख चोथम
लजी इम कहेसरे, सुणो सेण नाई॥करे० ॥२०॥

॥ अथ तिर्थंकरजीरो पिरवार स्तवन लिख्यते ॥

राजा राणीरो कडुंबो घणोजी, दिपती क
रारी जोम ॥ संसार सगपण जाणने, कांचा सुत
ज्यूं नाख्यो तोम ॥ १ ॥ जिनेसर मोहोनीजी भा
पणे दिन दिन हुं ग्यान चिंतुजी ॥ ए आंकणी ॥
ऋषभ देवजीरे बेटया दोय भरतादिक सो पुत
॥ सगळाई संजम आदरया, प्रभु कीनो मुक्ती
सूत ॥ जिने० ॥ २ ॥ अजीत नाथजीरे बेटा न
हीं, मेजाई टळगयो पाप ॥ संसार सगपण जा
णने, प्रभुजी नही आणयो मनमे संताप ॥जि०
॥ ३ ॥ संभव अभिनंदन सुमतीजी, तीनांरे
तीन तीन पूत ॥ पद्मप्रभुजीरे तेरे बेटा, जिंह
नारी घरग सूत ॥ जि० ॥ ४ ॥ सुपार्श्वना
थजीरे नवे बेटा, चंद्राप्रभुजीरा दस आठ ॥
स्वर्णाम बेटा, सुवुधी नाथजीरे, जिके करतां

जांणने, भाई भाई मनमे नही आण ॥ मुकरा
ध्यामी हुवा, ज्यांरा श्रावक कियाहे वखाण॥
जि० ॥ १३ ॥ पालीमे पानमल, वलि हर्ष रिख
जीरी जोग ॥ रिख सुखलालजीने विनउं, ते म
गीला बेटाने दिनो योग ॥ जि० ॥ १४ ॥

॥ अथ षट द्रव्यनी सझाय लिख्यते ॥

षट द्रव्य ज्यामे कह्या जिन जिन, आगम सु
णतहे वखाणए॥ पंचास्तिकाया नव पदारथ, पा
च भाख्या ग्यानए॥ १ ॥ चारित्र तेरा कह्याजि
नवर, ग्यान दर्शन प्रधानए॥ जे शास्त्र नित सुणे
भविर्यण, आण सुधमन ध्यानए ॥ २ ॥ चोवीस
तिर्थंकर लोक माहि, तरण तारण जिहाजए॥ न
घ वास नव प्रति वास दया, बारे चक्रवर्ति धारए
॥ ३ ॥ बलदेव नव संख हुवा, त्रेसठ घणा गुणा
री खाणए॥ च्यार देसना देवी जिनवर, कीयो
पर उपगारए॥४॥ पांच अनुव्रत चार सिख्या,
ग्तिण गुणो व्रत धारए ॥ ठे संवर जिनवर भा
ख्या, दया धर्म नित ध्यानए ॥ ५ ॥ और कहा
लग करूं वर्णन, तिनलोक प्रमाणए ॥ सुणत पा
प वीरल जाये, थाये पद निर्वाण ए ॥ ६ ॥ देव

वांधा श्री वीरने, श्रीजीने श्राग्या दिवी फुरमाय के ॥ विमलगिरी थेवर संगे, चाल्या समसयसा ध खमायके ॥ धन० ॥ २ ॥ ठायो संथारो एक मासनो, थेवर श्राया प्रभुजीरे पासके ॥ जंडउ पगरण जिन वीरने, गौतम पूछे बे कर जोडके ॥ ध० ॥ ३ ॥ तप तपीया बहु श्राकरा, कहो स्वामी वासो किहां लिधके ॥ सागर तेत्रीसरे श्राऊखो, नव महिनामे स्वारथ सिद्धके ॥ध०॥ ॥ ४ ॥ महा विदेह खेत्र माहे सिद्ध हुशी, विस्तार नवना श्रंगरे माहाके॥ शिवसुख सात्र पदवी लही, श्रासकरणजी मुनी गुण गायके ॥ ध० ॥ ५ ॥सं मत श्रठारे बरस गुणसठे, बेसाख वद पक्षरे मा हाके ॥ बिसालापुरम गुण गाईया, पुज्य रायचंद जीरे प्रसादके ॥ ध० ॥ ६ ॥ श्रोछोजी इधको में क ह्यो, तो मुज मिछामि दुकडं होयके ॥ बुद्धि सार गुण गाईया, सूत्ररे श्रनुसार जोयके ॥ ध० ॥ ७॥

॥ श्रथ ऋषभ देवजीरो पारणो लिख्यते ॥

घडा एकसो श्राठ, सबी मन रस जरियाति को ॥ उलट जावसुं दान वेहेरायो. माड दियेवु को ॥ १ ॥ ए मारी रस सेलडीया, श्राद जिणेसर

कहे जिनचंद मेरा प्रभु पारस, जैसी गाया
रतरुकी ॥ जय० ॥ ३ ॥इति ॥

॥ अथ श्रावकने उपदेश स्तवन लिख्यते ॥

पूरव सुकृत करीने, मानवरो भव पाया। आरज क्षेत्रने कुल उत्तम छे, वली निरोगी काया ॥ अब थांने जोग मिलीयोछे, थें ल्यो जिनवरजीरो नाम ॥ सुग्यानी जोग मिलीयोछे ॥ए आंकणी ॥ पूरी इंद्रिया लांबो आवुखो, वली साधकी सेवा॥ सुणजो जती पायक प्रणमुं, वाणी अमृत मेवा ॥ अव० ॥ २ ॥ आठ बोलरा ठाणा मिलीया, नही थांरी सरधा सूटी॥ कुगुरु कुदेव सिमरण, कुबुद्ध कुमत मन फूटी ॥ अव०॥ ॥ ३ ॥ आ देही थांरी भस्मज होसी, किया चंदनसुं चरचा ॥ दान शील तप भावना भावजो, लारे लिजो खरचा ॥ अव० ॥ ४ ॥ चार पेहेरका लेणा देणा, चार पेहेरका घाटा॥ आठ पेहेर जव वितगया, तव आयां मुदलमे तोटा॥ ॥ अ० ॥ ५ ॥ विसा तीसा भले पचासा, ठगा निसाणा नेडा ॥ करना होयतो करले प्राणी, हुवा बडा अंधेरा ॥ अ० ॥ ६ ॥ रात दिवस

तुं धंदो करतो, जिनजीरो नाव न लेतो ॥ तेरा सिरपर काल डुरेछे, वंव नगारो देतो ॥ अ० ॥ ॥ ७ ॥ मात पीता जाई सुत वंधव, हुवा स्वारथ वेला ॥ दिनरे खतरा जासी जीव हे, सबी फुवारा मेळा ॥ अ० ॥ ८ ॥ साचो फूठकर जुगने ठगिया, माल पराया खाया ॥ अणचिंतवीयो थांरो आयो, आउट घमीरी सब माया ॥ अ० ॥ ॥ ९ ॥ साची सतकर देवने सिमरया, जे सिमरया जे खोटा ॥ याद नहीं आणी मनमाहे. ज या जंगलमे गोटा ॥ अ० ॥ १० ॥ माया ममता सबी मेटकर, जिन धरम कर वारुको ॥ कहे साधु जी सुणो जविकजीव. इण अवसर तुम मत चुको ॥ अ० ॥ ११ ॥ सतगुरु सिख हीयामे धारो, कुवुद्द कुमत निवारो॥ वारवार सतगुरु समजावे, काया कारज सारो ॥ अव० ॥ १२ ॥ करो सामायिक पोसा पडिकमणा, देसम गौतम साता ॥ दिन दिन चलना नेमा आया, कीसी जरोसे वैठा ॥ अव० ॥ १३ ॥ दान धरम थें कदे नही कीनो, मन समता नहीं आणि ॥ आवुखो जाता वार न लागे, जीवुं अंजलमे पाणी ॥

॥ अव० ॥ १४ ॥ जीव जंपे जीवाने वंछे, मर
ण न वंछे कोय ॥ जीव जीवाने हणता थका, मु
क न पहुंता कोय ॥ अव० ॥ १५ ॥ इति ॥
॥ अथ रिखबनाथजीरो स्तवन लिख्यते ॥
सुरत मोहन वेलमीजी, सुरत सुखनाजी वास॥
जो आवे तुम सरणेंजी, तेहनी पूरवो आस॥ रि
खब जिन सांभलोजी, ए मेरी अरदास॥ ए
आंकणी॥ जैसी करणी थें करीजी, तैसी म्हांसुं
नवी होय, मनमाने जिम राखजोजी, शरणे आ
योहुं तोय॥ रि० ॥ २ ॥ नेह अछे मुज तुमसुंजी,
जैसो रंग मंजीठ॥ ऐसोही प्रभु राखजोजी, मत
दिजो मुज पीठ॥ रि० ॥ ३ ॥ राग धेक मेटिया
अछेजी, प्रीत घणी बन वाज ॥ अविचल पदवी
आपसोजी, मोटा छो जिनराज ॥ रि० ॥ ४ ॥
आशाछे मुज मोटकीजी, शरणे आयो राज॥ जो
मुजने तारो नहीजी. तो कीम सरसे मुज काज॥
रि० ॥ ५ ॥ अवगुन भरिया मानवीजी, आये
सर्णे राज ॥ अवतो तारया बिनेजी, प्रभु थारे
घरकी लाज॥ रि० ॥ ६ ॥ अवगुण मुजमे छे घ
णाजी, गुण थोडा सुविवेक॥ तुमे सर्ण कृतार्थ

थजी, राखजो मुज टेक ॥ रि० ॥ ७ ॥ देव घ
णामे देखीयाजी, रामकृष्ण मुरार ॥ तुम दरिश
न मन मोहीयोजी, नव सायरथी तार ॥ रि०॥८॥
नाभिरायना नंदलाजी, मोरा देवी तुझ माय ॥ हु
र्षित गुणसागर सूरिजी, वंदे तेहना पाय॥रि०॥९॥

॥ अथ इग्यारे गणधरको स्तवन लिख्यते ॥

श्री इंद्रनुतीजीरो लीजे नाम, तो मन वंछी
त सीझे काम ॥ मोटा लब्ध तणा नंडार, वंदु
इग्यारे गणधार ॥ १ ॥ आगननूती गौतम
जीरा नाई, वीरजीने दीठा समता आई ॥ भ्र
द्धि त्याग लियो संजम नार ॥ वं० ॥ २ ॥ वा
यनूती मोटा मुनिराय, ए तीनुंइ सग्गा नाय ॥
पांच पांचसे निकल्या लार ॥ वं० ॥ ३ ॥ विगत
सामीजी चोथा जाण, नजन किया होय अमर
विमाण ॥ देव लोकासुं खरा झणकार ॥ वं० ॥
॥ ४ ॥ स्वामी सुंदरमा वीरजीरे पाट, जनम
मरण सेवगरा काट ॥ मुजने आप तणो आ
धार ॥ वं० ॥ ५ ॥ मंडी पुत्रने मोरीज पूत, मु
क्त जावणरा कीधा सूत ॥ ओवीधे त्यागा पाप
अढार ॥ वं० ॥ ६ ॥ अकंपितने अपलनूता,

॥ अव० ॥ १४ ॥ जीव जंपे जीवाने वंछे, मर
ण न वंछे कोय ॥ जीव जीवाने हणता थका, मु
क न पहुंता कोय ॥ अव० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ रिखबनाथजीरो स्तवन लिख्यते ॥

सुरत मोहन वेलडीजी, सुरत सुखनाजी वास॥
जो आवे तुम सरणेंजी, तेहनी पूरवो आस॥ रि
खब जिन सांभलोजी, ए मेरी अरदास ॥ ए
आंकणी ॥ जैसी करणी थें करीजी, तैसी म्हानुं
नवी होय, मनमाने जिम राखजोजी, शरणे आ
योहुं तोय ॥ रि० ॥ २ ॥ नेह अछे मुज तुमसुंजी,
जैसो रंग मंजीठ ॥ ऐसोही प्रभु राखजोजी, मत
दिजो मुज पीठ ॥ रि० ॥ ३ ॥ राग घेक मेटिया
अछेजी, प्रीत घणी वन वाज ॥ अविचल पदनां
आपमोजी, मोटा छो जिनराज ॥ रि० ॥ ४ ॥
आगाछे मुज मोटकीजी, शरणे आयो राज॥ जो
मुजने तारो नहीजी, तो कीम सरसे मुज काज ॥
रि० ॥ ५ ॥ अवगुन भरिया मानवीजी, आवे
मणि गाज ॥ अवनो तारवा विनेजी, प्रभु थे
धरजो लाज ॥ रि० ॥ ६ ॥ अवगुण मुजमें छे घ
णाजी, गुण थाटा गुविवेक ॥ तुमे सर्वे कृपाल

थजी, राखजो मुज टेक ॥ रि० ॥ ७ ॥ देव घ
णामे देखीयाजी, रामकृष्ण मुरार ॥ तुम दरिश
न मन मोहीयोजी, भव सायरथी तार ॥ रि०॥८॥
नाभिरायना नंदलाजी, मोरा देवी तुक माय ॥ हु
र्षत गुणसागर सूरिजी,वंदे तेहना पाय॥रि०॥९॥

॥ अथ इग्यारे गणधरको स्तवन लिख्यते ॥

श्री इंद्रभुतीजीरो लीजे नाम. तो मन वंछी
त सीझे काम ॥ मोटा लब्ध तणा भंडार, वंदु
इग्यारे गणधार ॥ १ ॥ आगनभूती गौतम
जीरा भाई, वीरजीने दीठा समता आई ॥ ऋ
द्धि त्याग लियो संजम भार ॥ वं० ॥ २ ॥ वा
यभूती मोटा मुनिराय, ए तीनुंइ सग्गा भाय ॥
पांच पांचसे निकल्या लार ॥ वं० ॥ ३ ॥ विगत
सामीजी चौथा जाण. भजन किया होय अमर
विमाण ॥ देव लोकासुं खरा कणकार ॥ वं० ॥
॥ ४ ॥ स्वामी सुंदरमा वीरजीरे पाट, जनम
मरण सेवगरा काट ॥ मुजने आप तणो आ
धार ॥ वं० ॥ ५ ॥ मंडी पुत्रने मोरीज पूत, मु
क्त जावणरा कीधा सूत ॥ त्रीवीधे त्यागा पाप
अढार ॥ वं० ॥ ६ ॥ अकंपितने अचलभूता,

जनम. पामसी नहीरे गिवार ॥ धरम ध्यान मन आदरो. विषय विवाद निवार ॥ ॥ १२ ॥ जीवद या जतन करो. मन करो ठ कायनी घात ॥ न वपद जाप जपो जलो. मोटी दिवाळीनी रात ॥ ॥ १३ ॥ कायारुप दया देवरी, ज्ञान रूप श्रो देव ॥ जीवन मोक्ष उजालरी, करो सेव नित मे व ॥ १४ ॥ धीरज मत करो धुपनी, तपकर अ गरज खेव ॥ सरधा पूरी ज्ञान जलथकी, इम जोईजो जिनदेव ॥ १५ ॥ दयारूपी देव लोकरी. शेव गुरु पिण वाट ॥ सम्यकित जोत उजाळने, मिथ्यांती अंधेरो काट ॥ १६ ॥ संवररूप कर ढाकणी, ज्ञानरूप श्रो तेल ॥ आठइक रम प्रजालने, अज्ञान अंधेरो ठेल ॥ १७ ॥ काया हाट उजालने, ग्यान वस्त माही सार ॥ जवी जीवाग्रह कविग्रण जले, नफो पर उपगार ॥ ॥ १८ ॥ अवलीगत संसारनी, धन लिछमीरे काज ॥ रुचकारा करतां थका, मेटें कुटंब लाज ॥ १९ ॥ इचकारा करतां कथा, ग्रहग्रीया सहु फिर जाय ॥ लिछमी इम कीधां थका. नहीं पैसा घर माय ॥ २० ॥ भजन श्री जिनराजनो. गावो

सदा चित्त लाय ॥ जिण कीनो जुग ए सहु, इम आरंज उथाल ॥ २१ ॥ श्री सिंमदर आद देवजी, जैन तीर्थंकर वीस ॥ अढाई दीपने परगरी, जे वंता जगदीस ॥ २२ ॥ हिंस्यासुं देव राजी न ही, इसी जरोसे मत जूल ॥ साचे मन नवपद जपो, इछा पूरण मूल ॥ २३ ॥ दुःख कीणेही दे नो नही, प्रेमरा बचन सामो जाल ॥ जिनवरजी ना गुण गावतां, मोक्ष पोहोचो तत्काल ॥२४॥ दान शिळ तप जावना, कर मन सुधज ठाय ॥ ज्ञान दरसण चारित्र जलो, चार्य आंक उंडाय ॥ २५ ॥ इण जव दोय जेदसुं, पूजो जिनवर राय ॥ नेचे मनमे धारने, जिन चरणा चित्त ला य ॥ २६ ॥ लीपण धोवण मंडला, ओशारा क रो जतन ॥ जवलप माहे जमता थकां, पाम्यो मीनखा जनम ॥२७॥ जजन करो जगवंतनो, जिम थांरा सुध काज ॥ काल अनंत दोहिलो, अवसर लीनो आज ॥ २८ ॥ काया रूप हवे लीप्या, तपस्या कर उजिपाल ॥ सुल मत करो ढांकणो, आदरे जव पार ॥ २९ ॥ लिम्पा रू पी खाजा करो, धरो घृत जरपूर ॥ तव सम मे

दो गाळने, बांधो मोतीचूर ॥ ३० ॥ सतगुरू व
चन सांभळजो, करजो जिनवर सेव ॥ मुनिम
नोहर इम भणे, जिण वंदु नित मेव ॥ ३१ ॥
॥ अथ नेमीनाथजीरो बारामासीयो लिख्यते ॥

मिंगसरियो भल आवियो, हिवडे हरप
उल्लास ॥ तोरणथी पाछा वल्या, सब जादव सि
रदार ॥ कहीजो संदेसो भोला नेमने ॥ १ ॥ पो
स महीनो पवनको, पूरारे पुन संजोग ॥ पो
महिनारी गोरली, कठण सियाळारी रात ॥ क
॥ २ ॥ माहा महीने सी पडे, बाजे सीतल बा
॥ डंभेजी ओरया पोढणो, कामण कंतलगाय
॥ कहीं० ॥ ३ ॥ फागण महीनो वसंतरो, गु
सुन भोगी भरतार ॥ दूर देसारी चाकरी, फु
जामी अमल गिवार ॥ क० ॥ ४ ॥ चेतज म
नो चितवे, साहीब चालणहार ॥ तुरियाजी
ग सचावनो, मायं हे सेयणारो सात ॥ कहीं
॥ ५ ॥ वैसाखियो भल आवियो, गुणो गु
महिल्यानो वेग ॥ ऊनीजी लूरे गोरडी, ह
व ज्ञगीया नेग ॥ कहीं० ॥ ६ ॥ लु वाने प
नी नरे, लागोहे आंबरो जेठ ॥ नेणजी का

ल पिलगले, उनी वंगलारे हेठ ॥ कही० ॥७॥ पुनमथी पख पलटीयो, लागोहे मास असाऱ॥ दुःखदे साहीब चालीया, करगया गोरीसुं घात॥ ॥ कही० ॥ ८ ॥ सावनियो जल आवियो, वरस न लागो मेह ॥ चारूदिस चमके विजली, धुज न लागो देह॥ कही० ॥ ९ ॥ जादरवो जल आ वियो, नदिया खळके नीर ॥ वापीयो पिउ पिउ करे, घर आवो नंदल वाईरा वीर ॥ क० ॥ १०॥ आसोज महीनो चांदणो, सब खुलरही रात ॥ राजुल राणी जोवे वाटडी, घर आवो नेमकुमा र ॥ क० ॥ ११ ॥ कातीजी कंत पधारिया, बो लिया बोरूई मास॥ मुक्त गया श्रीनेमजी, सा थें राजुल नार ॥ कही० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकरी सज्झाय लिख्यते ॥

श्रावक तुं उठे परजात, चार घमीले पाछली रात ॥ मनमे समरे श्रीनवकार, ज्युं पामे जवसा यर पार ॥ १ ॥ कवण देस कवण गुरु धरम, क वण हमारे छे कुलकरम ॥ कवण हमारे छे विव साय, एहवो चिंतवजे मनमाय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन सुध, धरम तणी हिये धरिजे बुध॥

दो गाळने, बांधो मोतीचूर ॥ ३० ॥ सतगुरु वचन सांभळजो, करजो जिनवर सेव ॥ मुनिमनोहर इम भणे, जिण वंदु नित मेव ॥ ३१ ॥

॥ अथ नेमीनाथजीरो बारामासीयो लिख्यते ॥

मिंगसरियो भल आवियो, हियडे हरष हुलास ॥ तोरणथी पाछा वल्या, सब जादव सिरदार ॥ कहीजो संदेसो भोला नेमने ॥ १ ॥ पोस महीनो पवनको, पुरारे पुन संजोग ॥ पोस महिनारी गोरडी, कठण सियालारी रात ॥ क० ॥ २ ॥ माहा महीने सी पडे, बाजे सीतळ बाय ॥ हंसेजी धोरया पोढणो, कामण कंतलगाय ॥ ॥ कहीं० ॥ ३ ॥ फागण महीनो बसंतरो, सुनसुन भोगी भरतार ॥ दूर देसारी चाकरी, कुलामी अमल गिवार ॥ क० ॥ ४ ॥ चेतज महीनो चिनवे, साहीब चालणहार ॥ नरियाजी नग सचावनो, मायं हे सेयणारो सात ॥ कहीं० ॥ ५ ॥ बैसाखियो भल आवियो, सुणो गुणं महिल्यानो वेण ॥ उनीजी कुरे गोरडी, हारव लागा नेण ॥ कहीं० ॥ ६ ॥ जेठ मास घण तपे, लागो आमगे जेठ ॥ नेणजी हार

पिलगले, उभी बंगलारे हेठ ॥ कही० ॥७॥
: मी पख पलटीयो, लागोहे मास असाढ॥
ख दे साहीब चालीया, करगया गोरीसुं घात॥
कही० ॥ ८ ॥ सावनियो जल आवियो, वरस
लागो मेह ॥ चारूदिस चमके बिजली, धुज
लागो देह॥ कही० ॥ ९ ॥ भादरवो जल आ
े, नदिया खळके नीर ॥ वापीयो पिउ पिउ
., घर आवो नंदल वाईरा वीर ॥ क० ॥ १०॥
से महीनो चांदणो, सब खुलरही रात ॥
जुल राणी जोवे वाटडी, घर आवो नेमकुमा
॥ क० ॥ ११ ॥ कातीजी कंत पधारिया, वो
वोरूई मास॥ मुक्त गया श्रीनेमजी, सा
राजुल नार ॥ कही० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकरी सज्झाय लिख्यते ॥

श्रावक तुं उठे परभात, चार घडीले पाछली
त ॥ मनमे समरे श्रीनवकार, ज्युं पामे भवसा
. पार ॥ १ ॥ कवण देस कवण गुरु धरम, क
हमारे छे कुलकरम ॥ कवण हमारे छे विव
ч, एहवो चिंतवजे मनमाय ॥ २ ॥ सामायिक
मन सुध, धरम तणी हिये धारिजे बुध॥

दो गाळने, बांधो मोतीचूर ॥ ३० ॥ सतगुरु व
चन सांभळजो, करजो जिनवर सेव ॥ मुनिम
नोहर इम भणे, जिण वंदु नित मेव ॥ ३१ ॥
॥ अथ नेमीनाथजीरो बारामासीयो लिख्यते ॥
मिंगसरियो भल आवियो, हिवडे हरष हु
ल्लास ॥ तोरणथी पाछा वल्या, सब जादव सि
रदार ॥ कहीजो संदेसो भोला नेमने ॥ १ ॥ पो
स महीनो पवनको, पूरारे पुन संजोग ॥ पोस
महिनारी गोरली, कठण सियालारी रात ॥ क०
॥ २ ॥ माहा महीने सी पडे, वाजे सीतल वाय
॥ ऊंभेजी ओरया पोढणो. कामण कंतलगाय ॥
॥ कही० ॥ ३ ॥ फागण महीनो वसंतरो, सुन
सुन भोगी भरतार ॥ दूर देसारी चाकरी, कुण
जासी असल गिवार ॥ क० ॥ ४ ॥ चेतज मही
नो चिंतवे, साहिब चालणहार ॥ तुरियाजी तं
ग खचावनो, साथे है सेयणारो सात ॥ कही० ॥
॥ ५ ॥ वैसाखियो भल आवियो, सुणो सुणो
सहिल्यानो वेण ॥ ऊभीजी झुरे गोरडी, डबक
य भरीया नेण ॥ कही० ॥ ६ ॥ लु वाजे धर
ती तपे, लागोहे आंखरो जेठ ॥ नेणजी काज

ल पिलगले, उभी बंगलारे हेठ ॥ कही० ॥ ७॥ पुनमथी पख पलटीयो, लागोहे मास असाढ ॥ दुःख दे साहीब चालीया, करगया गोरीसुं घात॥ ॥ कही० ॥ ८॥ सावनियो जल आवियो, वरस न लागो मेह ॥ चारूदिस चमके बिजली, धुज न लागो देह॥ कही० ॥ ९ ॥ भादरवो जल आवियो, नदिया खळके नीर ॥ बापीयो पिउ पिउ करे, घर आवो नंदल बाईरा वीर ॥ क० ॥ १०॥ आसोज महीनो चांदणो, सब खुलरही रात॥ राजुल राणी जोवे वाटडी, घर आवो नेमकुमार ॥ क० ॥ ११ ॥ कातीजी कंत पधारिया, वोलिया वोरूई मास॥ मुक्त गया श्रीनेमजी, साथें राजुल नार ॥ कही० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकरी सज्झाय लिख्यते ॥

श्रावक तुं ऊठे परभात, चार घडीले पाछली रात ॥ मनमें समरे श्रीनवकार, ज्युं पामे भवसायर पार ॥ १ ॥ कवण देस कवण गुरु धरम, कवण हमारे हे कुलकरम ॥ कवण हमारे हे विवसाय, एहवो चिंतवजे मनमाय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन सुध, धरम तणी हिये धरिजे बुध॥

पडिक्कमणो कर रहे नितनो, पातीक आलोये आ
पणो ॥ ३ ॥ काया सगट करे पचखाण, सुधी
पाळे जिनवरनी आण ॥ भणजे गुणजे स्तवन
सझाय, जिणहुती निसथारो थाय ॥ ४ ॥ चित्त
रे नित चवदे नेम, पाळे जीव दया ते सीम ॥
गुरुने मुख लिजे आखडी, धरम न मेले एक
घडी ॥ ५ ॥ वारु सुध करजे व्यापार, इछा अंधक
रो परिहार ॥ मतभरे कूडी केहनी साख. कूडासुं
सकथन मत भाक ॥ ६ ॥ परभाते उठ गुरु वां
दण जाय, सुणे वखाण सुधे चित्तलाय ॥ निर
दूपण सुकतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥
॥ ७ ॥ सामी वछल करजे घणो, सगपण मोटो
सामी तणो ॥ दुःखीया हीणा दीना देख, करजे
तास दया सुविशेष ॥ ८ ॥ घर अनुसारू देजे
दान, मोटासुं मतकरे अभिमान ॥ अनंत काय
कहिये वत्तीस, अभक्ष बावीसे वीशवा वीस ॥
॥ ९ ॥ केवळीया भाक्या छे इमे, काचा कवला
फळ मत जीमे ॥ राणा इंधण चूं तो जोय, जो
या विना ते पापज होय ॥ १० ॥ घीरतनी पर
वरजे नीर, अणगळ नीरमे धोवे चीर ॥ बारे व्रत

सुधा पालजे, अतिचार सगलो टालजे ॥ ११॥ कह्या पनरे करमा दान, पाप तणी परिहरजे खाण ॥ रात्रे भोजननो वहु दोप, जाणीने करजे संतोप ॥ १२ ॥ साबु साजी लोहने गुली, मंधु धाहनिया मत वेचं वली ॥ भले मत करावे राग ने रिस, दोखण घणा कह्याछे तास ॥१३॥ पाणी गलजे वे वे वार, अनगल पिधा दोप अपार ॥ जीवा नीरा करजे जतन; पातिक टाली करजे पुण्य ॥ १४ ॥ सम्यकित सुध हिये राखजे; बोल विचारीने भाखजे ॥ उत्तम ठामे खरचे वित्त, पर उपगार करे सभचित्त ॥ १५ ॥ तेल तकर घत दुधने दही, उघाडा मत मेलेसही ॥ पांचे तिथम करे आरंभ, पाले शिल तजे मन दंभ ॥ १६ ॥ दिवसतनो आलोये पाप, जिम भांगे सगलो संताप ॥ आठुं करम पातला, भव भवना भाजे आमला ॥ १७ ॥ वारु लहिये अमर विमाण, जिम पामो शिवपुरनो थान ॥ किरत हरप कहे सनेह, श्रावकनी करणीछे एह ॥ १८॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभः ॥

हिवे राणी पद्मावती; जाव-रास खमावे ॥ जा

॥ १९ ॥ दीपाने नवें ठेतरया, कीधा रंगण प
स ॥ अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्य
स ॥ ते ॥ २० ॥ सूरपणें रण झुंझता, मारया म
णस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण नख्या, खाध
मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धा
नी, पाणी उलंच्या ॥ आरंभकीधा अतिघण
पोते पापज संच्या ॥ ते० ॥ २२ ॥ करम अंग
रं कीयावली ॥ घरने दव दीधा ॥ सम खाध
वीतरागना, कूडा कोलज कीधा ॥ ते० ॥२३॥
विल्लीभवें उंदर लीया. गिरोली हत्यारी ॥ मू
गिमार तणे भवे, में जुवा लीखा मारी ॥ ते०
॥ २४ ॥ भडभुंजा तणे भवें, एकेंद्री जीव ॥ ज
आरि चणा गहु शेकीया, पाडंता रीव ॥ ते०
॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारनां, आरंभ अनेक
॥ रांधण इंधण अग्नीनां, कीधा पाप अनेक ॥
॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधा वली, सेव्या
पांच प्रमाद ॥ इष्टवियोग पाडया कीया, रुदन
विख वाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक त
णा, व्रत लहीने भांग्यां ॥ मूल अने उत्तर तणा,
मुझ दूषण लाग्या ॥ तेमुज० ॥ २८ ॥ साप वी

बु सिंह चितरा, सिंकराने समलि ॥ हिंसक जीव तणे नवें, हिंसा कीधी सवली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सुश्रावमीं दूषण घणा, वली गरन गलाव्या ॥ जीवाणी ढोल्या घणी, शील व्रत नंगाव्या ॥ ॥ ते० ॥ ३० ॥ नव अनंत नमता थकां कीधां देह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिण सुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधां कुटंब ॥ संबंध त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिणसुं प्राति बंध ॥ तेमु० ॥ ३२ ॥ इण परे इहनव परनवें, कीधा पाप अक्षत्र ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, करूं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ॥ ३३ ॥ इण विध ए आराधना, नावें करसे जेह ॥ समय सुंदर कहे पापथी, इह नव छुटसे तेह ॥ ते० ॥ ३४ ॥ राग वैराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाल ॥ समय सुंदर कहे पापथी, छुटे नव ततकाल ॥ ते० ॥ ३५ ॥

॥ अथ शिवपूर नगरीको स्तवन लिख्यते ॥

सिद्ध नूमिथी उंची अलगी, सातराजु परमाणे ॥ लाख पेंताळीस जोयन पहोळिस, ग्यान विना नही जाणे ॥ नगरी खुब बनिहेजी, देखण हुंस घणि हेजी, प्यारा सिद्ध धनिहेजी, आगम वेण सुणि

क्षेजी ॥ १ ॥ दल दरवाजा हियडे जमिया. पाच र हे नित खूटा ॥ करी किल्ला एक छिनमे कायम, अ ष्ट करमथी छूटा ॥ नग०॥२॥ सुरनर इंदर तेपि ण इधका, मुनिवररा सुख जाणो. तिणसुं सुख अ नंता इधका, करम हणिने माने ॥ नग०॥३ ॥ तिर खाजूखने सुख दुःख पुद्गळ. मूलन दिसेजी कांई ॥ नहीं पिण रहेवे अनंता, नहीं वंसती नही रोही ॥ नग० ॥ ४ ॥ काया नही पिण आडल ओगण, आंख नही पिण देखे ॥ पुण्यपापतो मूळ न दिसे, जोग जोग नही वांके ॥ नग० ॥ ५ ॥ सुख असुख एक नही छोडे, जो जुग छोटो मोटो ॥ विनो का ळ अनंत वोपारी. नफो न दिसे तोटो ॥ नग० ॥ ॥ ६ ॥ इस नगरीमे वसे धनवंता. चहु दिस हुं डया चाले ॥ मालखरीद लेवे चहु दिसनो, मु ल्य न पाछो घाले ॥ नग० ॥ ७ ॥ डोले नही पि ण रेहवे शुज किरती. दान नही पिण दायक ॥ जावेहै पिण आवे नहीं पाछो, नही सेवक नही नायक ॥ नग० ॥ ८ ॥ इगसट साल रसाल न गरमे. जरजादरवो गायो ॥ काल अनंत रुलि यो चिहुं गतमे, अवतो मारग पायो ॥ नग० ॥

॥९॥ महिपुरमे शिवपुरने गायो, पायो परम आं णंदो ॥ रतनचंदजी कहे उस नगरी विना, कटे नही भव ा फंदो ॥ नगरी० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ सात वारेको स्तवन लिख्यते ॥

आदीतर दिन जोळी दुणिया, मिनख जमा री पायजी ॥ ठ हायारा आरंभ करता, गयो ज मारो हारजी ॥ सुणो भवियण महावीरजीरी वा णी, सत पुरपारी अमृत आणी ॥१॥ सोमवाररे सुता मूरख, मनमथ वाली निंदजी ॥ काळ सी राणे आण खमो: जिम तोरण आयो वींदजी ॥ सुणो० ॥ २ ॥ मंगलवाररे मंगलाचार. दया ध रमसु प्रेमजी ॥ सामायिक पडिकमणो करतां, लाहो ल्यो नित नेमजी ॥ सु० ॥ ३ ॥ बुधवाररे वली ओसता, बुढापे दुःख थायजी ॥ बैठ खाट पोलके उपरे, पडियो करे विलापजी ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ वीसपतवाररे थिखो पडियो, कोइन मेट णहारजी ॥ मातपीतारी करो बंदगी. जिम उतरो भवपारजी ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ सुक्रवाररे सुकाचार, जासी शिवपुर मायजी ॥ अनंत सुखामे डेरो दि या; ज्यांरो हुजासी खेवोपारजी ॥ सु० ॥ ६ ॥

थावरवाररे थिरका हुसी, हुं धनवंती नारजी ॥ सेर सेर सोनो पेरती, मोत्या मरती नारजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ ए सातु वार सदा सिमरीजे, श्री स दगुरुकी सिखजी ॥ ए सातुवार नित नित सि मरिया, हुजासी खेवो पारजी ॥ सुणो० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री वगन मुनिसरजीरो स्तवन लिख्यते ॥

(धुम चालमे) ए वगन मुनिसर नाम, पु रप अवतारी ॥ पु० ॥ तुम नमो गुरुके पाय, सु नो नरनारी ॥ ए आंकणी ॥ एक आमदानग रहे गाव, दिखनके माही ॥ दि० ॥ कहु जिनधर मकी मेहेमा, सुनो चितलाई ॥ ज्याहां ओसवा ल है पंच, वडेजी मारी ॥ व० ॥ नित धरे प्र मुको ध्यान, सुणो इधकारी ॥ तुम० ॥ १ ॥ ए नव मुनिसर नित, नमुं त्रिकालो ॥ न० ॥ जि ण वोसाई संसार, सबी जंजालो ॥ नित वाचे शास्त्रको सार, सुनावे नरनारी ॥ मु० ॥ दोय चे ला कीया साथ, आग्याकारी ॥ तुम० ॥ २ ॥ ज्यारे मनमे उठो वैराग, दिख्या म्हे लेवा॥ दि० कहे वगन मुनिने जाय, चरणमे सेवा ॥ कहे व गन मुनिसर ज्याने, श्रावक तुम नारी ॥ श्रा०॥

इण अल्प उमररें माय, खुब विचारी ॥ तुम० ॥
॥ ३ ॥ ए साध पणारो काम, वडोहै कठण॥ व० ॥
ए दोहिलो मानव भव, करो थें जतन ॥ म्हे छो
डीहै सब आस. माय बापारी ॥ मा० ॥ अब ता
रो दीन दयाळ, सरण तुमारी ॥ तु० ॥ ४ ॥ इ
म देखीज्यांरो साच, श्रावक हुवा भेळा ॥ श्रा०
॥ कहे मुनिसराने जाय, दिन देखो बेळा ॥ अब दे
खो मास आषाढ, आदितवार भारी ॥ आ० ॥
ए वद इग्यारस तीथ ॥ करो तुम त्यारी ॥ तुम०
॥ ५ ॥ जद उछव करनो मांड्यो, नगररे माहीं॥ न०
॥ नित खावे बनोळा, दोनो जिना ए भाई॥ इम नि
त नवा पकवान. जिमनभे भारी ॥ जि०॥ ए गावे
मंगळ गीत, सुनो नरनारी ॥ तु० ॥ ६ ॥ इम मोह
छोडयो संसार, सुध मन ध्यावे ॥ सु०॥ ए देस देस
का श्रावक, दरसण आवे ॥ जिम नेम लीयो वै
राग, राजुल तजी नारी ॥ रा० ॥ ए खोटो मो
ह जंजाल, सुनो संसारी ॥ तु० ॥ ७ ॥ वद इ
ग्यारस वार आदीत वड भागो ॥ आ० ॥ ज्यां
लीयो मुनिवर कने, जाय वैरागो ॥ दिन दोपाहारे
पूद. दया सुध धारी ॥ द० ॥ कीनो कायारो कल्वां

ण, नमे नरनारी ॥ तु० ॥ ८ ॥ इम पाग आ
या लोक, मंगल गीत गाता ॥ मं० ॥ ज्याने ग्या
न दियो मुनिराज, पामी सुख साता ॥ ज्यांरो
कीनोछे परसाद, जीमो नरनारी ॥ जि० ॥ इण
कलजुगरे माय, धन्यहै ज्यांरी ॥ तु० ॥९॥ ए छग
न मुनिसर रेवे, बुंदीकोटा माही ॥ बुं० ॥ ज्यारे
सूरजमलजी, ज्यांनोछे गुरु भाई ॥ जारमजी
दिख्या. दया सुध धारी ॥ द० ॥ सूरजमलजीरा
बेटा, हुता बडा आग्याकारी ॥ तु० ॥ १० ॥ ए
संमत उगणीसेरे, छत्रीसेजी बखानो ॥ छ० ॥ जो
ड्यो चुतर गुमानचंद, नगर माहीनें जानो ॥ भू
ल चूक गुनो माफ, आरज हे मेरी ॥ आ० ॥ मे
नमु तिर्थंकर देव, सरण तुमारी ॥ तुम० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्री महावीरजीको स्तवन लिख्यते ॥

सिद्धारथ कुलदिपकचंद, त्रसलादे राणी नी
रा नंद ॥ कोमल कंचण वरण सरीर, मन वंछ
पुरण महावीर ॥ १ ॥ त्रिभुवननाथजीरे करुणा ध
णी, मुजसामो जोवो सासणरा धणी ॥ श्री त्रिभुवन
नाथजीरा उत्तम तीर ॥ म० ॥ २ ॥ अनंत भ
वी नप हुकार किया, करमाने दाया नळ दिया

॥ खमसम दमने खिमा धीर ॥ मन० ॥ ३ ॥ वे
साखे सुद दसमी जाण, प्रभुजी पांम्या केवळ ग्यां
न ॥ सायर जैसा हुवा गंभीर ॥ म० ॥ ४ ॥ स
मोसरण सुणजो इधकार. जोजन वाणी अमृत
धार ॥ दिठा हरके हियडो हीर ॥ म० ॥ ५ ॥ च
म्माळीसे चेला कीया, एकण दीनमे महा व्रत
दीया ॥ गौतम सरीखा हुवा वजीर ॥ म० ॥ ६ ॥
चिंतामणि चिंता चकचूर, देखी दुसमण न्हासे
दूर ॥ दीन दीन वधे संपदा सीर ॥ म० ॥ ७ ॥
पलक करे प्रभुजीरो ध्यान ॥ पग पग प्रगटेपु
एय निधान ॥ वचन मीठा जिम मिसरी खीर ॥
म० ॥ ८ ॥ चितगुण जिनवरजीरो जाप, कोड
नवरा काटे पाप ॥ रोग सोग वलि न्हासे दूर ॥
म० ॥ ९ ॥ तुम नामे भवसायर तरे ॥ तुम ना
मे भव कारजसरे ॥ रिद्ध ग्रिध पामे हीर चीर ॥
॥ म० ॥ १० ॥ पावापुरीमे मुक्ते गया, रिख रा
यचंदजी कहे करजो मया ॥ पोचावो मोय भव
जल तीर ॥ म० ॥ ११ ॥ संमत अढारे वर्त्ता
से जाण, मेडते सेहेर कीया गुणग्राम ॥ ठका
याना प्रभुजी पीर ॥ मन० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ अरिहंतजीको मंगळ लिख्यते॥

दुहा ॥ अनंत चोवीसी नित नमुं, सकळ जीवा हितकार ॥ भवजीव उपगारणे, भणमुं मंगळ धार॥ १ ॥ पहेलो मंगळ अरिहंतनोए, दुजो सिद्ध मंगळीक ॥ तीजो मंगळ साधनोए, चोथो दया धरम मंगळीक ॥ २ ॥

ढाळ ॥ मंगळ पहेलो अरिहंतनोए, भावसुं भणमुं हितकारके ॥ विघन दूर टलेए, पामीए भवनो पारके ॥ १ ॥ मंगळ मोटकोए ॥ ए आंकणी ॥ जगत तिर्थंकर वीसहेए, उत्कृष्टा एक सो ने साठ ॥ महा विदेह क्षेत्र माहेए, विचरंति [illegible] ना दातारके ॥ मंग० ॥ २ ॥ चोतीस अतिशे [illegible], वाणीके गुण पैंतीसके ॥ एकसो आठ लक्षणना धणीए, [illegible] रागने [illegible] मं० ॥ ३ ॥ जिहां जिहां जिनवर विचरे [illegible] तहां [illegible] ॥ सो सो कोसारे [illegible] तहां [illegible] जोणो [illegible] ॥ मं० ॥ ४ ॥ [illegible]

ोटाचे प्रति अरज्या आठके ॥ कोठा सहुं उंदा
ाळेए, चलंता स्वामि हुवे खाटके ॥ मं० ॥
। ६ ॥ लोहीने मांस ज्यारे उज्वलोए, सुगंध श्वा
ो श्वासके ॥ दोष रेश मात्र नहीए, संचीया प्र
नु पुण्यतणी रासके ॥ मं० ॥ ७ ॥ अनंत व
ळी अरिहंतजीए, ग्यान दर्शन तणी जोतके ॥
नामंडल दिपतोए, जाणे सूरज उदंतके ॥मं०॥
। ८ ॥ चोसट इंद्र सेवाकरेए, सुरनर सारेचे से
वके ॥ जस महिमा अती घणीए, मोटाचे देवा
वी देवके ॥ मं० ॥ ९ ॥ देवता आय त्रीगडो
रच्योए, अरिहंत महिमारे काजके ॥ बजावेचे दे
व दुंदुभीए, समोसरण तणो साजके ॥ मं० ॥
॥ १०॥ पहेलो गढ रुपा तणोए, सोनाको सीस
सुरंगके ॥ च्यारुंई पोला जणीए, तोरण झलके
चंगके ॥ मं० ॥ ११ ॥ पावडीया गढ पेला तणी
ए, दस हजार प्रमाणके ॥ सोवनमें गढ दुसरोए,
रत्नको सीस सूरंगके ॥ मं० ॥ १२ ॥ त्रीजो गढ
रत्ना तनोए, मोतीको सीस सारके ॥ च्यारुंई पो
ला जणीए, पावडीया पांच हजारके ॥ मं० ॥ १३ ॥
भिंता गढ तीनुं तणीए, उंचीचे धनुष्य पचासके॥

धनुष्य तेत्रीसनोए, बत्रीस अंगुळ साचके॥मं०॥ १४॥ इतरी जित चवमी कहीए, पावडीयाते एक एक हातके ॥ उंची कही पिण पातलीए, लांबीते धनुष्य पचासके॥ मं० ॥ १५॥ सोना रुपा रत्ना तणाए जोग जोगतां गढ तीनुं जाणके ॥ गढ गढने आंतरोए. तेरेसे धनुष्य प्रमाणके ॥ मं० ॥ १६॥ गाद्दससे धनुष्य मध्यें बिचेए सिंहासन तोरण अभिरामके ॥ मं० ॥ १७॥ रतन सिंहासण वेसनेए. जिनवर देवे वखाणके ॥ भविक जीव तुमे सांभलोए, छंमो कुमत कलेसके ॥ मं० ॥ १८॥ साधुने वली साधवीए, श्रावकने वली श्राविकानी जोडके ॥ ऐमो रंग अति आणीयोए, तोडेजे कर्मनी कोडके ॥ मं० ॥ १९॥ चारेंई जातरा देवनाए, देवंगणा चारेंई जाणके॥चतुर विध संघ ए कह्याए, बारेंई प्रखदा मंडाणके ॥ मं० ॥ २० ॥ श्रावकने वलि श्राविकाए, बेठे विमानीक देवके ॥ इशान्य कुणमे बेसनेए, करजोडी नर नारी सेवके॥ मं० ॥ २१ ॥ देवी विमानीकनीए, साधुने साधवी सारके॥ अग्न कुणमें बेसनेए, दरसण करे चितलायके॥ मं०॥

॥२२॥ भवनपती विंतारिक जोतकीए, देवंगणा तीनुंई जातके॥ नैऋत्य कुणमे बेसनेए, वाणीतो सुणे उल्लासके ॥ मं० ॥ २३ ॥ भवनपती वित रिक जोतकीए. देवंगणा. तीनुं जातके ॥ वाय व्य कुणने.वेसनेए, सुण सुणे प्रभुनो वखाणके ॥ मं० ॥ २४ ॥ वाणीतो भोजन गांमणीए, स कार दूधनी वातके ॥ पीया त्रप्त हुवे नहीए, भा वसुं मगन हुजायके ॥ मं० ॥ २५ ॥ भापा वली अरथ मागधीए, आक्षरमालपर छेदके ॥सांसो कोई उपजे नहीए, वोलतां ठठपर छेदके ॥ मं० ॥ २६ ॥ वालने विरध समजे सहुंए. इसीज है जिनवर वाणके ॥ भविक जीव चेते घणाए, ला गेछे प्यारो वखाणके ॥ मं० ॥ २७ ॥ पद.रीनें वाग भेला सुणेए, नही हुवे खेप विसेखके ॥ परखदा नर आई नमेए, गाले अहंकार ओर मानके ॥ मं० ॥ २८ ॥ दरसण दीठो जिण रा जनोए, टलजाय भवतणी फोडके ॥ देवता पा से रहे सहीए, थोमोतो एक भ फोडके ॥ मं० ॥ ॥ २९ ॥ अनंत ग्यान तणा धणीए, समतार स भरपूरके ॥ भाव आया धकाए, दालीद्र जा

वे सवी दूरके ॥ मं० ॥ ३० ॥ पेलो सगों सोई ने सुवेए, सोभती जिण तणी देहके ॥ कृपाना थ जगत गुरुए, दीठो जग धरम सनेहके ॥ मं ग० ॥ ३१ ॥ वृक्ष अशोक छाया करेए, जिहां विचरे जिण राजके ॥ जठेई सुख सासतोए, तरण तारण जिहाजके ॥ मं० ॥ ३२ ॥ बारे गुण उंचा कह्याए, वृक्ष अशोक परधानके ॥ सरव सुख उपजेए, जिहां रहे जिण राजके ॥ मं० ॥ ३३ ॥ चिहुं दिस चोमुख विराजतोए, जिणराज देवे उपदेसके॥ भावसुं जे सुणेए, पा मेंवे पदवी खेमके ॥ मं० ॥ ३४ ॥ मस्तक छत्र तीनुं धरेए, जिणवर त्रीभुवन शामके ॥ चवर सुरनर करेए, प्रतगंग पर भावके ॥ मंगळ० ॥ ॥ ३५ ॥ भामंडल पूठे हुवोए, बारे गुण तजदे णके ॥ रतन हीरा जड्याए जाणे उगोवे भा णके ॥ मं० ॥ ३६ ॥ फूल बिरखा करे देवताए, जोजण जिण परमाणके ॥ बाजेवे देवनी दुंदु भीए; नादवे अमीय समानके ॥ मं० ॥ ३७ ॥ दे व इसो दूजोनहीए, सगरने मृत्यु पातालके ॥ मं० ॥ ३८ ॥ गुण अरिहंतना अतिघणाए, किम कहुं

जीनडली इहके॥ पूरोई कह सकुनहीए, जो मि
ळे जीन अनेकके ॥ मं० ॥ ३९॥ चार करम वा
की रह्याए, बैल रेडा समानके॥ मुक्त सिधावसी
ए, रिखजेमलजी कहे एमके ॥ मं० ॥ ४० ॥
अथ श्री तिलोक रिखजी महाराज कृत काव्य.
॥ अथ उपदेशी फटको लिख्यते ॥
धिक तेरा जीवना, न करता धरमकुं ॥ धिक
तेरा तन मन, धिक है जनमकुं ॥ धि० ॥ १ ॥
रत्नचिंतामणी जन्म जो नरको, खोय दियो जैसें.
भव तेने खरको ॥ धि० ॥ २ ॥ नीचकुं देखके
सिस नमावे, संतकुं देख अधिक अकडावे॥ धि
क० ॥ ३ ॥ धर्मकथा कछु दाय न आवे, जो
सुणे तो कुक्कुक झोलां खावे ॥ धि० ॥ ४ ॥इ
श्कका ख्याल राग आनुरागें, धका खाय तोहि
धसे आगे ॥ धि० ॥ ५ ॥ नाटकमें उजा रहे रा
त सारी, मुनिदरशण आलस अति भारी॥ धि०
। ६ ॥ तप जप वातमें पट नट जावे, खाणामें
लोटो लेई झट जावे ॥ धि० ॥ ७ ॥ स्तवन सज्झा
य कहेतां शरमावे. लडतां तो कछु दाय न आ
वे ॥ धि० ॥ ८ ॥ दान देतां थरथर कर धूजे

वरी॥ पारसनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो भव ओघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहिं को इ तारक दूजो, इम निश्चें मन माहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम कारिने, मुक्तश्री द्यो प्रभु मेहेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभ जिन स्तवन लिख्यते ॥

जे गणेश जे गणेश जे गणेश देवा ॥ए देशी॥ जे जिणंद जे जिणंद जे जिणंद देवा, उठि प्रभात समर नाथ, श्री ऋषभ देवा ॥ए टेक ॥ पिता तेरो नाभिराजा, जननी है मरुदेवा ॥ देही कंचन वृषभ लंछन, तेजें रतिपति जेहवा ॥ जे० ॥ ॥ १ ॥ जुगला धर्म निवार कियो प्रभु, ठे कुल गरकी ठेवा ॥ संजम लीधो श्री जिन नाथें, कर्म अरिने हणेवा ॥ जे० ॥ २ ॥ केवल ले प्रभु देशना दीवी, वाणी ज्युं अमृत मेवा ॥ चार तीरथकी स्थापना कीनी, भवजल पार करेवा ॥ जे० ॥ ३ ॥ दश सहस्र मुनि संगे अष्टापद, घटीया अणमण लेवा ॥ ठ दिन संथारे मुक्ति गम्या, मुक्ति अनंत निनमेवा ॥ जे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे मैं तुम चाकर, त्यं चरणारा

सेवा ॥ जिम तिम करि नव पार उतारो.
दिजो अविचल सेवा ॥ जै० ॥ ५ ॥ इति ॥
॥ अथ चोविस जिनवरकी स्तुति लिख्यते ॥
राग वसंत ॥शांति चरणरीजाउं बलिहारी ॥
शां०॥ एदेशी ॥ जैलो चंदण नाथ हमारी, तुमा
रे चरणकी बलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजो
त संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुखकारी ॥
श्री सुपार्श्व चंदाप्रभु सगरो, जगनायक जसधा
री, प्रभुजी पूरण उपगारी ॥ जै० ॥ १ ॥ सुवि
धि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनंत धर्म
धारी॥ शांतिजिनंद सुख कंद जगतनें, मेट दी
नी सब मारी, हरो मेरी विपत विमारी ॥ जै०
॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, नमी ने
मी सुविचारी॥ तोरणसें पाछा फिर आया, ठो
ड्यिं राज दुलारी, नाथ तुम करुणाभंडारी ॥
जै० ॥ ३ ॥ वे वारसके वारस पारस, पंचपरमे
ष्टी उच्चारी ॥ नागनागणि जलत बचाया, की
ना सुर अवतारी, महिमा जगमें भ्रति भारी
॥ जै० ॥ ४ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, ह
द क्षमा प्रभुधारी ॥ केवल ले सच धर्म बतायो,

सूत्र चारितर सारी, तीरथ थाप्यां प्रभु चारी॥ क्रे० ॥ ५ ॥ अणसण लेई प्रभु जोग त्याग कर, पहुंता है मुक्ति मझारी ॥ अनंत सुखमांही जाय विराज्या तो, नीरंजन नीराकारी, रह्या लोकालोक निहारी ॥ क्रे० ॥६ ॥ मोहमाया मांहि उलज रह्यो में, पायो हुं दुःख अपारी ॥ तुम शरणा विन चउगति भटक्यो, धर्मकी बुद्धि विसारी, शीख सतगुरुकी न धारी ॥ क्रे० ॥ ७ ॥ अशुभकर्म कछु दूर भयासूं, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अतम उद्धारण बिरुद सुणिने, सरणो लियो सुविचारी, सार करजो प्रभु हमारी ॥ क्रे० ॥ ८ ॥ मुझ सरिखो नहिं दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी ॥ जिम तिम करि भवपार उतारो, या मांगु रिझवारी, अरज लीजो अवधारी ॥ क्रे० ॥ ९ ॥ उगणीशें अडतिश माघकृष्ण पक्ष, त्रीज तिथी शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेठमें, जोड करी हितकारी, तिलोक रिख कहे सुविचारी ॥ क्रे० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ वीस विहरमानकी लावणी लिख्यते ॥

दीनदयाल कृपाल, करुणा भंडारी ॥ क० ॥

जय बिहरमान जिन वीश, धर्म अधिकारी ॥ श्री सीमंधर स्वामि, सदा सुखकारी ॥ स० ॥ जय युगमंधर जसवंत, चरण वलिहारी ॥ बाहु जिणंद कृपाल, करुणा भंडारी ॥ क० ॥ श्री सुबाहु जगदीश, परम पद धारी ॥ सुजात प्रभु घनघाती, कर्म कीयां गारी ॥ क० ॥ स्वयंप्रभ वीतराग, ममता विमारी ॥ रिखभानन आनंद, करे नर नारी ॥ क० ॥ जय विहरमान महाराज, धर्म अधिकारी ॥ एटेर॥ १॥ अनंतवीरज जगनाथ, तज्यां जगनांता ॥ त० ॥ श्री सूर प्रभु सुविख्यात, करो सुखशाता ॥ विशाल प्रभु सुविशाल, त्रिजगके त्राता ॥ त्रि० ॥ श्रीवज्रधर तप वज्र, कर्मके घाता ॥ चंद्रानन सुखकंद, दर्श चित्त चाता ॥ द० ॥ चंद्रबाहु कर्मराहु, हठाया खाता ॥ कियो कर्मसें जंग, भुजंग प्रभु भारी ॥ भु० ॥ ज० ॥ २॥ ईश्वर त्रिजग ईश, मेरे मन भावे ॥ मे० ॥ श्री नेमीश्वरजिन ध्यान, करतां दुःख जावे ॥ वीरसेन करे केण, अमर पद पावे ॥ अ० ॥ माहाभद्र करे भद्र, विघन कुं हठावे ॥ देवजसा करे सेव, रिद्ध सिद्ध आवे

॥ रि० ॥ अजीत वीरज निजपद, देत जन भावे ॥ जघन्यपदे वर्तमान, जिनंद उपगारी ॥ जि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ धनुष्य पांचशें प्रमाण, प्रभुजीकी काया ॥ प्र० ॥ लक्ष चोराशी पूर्व, आयु फरमाया ॥ थाप्यां हे तीरथ चार, भविक मन भाया ॥ भ० ॥ होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया ॥ में अधम उद्धारण विरुद, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥ तिलोकरिख युं जाण, शरणागत आया ॥ जिम तिम करो भवपार, अरज अवधारी ॥ अ० ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति॥

॥ अथ सोळे स्वप्नाकी लावणी लिख्यते ॥

दुहा ॥ शासण नायक सुरतरु. भयभंजन भगवंत ॥ त्रिशलानंद जिनंद सम, प्रणमुं मन धरि खंत ॥ १ ॥ वळी प्रणमुं गौतम गुरु. तप संजम दातार ॥ तास प्रसादे वर्णवुं. सुपन सोळे अधिकार ॥ २ ॥ पाटलिपुर नगरिविषे, चंद्रगुप्त राजिंद ॥ बारे व्रत धारक गुणी, पर जाने सुखकंद ॥ ३ ॥ चउदे पूरव ज्ञान शुद्ध, भद्रबाहु मुनिराज ॥ समोसरया उद्यानमें, तारण-तरण जिहाज ॥ ४ ॥ पाखी पोसाने विषे,

देख्यां स्वपनां सोल ॥ पूछे नृप कर जोडिने, अर्थ कहो मुनि खोल ॥ ५ ॥

अगडदम अगडदम वाजे चोवडां ॥ ए देशी ॥ कल्पवृक्षकी शाखा तूटी, अर्थ सुणो ये ह स्वपनेका ॥ अब जो राजा होयगा कोई, सं जम वो नही लेनेका ॥ दुजे अस्त भया सूर्य अकालें, भेद सुणी अब इस्का सही ॥ पंचमे आरे जन्म लिया है, उनकुं केवल ज्ञान नहीं ॥ नहिं मनपरजव अवधि पूरण, ए अंधकार भ या भारी ॥ भद्रबाहु मुनि कहे नृपसुं, पांचमो आरो दुःखकारी ॥ १ ॥ चांद देखा तुम चाल णी जैसा, तिसरे सपनाके मांइ ॥ अलग अल ग समाचारी होयगी, बोल फरक कुछ दरसाइ ॥ भूत भूतणी नाचत हिल मिल, देखा चोथे सु पनामांइ ॥ देव गुरु धर्म खोटा जिनकुं, लोक मा नेगा अधिकाइ ॥ दया धर्मपर बहोत जलेंगे, थोडे जैन धरमधारी ॥ भ० ॥ २ ॥ [illegible] दे खा सर्प भयंकर, वारे फणकर [illegible] क साल पिछे काल पडेगा, बारे [illegible] कार ॥ उत्तम [illegible] र संथारा,

जोयां देखी स्वपने, तेरमें, वाळकके महारथमां ही॥नादान उमरके धरम करेगा, संजम लेगा उलसाइ॥ळजासुं तप संजम पाली, तप जपमें चित देवेगा॥ वुढा धिठा होयगा धर्ममें, आलस अधिको रहेवेगा॥सरखा नहिं सब लड का वुढा, समुचय भाव कह्या जहारी॥ भ०॥ ॥ १० ॥ रत्नकी कांति मंदी देखी, चउदमा स्वपनामें जाणो॥ भरतक्षेत्रका संत साधके, हेत इकलास थोडो॥ मानो॥ क्रोधी क्लेशी अरु अभिमानी, अपनी बात जमावेगा॥ भली सीख जो देगा कोइ, उसका औगुण बतावेगा॥अलपहोयगा संजमवंता, होयगा बहोतसा लिंग धारी॥ भद्र०॥ ११॥ राजकुंअर सो चढया पोठिपर, देखा स्वपने पंदरमें॥ राजा जैन धरम तज देगा, राचेगा मिथ्याकरमें॥ बात करे जो सच्चावटकी, उसकी थोमा मानेगा॥जूठेकी परतीत करेगा, खोटेका पक्ष तानेगा॥ धर्मी पुरुषकी करेगा ठठा, पापीका आदर भारी॥ भ०॥ ॥ १२ ॥ लडने हस्ती देखे सोलम, विन मंत आपस माहिं॥ वार वार दुष्काळ पडेगा, म

न पहाया वर्पेगा नांहिं ॥ मात पिता गुरु वातके करतां, विच विच वातकरेगा ओटा ॥ भाइ भाइमें संपत थोडी, बोलेगा निर्थक खोटा ॥ पिता पक्षको आदर थोडो, त्रियापक्षमुं करेगा यारी ॥ भ० ॥ १३ ॥ कायदावाला प्रामाणिकन्यायी, गुणिजन थोडा होवेगा ॥ झगडा टंटा निरर्थक करकें, राजमांही धन खोवेगा ॥ केण न माने भला सकसकी, फिर पीछे पस्तावेगा ॥ एकविश हजार वरस लग राजिंद, ऐसी रीत कर जावेगा ॥ अरथ सुणी सोले स्वपना, राजा भया दृढ व्रतधारी ॥ भ० ॥ १४ ॥ संवत उगणीशें साल सेंतिमका, फागण वदि इग्यारस आई ॥ तिलोक रिख कहे स्वपन लावणी, गाम कडामें वणाई॥पांचम आरो दुःखम नामें, दुःखहै इणमे अधि काई ॥ धरम ध्यान और समता राखे, उनकुं सुख समजो भाइ॥ ऐसो जाणकें करजो सुकृत, उतरोगे भवजल पारी॥ भ० ॥ १५ ॥

अथ श्री शांति जिणेसरजीकी [illegible] लिख्यते

आरती शांति जिणंद [illegible] जिणके मन [illegible] ॥ आरती [illegible] शांति [illegible]

प्रभुजीकी विराजे. मृग, लंछण तुम चरण गाजें ॥ आरती० ॥ २ ॥ सरवारथ सिद्ध तजके आये, मुगती रमणे मिलणकु ध्याये ॥ आरती० ॥ ॥ ३ ॥ विश्वसेन सुत अचरामाता, जनम्या गजपुर नगर विख्याता ॥ आरती० ॥ ४ ॥ लाख वरसको आयु मानी. राजा सहे स्वस् दिख्या जानी ॥ आरती० ॥ ५ ॥ समोवसरणमे प्रभुजी विराजे, तुम देखतही दुरगत नाजे ॥ आरती० ॥ ६ ॥ शांतिनाथ प्रभु शांति करीजे. दुष्ट मद्दा दुःख दूर हरीजे ॥ आरती० ॥७॥ श्री जिनराजकी आरती कीजे, कुशल विजयकु सिवसुख दिजे ॥ आरती शांति जिणंद तुमारी ॥८॥

॥ अथ चोमुखकी आरती लिख्यते ॥

इण विध आरती, चोमुख कीजे॥ चोमुख जिन नज, सिव सुख लीजे ॥ इण० ॥ १ ॥ पहीली आरती विमळ जिणंदा, जो नवीजिन शिवसुख कंदा ॥ इण० ॥ २ ॥ दुसरी आरती धरम जिणंदा, पामे निरमळ ग्यान दिणंदा ॥ इण० ॥ ३ ॥ तिसरी आरती मुनीसुव्रतजी ॥ जनमको जनमा दुःख दूर करंदा ॥ इण० ॥ ४ ॥ चोथी आरती

नेम जिणंदा, मोहो तिमर दुःख दूर करंदा ॥ इण० ॥ ५ ॥ एह प्रभु आरती आदर लीजे, कुशळ विजयकु शिव सुख दीजे ॥ इण विध० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री संतनाथजीकी आरती लिख्यते ॥

जय जय आरती, संतनाथ तुमारी ॥ तारा चरण कमलकी, में जाउं वलिहारी ॥ जय०॥१॥ विश्वनाथ सेन, अचराजीके नंदा ॥ संतीनाथ मुख, पूनम चंदा ॥ जय० ॥ २ ॥ चालीस धनुष्य सोवनमे काया ॥ मृग लंछन प्रभु, चरण सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त प्रभु, पंच माहे सोहे ॥ सोळमा जिणवर, सुर नर मोहे॥ जय० ॥४॥ मंगळ आरती, जोरही कीजे ॥ जनम जनमको लाहो लीजे ॥ ज० ॥५॥ कर जोडी, सेवक गुणगावे ॥ सो नर नारी. अमर पद सुख पावे ॥ ज० ॥६॥

॥ अथ जिणेश्वरजीकी आरती लिख्यते ॥

जय जय जय जय बोलो जिनवरकी, जो है आशा अमर शिवघरकी ॥ ज० ॥ ए टेक ॥ ॥ १ ॥ जैसी कांति शशि दिनकरकी ॥ काया दमके सकल हितकरकी ॥ जय० ॥ २ ॥ ज्युं खसबोह अगर तगरकी, जिनसु श्वास सुगंध म

नोहरकी ॥ जय० ॥ ३ ॥ जैसी मीठी डली है सक्करकी, वाणी अनंत गुणी सु मधुरकी ॥ ज०॥ ॥ ४ ॥ काया सोहे सुर अनुत्तरकी. शोजा अनुपम प्रजुजीका नुरकी ॥ जय० ॥ ५ ॥ जैसी चाल मराल गजवरकी ॥ तिणसुं गमनगति सुंदरकी ॥ जय० ॥ ६ ॥ चिंता आणी है जवसागरकी, संवत्सरी दान इच्छा उजागरकी ॥ जय० ॥७॥ घात करवा करम रुप अरिकी, क्रियाधारी संजम संवरकी ॥ ज० ॥ ८ ॥ केवलज्ञान दिशा जव फरकी. जब त्रिगमाकी रचना अमर की ॥ जय० ॥ ९ ॥ करुणाआणी है जीव अपरकी, दीवी उपदेशना पापका डरकी ॥ ज० ॥ १० ॥ काया माया अथिर है सुरकी, तिणआगें कहां ऋद्धि नरकी ॥ ज० ॥ ११ ॥ पथम थापना करी गणधरकी, पिछें चार तीरथ गुणिवरकी ॥ ज० ॥ १२ ॥ जे गति पावे मोक्ष नगरकी, पदवी सिद्ध अमर अजरकी ॥ ज०॥१३॥ होड कुण करिशके उण नगरकी, गिणती सागर आगें क्या विल्लरकी ॥ ज०॥१४॥ महिमा अपरम पार गुणागरकी. कहेवा शक्ति नहिं सुरगुरुकी ॥

ज० ॥ १५ ॥ अपवंतारिखजी महाराज महेर की, कीर्ति दाखी देव अघहरकी ॥ ज० ॥ १६ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरकी, भाव भक्ति करे तीर्थंकरकी ॥ ज० ॥ १७ ॥ इति ॥

कलश.

चोवीस जिनवर, प्रथम गणधर, चक्रि हल धर जे हुवा ॥ संसार तारक केवली, वलि समण समणी संजुया ॥ संवेग सूत्रधर, साध सूखकर, आगम वयणे जे सुणया ॥ श्री ग्यानचंदजी गुरु सुप्रसादे, श्री देव मुनिसर संथुणया ॥ १ ॥ अष्टापद श्रीआद जिनवर, वीर पावा पुरवरू॥ वासुपूज्य चंपानयर सिद्धा, नेम रेवागिरवरू ॥ श्री समेत शिखरे वीस जिनवर, मोक्ष पह ता मुनिवरूं ॥ चोवीस जिनवर नित्य वंदु, राय रु संघ मुहंकरूं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ इति स्तवन सज्झाय समाप्त ॥

अथ व्यवहार समकितना सिदसठ बोल लिख्यते.

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ सरदहणा | ४ | ७ भूपण | ५ |
| २ लिंग | ३ | ८ प्रभाविक | ८ |
| ३ दस प्रकारे विनय | १० | ९ आगार | ६ |
| ४ शुद्धता | ३ | १० जयणा | ६ |
| ५ लक्षण | ५ | ११ थानक | ६ |
| ६ दूपण | ५ | १२ भावना | ६ |

हिवे एहनो विस्तार कहेछे.

१ सरदहणा चार ते किसी—१ परम अर्थ नो परिचय करे ॥ २ परम अर्थना जाणिवान नी सेवा करे ॥ ३ धर्म पाथने वम्यो तेहनी संगत वरजे ॥ ४ कुतीर्थीनी संगत वरजे,

२ लिंग तीन ते किसा—१ जिम तरुणो पुरुष रंग राग उपरें राचे, तिम श्री वितरागनी वानी उपरें राचे ॥ २ तीन दिननो भूखो. खीर सक्करना भोजननें आदर करे. तिम श्री वितरागनी वाणीनें आदर कर ॥ ३ भणावाकी चाय हुवेनें. भणव णवाळो मिल्यां राजी हुवे. तिम श्री वितरागनी वाणी सुण हरपवंत हुवे ॥

११ थानक छे ते कहेछे॥ १ धर्मरूपी वृक्ष, मकित रुपियो मूळ ॥ २ धर्मरूप नगर, सम कितरूप गढ ॥३ धर्मरूप अनूपण, समकितरू मंजु जुंस॥४ धर्मरूपीयो मेहेल, समकित रूपि ी नीव ॥ ५ धर्मरूपी वस्तु. समकितरूप दुकान ६ ॥ धर्मरूपीयो नोजन, समकितरूपीयो थाळ, १२ नावना छ ते कहेछे ॥ १ जीव चेतना लक्षण,२ जीव द्रव्य सासतो छे, ३ जीव आठ क र्मनें करतांछे, ४ जीव पुण्य पापनो नुकाछे,५ सर्वजीवनें सर्व कर्म खपायां थकां मोक्ष छे, ६ ज्ञान दरशण चारित्र ते मोक्षना उपायछे॥एवं व्य वहार समकितना सिदसठ बोल संपूर्ण॥ एह बो लनो समकितीनें अवश्यमेव जाणपणो करणो॥

॥ अथ नव तत्व लिख्यते ॥

१ जीव तत्व,
२ अजीव तत्व.
३ पुण्य तत्व,
४ पाप तत्व,
५ आश्रव तत्व,
६ संवर तत्व,
७ निर्जरा तत्व.
८ बंध तत्व,
९ मोक्ष तत्व,

हिवे एहनो लक्षण कहेछे.

१ जीव ते चेतना लक्षण, पुण्य पापनो कर्ता, सुख दुःखनो भुक्ता, प्रजाय प्राण करी सहित, तेने जीव तत्व कहिये.

२ अजीव जड लक्षण, पुण्य पाप करे नही, सुख दुःख भुक्ते नही, प्रजाय प्राण करी रहित. तेनें अजीव तत्व कहिये.

३ पुण्य ते शुभफल, बांधता दोहिला, भोगवता सोहिला, मीठा सुखभोगवे. तेनें पुण्य तत्वकहिए॥

४ पापना अशुभफल, बांधतां सोहिला, भोगवतां दोहिला. कडवा कसायला, दुःखे भोगवे, तेनें पाप तत्व कहिये ॥

५ आश्रव ते ॥ जीवरूपीयो तलाव, अव्रत रूप नाळा करी ॥ पुण्य पाप रूपियो पाणी आवी भरावे . तेने आश्रव तत्व कहिये ॥

६ संवर ते ॥ जीव रूपीयो तलाव. तेमाही अव्रत रूप नाळा करी. पुण्य पाप रूपीयो पाणी आवेछे, तेनें व्रतरूप पाळ बांधीनें रोके तेणें संवर तत्व कहीये ॥

७ निर्जरा ते ॥ जीव रूपीयो कपडाने, कर्म

रूपीयो मेळ लागोछे, तेने तपशारूप
री घोवे. तेनें निर्जरा तत्व कहिये ॥

८ बंध ते ॥ जीवना आतम प्रदे
आठ कर्मनी वर्गणा लिपावे, जीवना
निजगुणानें ढाके. तेहनें बंध तत्व क

९ मोक्ष ते ॥ आठ कर्मा थकी ज
था प्रकारे मुकावे, पोताना ज्ञानादिक
ळा करे, तेने मोक्ष तत्व कहीये ॥

हिवे नवतत्वनी ओळखाण कहें

जीव, अजीव, पुण्य, ए तीन तत्व
जोगछे ॥ पाप आश्रव, बंध, ए तीन त
णीनें छांडवा जोगछे,

संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन तत्व
आदरवा जोगछे,

जीव संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए चार
अजीव,पुण्य,पाप आश्रव,बंध, ए पांच अ
जीव. संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए चार अ
पुण्य, पाप. आश्रव. बंध. ए ४ रूपी
अजीव ते ॥ रूपी. अरूपी दोन छे,

हिवे नवतत्व विशेष प्रकारे दिखाडे

हिवे जीवद्वार कहेछे.

[illegible]नो एक भेद ॥ चेतना लक्षण ॥.

[illegible]ना २ भेद ॥ सिद्ध ॥ संसारी ॥

[illegible]ना २ भेद ॥ त्रस. थावर, नोत्रसनो थावर,

[illegible]ना ४ भेद. स्त्रीवेद. पुरुषवेद, नपुंसकवेद. अवेदी

[illegible]ना ५ भेद ॥ नरकगती, त्रिजंचगती, मनुष्य

[illegible], देवगती, सिद्धगती ॥

जीवना ६ भेद ॥ एकेंद्रिया. बेंद्रिया. तेंद्रि[illegible]. चउरिंद्रिया, पंचेंद्रिया, अइंद्रिया ॥

जीवना ७ भेद ॥ प्रिथ्वीकाइया अपकाइ[illegible] तेउ काइया, वायु काइया, वनस्पती काइ[illegible], त्रस काइया, अकाइया ॥

जीवना ८ भेद ॥नारकी, तिजंच, त्रिजंचणी, [illegible]नुष्य, मनुष्यणी, देवता, देवंगना, सिद्ध भगवंत ॥

जीवना ९ भेद ॥ चार गतीना, अप्रजापना, [illegible]जापता, नवमा सिद्ध भगवंत ॥

जीवना दस भेद ॥ पंच थावर, [illegible] त्रस दसमा सिद्ध भगवंत ॥

जीवना ११ भेद ॥ पंचेंद्रियना, [illegible]पता, प्रजापना, इग्यारमा सिद्ध [illegible]

जीवना १२ भेद॥ पंच थावर, ... चार त्रस, बारमा सिद्ध भगवंत ॥

जीवना १३ भेद ॥ ७ कायना, ... प्रजापता, तेरमा सिद्ध भगवंत ॥

जीवना १४ भेद ॥ नारकी, ... चणी, मनुष्य, मनुष्यणी, चार जातना दे... र जातिनी देवगना, चौदमा सिद्ध भग...

सिद्ध भगवतना पन्नरे भेद॥ तिर्थसिद्धा ... र्थ सिद्धा, तिर्थंकर सिद्धा, अतिर्थंकर सि... यंबुद्धि सिद्धा, प्रत्येक बुद्धि सिद्धा. ... द्धा, स्त्रीलिंग सिद्धा, पुरुषलिंग सिद्धा, ... लिंग सिद्धा, स्वलिंगी सिद्धा, अनलिंगी । गृहे लिंगी सिद्धा, एक सिद्धा, अनेक ...

संसारी जीवना चउदे भेद कहेछे,

सुक्ष्म एकेंद्रीना दोय भेद, अप्रजापता, ...
बादर एकेंद्रीना दोय भेद, ...
बेंद्रिना दोय भेद. अप्रजापता, प्रजापता
तेंद्रिना दोय भेद. अप्रजापता, प्रजापता,
चउरेंद्रिना दोय भेद. अप्रजापता. प्रजा...
असंज्ञी पंचेंद्रिना दोय भेद. अप्रजापता प्रजा...

पता प्रजापता ॥ तीन विकलेंद्रीना
प्रजापता ॥ पंचेंद्री तिरजंचना ३ भेद
चर, थळचर, खेचर, ॥ जळचरना ४
नी, असंनी, प्रजापता, अप्रजापता ॥
३ भेद ॥ चउपद, उरपरी संर्प, भूयपरी
उपदना ४ भेद ॥ संनी, असंनी,
प्रजापता ॥ एवं उरपुरना ४ भूजपुरना ४
ना ४ ॥ एवं ४८ भेद त्रिजंच गतीना

मनुष्य गतीना ३०३ भेद,

पन्नरा कर्म भोमी खेत्रना उपरना मनु
एक भरत, एक एरवत, एक महा
ए तीन जंबुद्वीप माही छे,
दो भरत, दो एरवत, दो महाविदेह
पट धातकी खंडाद्विप माही छे,
दो भरत, दो एरवत, दो महाविदेह ॥ ए
पुष्कराधं द्वीप माहे छे, ॥ एवं १५ भेद ॥
भोमीना जाणवा,
तीस अकर्म भोमी खेत्रना उपरना
१ हेमवय, १ एरन्नवय, १ हरीवास, १
कवास, १ देवकुरु, उत्तरकुरु, ए पट जंबु

॥ हिवे संवरद्वार कहे छे ॥
॥ संवरना ५७ भेद ते कहे छे ॥

| | |
|---|---|
| १ क्षुधा परीसह | १९ सकारप्रकारपरीसह |
| २ त्रिषा परीसह | २० पन्ना परीसह |
| ३ सीत परीसह | २१ अन्नाण परीसह |
| ४ उष्ण परीसह | २२ दर्सण परीसह |
| ५ डंसमंस परीसह | २३ इरजा सुमती |
| ६ अचेलक परीसह | २४ भाषा सुमती |
| ७ अरति परीसह | २५ एखना सुमती |
| ८ इथी परीसह | २६ आयाणभंडमत्तनी खेवणासुमती |
| ९ चीरिया परीसह | २७उच्चारपासवणखेलजलसंघेण परीठावणया सुमती |
| १० नीसीया परीसह | |
| ११ सेज्जा परीसह | |
| १२ अक्रोश परीसह | |
| १३ वध परीसह | २८ मन गुप्ती |
| १४ जाचणा परीसह | २९ वचन गुप्ती |
| १५ अलाभ परीसह | ३० काय गुप्ती |
| १६ रोग परीसह | ३१ खंती |
| १७ त्रणफास परीसह | ३२ मुक्ति |
| १८ मेल परीसह | ३३ अजवे |

३४ मजवे
३५ लागवे
३६ संचे
३७ संजमे
३८ तपे
३९ चयाये
४० बंनचेरवासी
४१ अन्यनावनां
४२ अनित्य नावना
४३ असर्ण नावना
४४ संसार नावना
४५ एकंत नावना
४६ अशुचि नावना
४७ आश्रव नावना
४८ संवर नावना
४९ लोकशुननावना
५० निर्क्षरा नावना
५१ बोधवीज नावना
५२ धर्म नावना
५३ सामायक चारित्र
५४ छेदस्थापनी चारित्र
५५ परिहारवीशुद्द चारित्र
५६ सुक्ष्मसंप्रायचारित्र
५७ जथाक्षांत चारित्र
इती संवरद्वार संपूर्ण

॥ हिवे निर्झराद्वार कहे छे.
निर्झराना १२ नेद ते देखाडे छे

| | | |
|---|---|---|
| [१] अणसण | ५ कायाकलेस | ९ वयावच |
| [२] उणोदरी | ६ पडिसलेहणता | १० सज्झाय |
| [३ व्]ीरत्याचरी | ७ प्रायश्चित | ११ ध्यान |
| [४] रसपरीत्याग | ८ विनय | १२ वीउसग |

॥ इती निर्झरा द्वार संपूर्ण ॥

॥ हिवे संवरद्वार कहे छे ॥

॥ संवरना ५७ भेद ते कहे छे ॥

१ क्षुधा परीसह
२ त्रिपा परीसह
३ सीत परीसह
४ उष्ण परीसह
५ डंसमंस परीसह
६ अचेलक परीसह
७ अरति परीसह
८ इथी परीसह
९ चौरिया परीसह
१० नीसीया परीसह
११ सेज्जा परीसह
१२ अक्रोश परीसह
१३ वध परीसह
१४ जाचणा परीसह
१५ अलाभ परीसह
१६ रोग परीसह
१७ त्रणफास परीसह
१८ मेल परीसह
१९ सकारप्रकारपरीसह
२० पन्ना परीसह
२१ अन्नाण परीसह
२२ दर्सण परीसह
२३ इरजा सुमती
२४ भापा सुमती
२५ एखना सुमती
२६ आयाणभंडमत्तनि खेवणासुमती
२७ उच्चारपासवणभोमि जलसंघेण परीठा एया सुमती
२८ मन गुप्ती
२९ वचन गुप्ती
३० काय गुप्ती
३१ खंती
३२ मुक्ति
३३ अजवे

| | |
|---|---|
| ३४ मजवे | ४७ आश्रव नावना |
| ३५ लागवे | ४८ संवर नावना |
| ३६ संच्चे | ४९ लोकशुजनावना |
| ३७ संजमे | ५० निर्जरा नावना |
| ३८ तपे | ५१ बोधवीज नावना |
| ३९ चयाये | ५२ धर्म नावना |
| ४० बंनचेरवासी | ५३ सामायक चारित्र |
| ४१ अन्यनावना | ५४छेदस्थापनी चारित्र |
| ४२ अनित्य नावना | ५५ परिहारविशुद्ध चारित्र |
| ४३ असर्ण नावना | |
| ४४ संसार नावना | ५६सुक्षमसंप्रायचारित्र |
| ४५ एकंत नावना | ५७ जथाख्यांत चारित्र |
| ४६ अशुचि नावना | इती संवरद्वार संपूर्ण |

॥ हिवे निर्जराद्वार कहे छे.
निर्जराना १२ नेद ते देखामेछे

| | | |
|---|---|---|
| १ अणसण | ५ कायाकलेस | ९ वयावच |
| २ उणोदरी | ६ पडिसलेहणता | १० सझाय |
| ३ नीस्यापरी | ७ प्रायश्चित | ११ ध्यान |
| ४ रसपरीत्याग | ८ विनय | |

॥ इती निर्जरा द्वार सं ... ॥

हिवे बंधद्वार कहे छे.

बंधना ४ भेद

१ प्रकृतीबंध २ थितबंध ३ अणुभागबंध ४ प्रदेस बंध

इती बंधद्वार संपूर्ण

हिवे मोक्षद्वार कहेछे,

मोक्षना ४ भेद

१ ज्ञान २ दर्शण ३ चारित्र ४ तप

इति मोक्षद्वार संपूर्ण

इति श्री नवतत्व समाप्त

---

श्री जिनायनमः

अथ पच्चीस बोलनो थोकडो लिख्यते

पहिले बोल गती ४॥ १ नरकगती २ तीरजंचगती ३ मनुष्यगती ४ देवतागती.

बीजे बोल जात ५॥ १ एकेंद्री २ बेइंद्री ३ तेइंद्री ४ चउरेंद्री ५ पंचइंद्री

तीजे बोल काया ६ ॥ १ प्रथ्विकाय २ अपकाय ३ तेउकाय ४ वायुकाय ५ वनस्पतिकाय ६ त्रसकाय

चउथे बोल इंद्री ५ ॥ १ सुरतइंद्री २ चक्षु इंद्री ३ घ्राणइंद्री ४ रसइंद्री ५ फरसइंद्री.

पांचमे बोल प्रजाय ६ ॥ १ आहार प्रजाय २ शरीर प्रजाय ३ इंद्री प्रजाय, ४ मन प्रजाय ५ वचन प्रजाय ६ श्वासोश्वास प्रजाय,

छठे बोल प्राण १० ॥ सुरत इंद्री बल प्राण २ चक्षुइंद्री बल प्राण ३ घ्राणइंद्री बल प्राण ॥ ४ रस इंद्री बल प्राण ५ फरस इंद्री बल प्राण ६ मन बल प्राण ७ बचन बल प्राण ८ काया बल प्राण ९ श्वासोश्वास बल प्राण १० आउखो बल प्राण.

सातमे बोल शरीर ५ ॥ १ उदारीक २ बेक्रिय ३ आहारीक ४ तेजस ५ कारमण

आठमे बोल जोग १५ ॥ १ सत्यमन जोग २ असत्य मन जोग ३ मीश्रमनजोग ४ व्यवहार मनजोग ५ सत्य भाषा ६ असत्य भाषा ७ मीश्र भाषा ८ व्यवहार भाषा ९ उदारीक जोग १० उदारीक मीश्रजोग ११ वेक्रिय जोग १२ वेक्रिय मीश्र जोग १३ आहारीक जोग १४ आहारीक मीश्र जोग १५ कारमण.

घ्राण इंद्रीना २

१ सुरवीगंध २ दुरवीगंध

रस इंद्रीना ५

तीखो २ कडवो ३ कसायलो ४ खट्टो ५ मीठो

फरस इंद्रीना ८

खरखरो २ मृदु ३ गुरु ४ लघु ५ सीत ६ ण्ण ७ सनीग्ध ८ लुक्ष

तेरमे बोल मिथ्यांतीरा १० बोल ॥ १ धर ने अधरम कहेतां मिथ्यांत २ अधर्मने धर्म कहे तां मिथ्यांत ३ जीवनें अजीव कहेतां मिथ्यांत ४ अजीवनें जीव कहेता मिथ्यांत ५ साधुनें असाधु कहेतां मिथ्यांत ६ असाधुनें साधु केहेता मिथ्यांत ७ संसार मारगनें मोक्ष मारग केहतां मिथ्यांत ८ मोक्ष मारगनें संसार मारग केहेतां मिथ्यांत ९ क म मुकायनें अनमुकाय केहेता मिथ्यांत १० करम अनमुकायनें मुकाय केहेतां मिथ्यांत ॥

चउदमे बोल नवतत्वनो जाणपणो

जीवतत्व, २ अजीवतत्व, ३ पुण्यतत्व, ४ पाप, ५ आश्रवतत्व, ६ संव निर्जरा ८ बंधतत्व, ९

जीवतत्व किसकुं कहिये–॥ जीव चेतना हीत सुख दुःखना भेदक, प्रजाय प्राणका ५ ता, आठ करमका करतां, भोगता, सदा काळ म सता रहे कदेही वीनसे नही. तेहने जीवतत्व हीये ॥ जीवके दोय भेद, १ सुक्षम २ बादर १ सुक्षम जीव किसकु कहीये–॥ लोक माहे काजलकी कुपी समान भरा रह्या हे, काटया कटे नही, बाडया बडे नहीं, बाळया जळे नही, आउखो आया मरे. विना आउखो मरे नहीं, केवळ ज्ञानीरे निजर आवे, छदमस्तके निजर आवे. जेहने सुक्षम एकंद्री कहीये॥ सुक्षम एकंद्रीके दोय भेद॥ १ अप्रजापता २ प्रजापता॥

२ बादर जीव किसकु कहीये–॥ लोकके देसमाही रहीयाछे ॥ काट्या कटे, बाट्या बडे, बाळया जळे, आउखो मरे, वीना आंउखो मरे, केवळ ज्ञानीके निजर आवे, छदमस्तके निजर आवे, तेहने बादर जीव कहीये॥ एहना १४ भेद एकंद्रीके दोय भेद ॥ प्रजापता, अप्रजापता, [illegible]ीके दोय भेद ॥ प्रजापता, अप्राजापता, [illegible] दोय भेद ॥ अप्रजापता प्रजापता,

चउरेंद्रीके दोय भेद ॥ अप्रजापता, प्रजापता,
पंच इंद्रीके दोय भेद ॥ संन्नी, असंन्नी
संन्नीके दोय भेद ॥ अप्रजापता, प्रजापता,
असंन्नीके दोय भेद ॥ अप्रजापता प्रजापता,

२ अजीवतत्व किसकु कहिये— अजीव चे
तना रहीतं, सुख दुःख अभेदक, प्रजाय प्राण
का धरता, आठ करमका अकरता, पुरण होय
अरुगले जड लक्षणवे जेहने अजीवतत्व कहिये

अजीवतत्वके चवदे भेद ते कहेछे

धरमास्ती कायना ३ भेद ॥ खंद, देस प्रदेस,
अधर्मास्ती कायना ३ भेद ॥ खंद, देस, प्रदेस,
आकाशास्ती कायना ३ भेद ॥ खंद, देस, प्रदेस,
दसमो काळ

पुदगळास्ती कायना ४ भेद ॥ खंद, देस, प्र
देस, प्रमाणु,

३ पुण्यतत्व किसकु कहीये ॥ बांधता दोही
ला, भोगवता सोहीला ॥ ॥ दोहरा ॥

जो विशुद्ध भाव न बंधे, अरू उरध सुख होय ॥
जो सुख दायक जगतमें, पुण्य पदारथ सोय ॥१॥
एहने पुण्यतत्व कहिये ॥ पुण्य नव प्रकारे बांधे ॥

॥ दोहरा ॥

खाण पाण थानक वसण, सेण दाण ॰
पंच ॥ मन वचन काया शुभ रमण, नमत
एय नव संच ॥ २ ॥

४ पापतत्व किसकु कहीये ॥ पाप ॰
सोहीला, जोगवतां दोहीला ॥ ॥ दोहरा ॥

संकलेस जाव न वधे. सहीज आधो सु॰
होय ॥ जो दुःख दायक संसारमे, पाप ॰
सोय ॥ ३ ॥ एहनें पापतत्व कहीये ॥

पापके अठारा जेद ते कहेवे.

१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तदाना
४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ मा
[illegible] ११ [illegible] १२ [illegible] १३

संवरके बीस भेद ते कहेछे.

१ सम्यकित २ व्रत ३ अप्रमाद ४ अक॰ य ५ शुभजोग ६ जीवहंमानकरे ७ कूठ न बोले ८ चोरी न करे ९ कुशील न सेवे १० ममत न करे ११ सुरत इंद्री वश करे १२ चक्षु इंद्री वश करे १३ घ्राण इंद्री वश करे १४ रस इंद्री वश करे १५ फरस इंद्री वश करे १६ मन वश करे १७ वचन वश करे १८ काया वश करे १९ भंड उपगरण जेणासुं लेवे जेणासुं मुके २० सुई कुसग जेणासुं लेवे जेणासुं मुके ते संवर ॥

७ निर्झरा तत्व किसकु कहीये ॥ समय समय करमोको निर्झरे तेने निर्झरा तत्व कहीये ॥

॥ दोहरा ॥

जो पूरब सत्ता कर्मकर, स्थीती पूरण आयु॥
खीरवेकुं उद्रत भयो, सो निर्झरा लीखायुं ॥ ६ ॥

निर्झराके १२ भेद ते कहेछे

१ अणसण २ उणोदरी ३ भीख्याचरी ४ रसपरित्याग ५ कायाकलेस ६ पडिसलेहणा ७ प्रायश्चित ८ विनय ९ वयावच्च १० सज्झाय ११ ध्यान १२ काउसग्ग

२ दस भुवनपतीना दस दंडक

१ असुर कुमार २ नाग कुमार ३
कुमार ४ विद्युत कुमार ५ अग्नी कुमार ६
प कुमार ७ उदधि कुमार ८ दिसा कुमार
वायु कुमार १० स्तनित कुमार ॥

३ पंच स्थावरना पांच दंडक

१ पृथ्विकाय २ अपकाय ३ तेउकाय
वायुकाय ५ वनस्पतिकाय

४ तीन विकलइंद्रीना तीन दंडक

१ बेंद्री २ तेंद्री ३ चउरेंद्री

त्रिजंच पंचेंद्रीनो दंडक १ ॥ मनुष्यनो दंडक १
वाणव्यंतर देवनानो दंडक १ ॥ जोतीषी
वानानो दंडक १ ॥

विमाणीक देवतानो दंडक १ ॥

सतरमे बोल लेश्या ६ ॥ १ कृष्ण लेश्या
नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजु लेश्या
पद्म लेश्या ६ शुक्ल लेश्या ॥

अठारमे बोल दृष्टी ३ ॥ १ समदृष्टी २
मिथ्यादृष्टि ३ सम मिथ्या दृष्टी ॥

उगणीसमे बोल ध्यान ४ ॥ १ आर्त

न रुद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान

वीसमे बोल खटद्रव ६ ॥ १ धर्मास्ती २ अधर्मास्ती ३ आकाशास्ती ४ कालस्ती ५ जीवास्ती ६ पुदगळास्ती ॥

एक एक द्रबना पांच पांच भेद ते कहे छे

घरमास्तीना पांच भेद

द्रवथकी, एक द्रव १ ॥खेत्रथकी, लोक प्रमाण २ ॥ काळथकी, आदिअंत रहीत ३ ॥ भावथकी, वरण नही, गंध नही, रस नही, फरस नही, अरुपीछे४॥गुण थकी, चलनका स्वभाव ५॥

॥ दोहरा ॥

जैसे सलील समुहमें, करे मीनगती करम॥
तैसे पुदगळ जीवको, चलण सहाय धरम॥२॥

अधरमास्तीना पांच भेद

द्रवथकी, एक द्रव १॥ खेत्रथकी, लोक प्रमाण २ ॥ काळथकी आदिअंत रहीत ३ ॥ भावथकी, वरण नही, गंध नही, रस नही, फरस नही, अरुपीछे ४ ॥ गुणथकी, स्थिरगुण ५ ॥

॥ दोहरा ॥

जीउं पंथक ग्रीष्म समय, बैठो छाया माहीं॥

५ पांचमे व्रत परिग्रहकी मरजादा करे, ६ व्रत दिसाकी मरजादा करे, ७ सातमे व्रत स बोलकी मरजादा करे, ८ आठमो व्रत नर्थ दंडको त्याग करे ९ नवमो व्रत करे, १० दसमा व्रतमे संवर धरे, ११ व्रत पोसाकरे १२ वारमे व्रत सूझतो

तेवीसमे बोल पंच महाव्रत साधुके ॥ १ वाओ पाणाइवायाओ वेहरमणं, २ सवाओ साइवायाओ वेहरमणं, ३ सवाओ अदीनं णाओ वेहरमणं, ४ सवाओ मिहूणाओ मणं, ५ सवाओ परिग्रहाओ वेहरमणं ॥

चोवीसमे बोल गुण पचास भागानो

आंक १ इग्यारेको ॥ भागा उपजे एक कर्ण, एक जोगसुं केहणा ॥ करुं न णसा ॥ करुं नही वयसा ॥ करुं नहीं का करावुं नही मणसा ॥ करावुं नहीं वयसा रावुं नही कायसा ॥ आणमोदुं नही मण णमोदुं नही वयसा ॥ आणमोदुं नही का

आंक १-१२ को भागा उपजे ९-१ २ जोगसुं केणा ॥ करुं नही मणसा व

करुं नही मणसा कायसा ॥ करुं नही वयसा काय
सा ॥ कराउं नही मणसा वयसा ॥ कराउं नही म
णसा कायसा ॥ कराउं नही वयसा कायसा ॥ आ
णमोदुं नही मणसा वयसा ॥ आणमोदुं नही मण
सा कायसा ॥ आणमोदुं नही वयसा कायसा ॥

आंक १–१३ को भांगा उपजे ३–१ कर
ण, ३ जोगसुं केणा ॥ करुं नही मणसा, वयसा,
कायसा ॥ कराउं नही मणसा, वयसा, कायसा,
आणमोदुं नही मणसा, वयसा, कायसा ॥

आंक १–२१ को भांगा उपजे ९–२ कर
ण, एक जोगसुं केणा ॥ करुं नहीं कराउं नहीं
मणसा ॥ करुं नही कराउं नही वयसा ॥ करुं
नहीं कराउं नही कायसा ॥ करुं नहीं आणमो
दुं नही मणसा ॥ करुं नही आणमोदुं नही व
यसा ॥ करुं नही आणमोदुं नही कायसा ॥ क
राउं नही आणमोदुं नही मणसा ॥ कराउं न
ही आणमोदुं नही वयसा ॥ कराउं नही आ
णमोदुं नही कायसा ॥

आंक १–२२ को भांगा उपजे [illegible]
दोय जोगसुं केणा ॥ करुं नही

वयसा ॥ करुं नहीं कराउं नहीं मणसा, काय
करुं नहीं कराउं नहीं वयसा, कायसा ॥ क
हीं आणमोदुं नहीं मनसा वयसा ॥ करुं
आणमोदुं नहीं वयसा, कायसा ॥ करुं नहीं
णमोदुं नहीं वयसा, कायसा ॥ कराउं नहीं
णमोदुं नहीं मणसा, वयसा ॥ कराउं नहीं
णमोदुं नहीं मणसा, कायसा ॥ कराउं नहीं
णमोदुं नहीं वयसा, कायसा ॥

आंक१–२३ को भागा उपजे ३–२
३ जोगसुंकेणा ॥ करुं नहीं कराउं नहीं
सा, वयसा, कायसा ॥ करुं नहीं आणमोदुं
हीं मणसा, वयसा, कायसा ॥ कराउं नहीं
णमोदुं नहीं मणसा, वयसा कायसा ॥

आंक १–३१ को भागा उपजे ३–३
१ जोगसुंकेणा ॥ करुं नहीं, कराउं नहीं
णमोदुं नहीं मणसा ॥ करुं नहीं कराउं
आणमोदुं नहीं वयसा ॥ करुं नहीं, करा
हीं आणमोदु नहीं कायसा ॥

आंक १–३२ को भागा उपजे ३–
ण, २ जोगसुंकेणा ॥ करुं नहीं, कराउं

णमोदुं नही मणसा, वयसा ॥ करुं नही कराउं
ही, अणमोदु नहीं मणसा कायसा ॥ करुं नहीं
राउं नहीं, अणमोदुं नही वयसा कायसा ॥
आंक १–२३ को भागा उपजे १–३ करण.
३ जोगसुं केणा ॥ करुं नहीं. कराउं नहीं. अ
णमोदुं नही, मणसा, वयसा, कायसा ॥
पचीसमे बोल चारित्र ५ ॥ १ सामायक चा
रित्र ॥ २ छेदोस्थापनी चारित्र ॥ ३ परिहार
विशुद्ध चारित्र ॥ सुक्षम संपराय चारित्र ॥
५ जथाख्यात चारित्र ॥
॥ इति श्री पचीस बोलनो थोकडो संपूर्ण ॥
॥ अथ कर्म विपाक धर्म कथाना बोल लिख्यते ॥
श्री ज्ञाता सुत्रके धर्म कथामांही साडा नी
न क्रोड कथा कहिछे. तिणमाहे दोय क्रोड मोले
हजार छे. उपरलो पांचसोरो थोकडो, तिण
मांही कर्म विपाक नाम कथा चाली, ते माहेलो
भाव समजवा हेतें बोल सरुप मांडियो छे.
शिष्य कहे–कहो सामी ! कार्ज्ञो होय ते कि
सा कर्मने उदे ?
गुरु कहे– सुनो [illegible]

वमाहे घणा फल बिज विंधीया ( तोफ्या )
ना प्रतापे कानी होयछे,

शि०—आंधो होय ते कोणसा कर्मथी हो

गु०—जेणे पूर्वे त्रसथावर जीवोने
डुबोइने मार्या तेना कारणथी (अंधत्व पावे)

शि०—बेहेरो थाय ते कीसा कर्मथी थाय

गु०— जे पूर्वे घणा मध माखीना मुवाल (
रटा ) तोडीने ते माथी सीत लिधा तेना प्रतापे

शि०—कोई जीव आंखे जलमलो देखे
किण कारणथी होय ?॥

गु०—जेणे पूर्वे घणा कुभावथी रूप निर
ख्या तेना प्रतापे,

शि०—कुबडो थाय ते कीसा कर्मने उदे

गु०—जे पूर्वे एकेंद्री जीवनो चूर्ण , घात
कीधो तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई प्राणी ठुचडो हुवे ते किसा क
र्मथी हुवे ॥

गु०—जे पूर्वे पशु ( चोपगाराजीव ) उपरे
अतिभार नाख्यो तेने दुःख दीनो तेना प्रतापे

शि०—थोटो होय ते कीसा कर्मथी होय ॥

गु०—जेणे पूर्व भवे दोपगारा चोपगारा जीव तथा एकेंद्री जीवना पांख, अंग, उपांग उपाडी नाख्यां ते कारणथी.

शि०—पांगळो होय ते किसा कर्म उदे होय॥

गु०—जे पूर्व पशुपक्षी जीवोने धंधावकरतांग लगलो करतो एकेंद्रीनी जरूर खुणतो तेना प्रतापे.

शि०—गुंगो, बोबडो होयते किसाकर्मने उदे॥

गु०—जेणे संजमवंत, गुणवंत, शिलवंत जीवनी पुठपाछे चावत (खोटो आळ) करीतेना प्रतापे

शि०—खोज्यो होयते कीसा कर्मने उदे॥

गु०—जेणे पूर्व भवे वेदगिरीका काम कीधा तेना प्रतापे.

शि०—बेहेरो पात्रलो थायते कीसाकर्मने उदे॥

गु०—जेणे पूरवे घणी वनस्पती स्वहाते करीने छेदी तेना कारणसु ते जीव बेहेरो पात्रलो उपजे

शि०—गुंगो टोलो होयते किसा कर्मथी होय॥

गु०—जेणे पूर्व भवे चार तीर्थना अवगुण करया तेना प्रतापे.

शि०—गलत कोढी जीव उपजे ते कीसा कर्मथी

गु०—जेणे पूर्व सोनारुपानो आंगार, करायो

तेना प्रतापे.

शि०—जसकरतां अपजस पायते

गु०—जे पूर्वभवें सच्चीत द्रव्यादिकना खद बेखद घणा किना तेना प्रतापेसुं.

शि०—आंख बामणी होयते कीसाकर्मने ७

गु०—जे पूरवे लुणना आगरना संजोग राया तेना प्रतापे,

शि० काख मांजरो होयते किसा कर्मने उदे

गु०—जे पूरवे पापके उदे प्रेम दृष्टी काम नो तेना प्रतापे,

शि०—वावलो थाय ते किसा कर्मसुं

गु०—जे पूरवे पापथी कायानो मद कि तेना प्रतापे,

शि०—रूड मुंड शरीर होयते किसाकर्मने

गु०—जेणें पुरवे आंकरा करडा दंड करा ते पापने उदे ए भवमां शरीर रूड मूंड पाय

शि०—शरीरने विषे भगंदर रोग उपजे क्याकर्मने उदे उपजे छे. १

गु—जे पूर्वि स्वहाते करी पंचोंद्रि जीव हणीया तेना प्रतापे.

शि०—द्रव्यनी वांछा करे अनेरानें द्रव्य पा ते कीसा कर्मनें उदे॥

गु०—जे पूरवे अनेरानें द्रव्यनी अंतराये दीया तेना प्रतापे॥

शि०—कंठमाला रोग होय ते किसा कर्मनें उदे?

गु०—जे पूर्वे घणा मांछला मारिया तेना प्रतापे

शि०—शरीनें विषे पांथरी रोग होय ते की कर्मनें उदे॥

गु०—जे पूर्वजन्मे मैथुन घणा सेवीया तेना तापे ॥

शि०—हर्ष रोग होय ते कीसा कर्मनें उदे॥

गु०—जेणें पूरवे धुणी घाली घणा जीवानें ावियां तेना प्रतापे ॥

शि०—शरीरनें विषे वाला निकले ते कीसा मनें उदे॥

गु०—जे पूरवे घणा जीवांरा दोवल तोडी ना वणावी तेना प्रतापे ॥

शि०—शरीनें विषे रोग दीसे नहीं जीव अ दुःख पावे ते कीसा कर्मने उदे॥

गु०—जे पूरवे झुठो बोली लाच लीधा ते

ना प्रतापे ॥

शि०--संजोगना वीजोग थाय ते कीसा रमने उदे ॥

गु०--जे पूरवे माया कपटाई तथा ...पटाई कतघ्नता कीधी तेना प्रतापे ॥

शि०--शरीर कुवर्ण पामे ते कीसा कर्मने

गु०--जे पूरवे घणा फलवीज तोडीया रूप देखाडया तेना प्रतापे ॥

शि०--जीव डरपे कंपे अपराधी मार पडे ते कीसा करमने उदे ॥

गु०--जे पूरवे कोटवालना करम कीना प्रतापे ॥

शि०--शरीरने विषे माटो रोग थाय ...सा करमने उदे ॥

गु०--जेणे पूरवे वावड्या कुंवा खण...ना प्रतापे ॥

...--कोई जीव मी...
... ते कीसा ... ॥
... पूरवे ... विना
... ॥

शि०—शरीरनें विषे खाज फटणी चाले ते सा करमनें उदे.१

गु०—जे पूरवे घणा तेंद्री जीव तावडे अग पाणी माहे नाखी मरावीया तेना प्रतापे.

शि०—मीथ्या शास्त्र भणे प्रपंच करे मो सा करमनें उदे.१

गु०—जे पूरवे घणा जीव उपर क्रोध कीधो टो आळ दीधा तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीव सूत्र भणवा वयावच करे जे भणे बावलारा अवगुण वाद बोले ते की करमनें उदे.

गु०—जेणे पूरवे घी गोंत तेलना वासण उघा मेलीया माहे जीव हणावीया तेना प्रतापे.

शि०—स्त्री नपुंसक थाय ते कीसा करमनें उदे.१

गु०—जे पूरवे माया कपटाई करी द्रव्य लो नटीगई तेना प्रतापे.

शि०—कोढीयो थाय ते कीसा करमनें उदे.१

गु०—जे पूरवे प्राण्य वायना छेदन भेदन घा तेना प्रतापे.

शि०—शरीरनें विषे जुंवा

गु०—जे पूर्वे माठलाना आहार कीधा तेना प्र०
शि०—कोई जीव तप करे, जप करे, सझाय करे, ते हारो कीधो अनेरानें सुहावे नही ते कीसा कर्मने उदे. १
गु०—जे पूरवे अवीश्वासे करी कृतघ्न मीत्र कपटाई करी तेना प्रतापे.
शि०—तप जप न हुवे ते किसा कर्मनें उदे
गु०—जेणें पूर्वे तप जपनो मद कीधो तेना प्रतापे.
शि०—कोई जीव बोलीयो अनेराने सुहावे नही ते किसा कर्मनें उदे. १.
गु०—जे पूर्वे वचनकलानो अहंकार कीधी तेना प्रतापे ॥
शि०—शरीरनें अशुभ वर्ण पामे ते किसा कर्मनें उदे. १
गु०—जे पूरवे रूपनो मद कीधो तेना प्रतापे॥
शि०—कुडो आल माथे आवे ते किसा कर्मनें उदे. १.
गु०—जे पूरवे अढारमो पापस्थानक वार वार घणो सेवीयो तेना प्रतापे ॥

शि०—आपणे अण कीधा अपजस अप कीरत वधे ते कीसा करमनें उदे॥

गु०—जे पूरवे असोहती तेवारे सासु नणंद भाई भोजाई देराणी जेठाणीनीं इरषा कीधी तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई जीव पासे उभो रहे वैसे अनेरो नाणे अठाथी ओ परो जावे तो ठीक ते कीसा करमनें उदे॥

गु०—जे पूरव भवे पोतानी थापि अनेरानी उथापे वचन करीने अवीश्वास धर्यो तेना प्रतापे॥

शि०—कोई जीवने जीव विराध्याथी क्रोध आवे नहीं ते किसा करमनें उदे॥

गु०—जे पूर्वे लोभ घणा कीधा तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई जीव अलाभ पणे उदे थाय ते किसा करमनें उदे ॥

गु०—जे पूरवे घणा जीवाने लाभ हुवती वेला तेहनें अंतराये पाड्यो तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई जीव सुसरसंधान पामे ते किसा करमनें उदे ॥

गु०—जे परवजवें घणा जीवानें-

तथा मुंडो मुंदी मारया तेना प्रतापे ॥

× शि०—कोईजीव बोबडो बहीरो अशुभ अ णगमतो संथान पामें ते किसा करमनें उदे ॥

× गु०—जे पूरवे मुसर संथान माहें मद की नो घणी हंसी कीधी मद करी घणा जीवाने ता प दीधो तेना प्रतापे ॥

× शि०—मनुष्य सुसरसंथान पामे ते किसा करमनें उदे ॥

× गु०—जे पूरवे पर जीवनें मीठा बोले. रक्षा करे, पापना गीत वरजे तेना प्रतापे ॥

शि०—पंचेंद्री जीव बलहीण उपजे ते किसा करमनें उदे॥

गु०—जे पूरवे तीव्र भावे मांसनो आहार कीधो तेना प्रतापे ॥

शि०—पुरुषलींग वेदी स्त्रीलींग पामे ते किसा करमनें उदे॥

गु०—जे पूरवे सतरमो पाप स्थानक माया मोसा घणो सेवीयो तेना प्रतापे ॥

शि०—मन वंछित वस्तु जीव न पामे ते कीसा करमनें उदे॥

गु०—जे पूरवे पंचेंद्री जीवना संजोगना वि
जोग कीधा तेंना प्रतापे ॥

शि०—जीवनें निंदरा घणीं श्रावे ते किसा
करमने उदे ॥

गु०—जे पूरवे तीव्र भावे श्रति मदीरा पा
न पिधा तेना प्रतापे

शि०—शरीर बलहीन पामे ते किसा करम
नें उदे ॥

गु०—जे पूरवें कुकडाना श्राहार कीधा ते
ना प्रतापे ॥

शि०—गुंगोथाय ते किसा करमनें उदे ॥

गु०—जे पूरवे जीवोने भांगसीमे घाली उ
पर खारो जल सींचीयो तेना प्रतापे,

शि०—जीवने रोध घणो ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा श्रनंत कायना जीवना
श्राहार कीधा तेना प्रतापे,

शि०—कोई जीवने घणो हांसो श्रावे ते कि
सा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे श्रसंज्ञी पंचेंद्री जीव हणीया
हणावीया तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीव साधु साधवी माहे लागे नही ते किसा करमनें उदे ?

गु०— जे पूरवे पंचेंद्री तुरण मनुष्य वीराध्या तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई जीव संसारी जीवने तथा मात पीतानें वालो न लागे ते किसा करमनें उदे॥

गु०—जे पूरवे घणा वीकलेंद्री जीव वीराधीया तेना प्रतापे ॥

शि०—पुरुपनें तरुणपणे स्त्रीनो वीजोग थाय ते किसा करमने उदे॥

गु०—जे पूरवे अकंद नाचे कंदर्प सेवीया तेना प्रतापे ॥

शि०—धणी धणीयानीनो तरुणपणे वीजोग थाय ते किसा करमनें उदे.

गु०—जे पूरवे घस्त्री पुरपना संजोगनी श्रोपधी घणी मेलीया तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीवनें पर सेवामा खोट थाय ते कीसा करमनें उदे.

गु०—जे पूरवे घणा मदीरा पान किया ते प्रतापे.

शि०—कोई जीव साचो बोले अनेराने प्र
तीत न उपजे ते कीसा करमने उदे.

गु०—जे पूर्वे कुडी साख भरी तेना प्रतापे

शि०—कोई जीव दलीद्रपणी पामे ते कीसा
करमने उदे.१

गु०—जे पूरवे दान पुण्य सुपात्रनें न दि
धा दया न पाळी सुपण राखीयो तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीवने माता भाई बेन भाणेज
पुत्र कुटुंबनो वीजोग थाय ते कीसा करमने उदे १

गु०—जे पूर्वे कुगरु कुदेव हींसा धरम परू
पीयो तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीव धर्म पामे ते कीसा करम
ने उदे.१

गु०—जे पूरवे मोहणी कर्म जोडी, पूर्वे ...
मोहनी सीत्तर कोडा कोड सागरोपमनी बांधी
... माहे गुणहतर कोडा कोड बोधी ते माह
... एक सागर रही ते मध्ये भाग तीन पार्यो
...या तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीव समकीत ...
...क पणोछे बदपदीया-पछे ... कीसा

शि०—कोई जीव साधु साधवी मांहे आर लागे नही ते किसा करमनें उदे?

गु०—जे पूरवे पंचेंद्री त्रुरण मनुष्य वीराध्या तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई जीव संसारी जीवने तथा मात पीतानें वालो न लागे ते किसा करमनें उदे॥

गु०—जे पूरवे घणा वीकलेंद्री जीव वीराधीया तेना प्रतापे ॥

शि०—पुरुपनें तरुणपणे अस्त्रीनो वीजोग थाय ते किसा करमने उदे॥

गु०—जे पूरवे अकंद भावे कंदर्प सेवीया तेना प्रतापे ॥

शि०—धणी धणीयानीनो तरुणपणे वीजोग थाय ते किसा करमनें उदे.

गु०—जे पूरवे घस्त्री पुरपना संजोगनी औषधी घणी मेळोया तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीवनें पर सेवामा खोट थाय ते कीसा करमनें उदे.

गु०—जे पूरवे घणा मदीरा पान किया तेना प्रतापे.

शि०—कोई स्त्रीनें तेहीज गर्भ चवीनें फे र तेहीज वेडो गर्भ माहे उपजे पछे चोवीस व र्ष लगे रहे ते कीसा करमनें उदे?

गु०—जे पूर्वे घणा मैथुन सेवीया तीव्र भा वे अने सेवन वाळानें साज दीनो साधारण क रम कीधा तेना प्रतापे ॥

शि०—कोईरा डीलारे तप रोग थाय तथा सगळो मील वलवल करे ते कीसा करमनें उदे?

गु०—जे पूर्वे फल फूलना पाक मरदन क रावीया तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई जीव भले घरे जन्म पामेने पछे कमाई माठी करे राजदूत पकडीने दुःखदे रो की राखे दंड करे गले हारी बांधे घर घर भी क्षा मंगावे ते कीसा करमनें उदे?॥

गु०—जे पूर्वे सीसानो आगार करावीयो तेना प्रतापे ॥

शि०—अखो वांझ हुवे ते कीसा करमने उदे?

गु०—जे पूर्वे फूलना आंतर करावीया तेना प्रतापे ॥

शि०—मर्भा मरत वांझ हुवे ते किसाकर्मथी.

गु०—जेणें पूरवे उगंती वनस्पती पुफळा चूंटीया ( तोडीया ) तेना प्रतापे.

शि०—पुरुष वांझ हुवे ते किसा कर्मथी:

गु०—जेणें पूर्व भवे घणा बीजभीजं काटीया, खोदीया, तलावीया, शेकीया तेना प्रतापसु॥

शि०—पुरुष एक अने स्त्रीयाघणी सर्व स्त्रीया वांझ होय ते किसा कर्मने उदे॥

गु०—जेणें पूर्व घणी वनस्पतिनो रस शायीयो तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई जीव चोरीकरे वाटमारे ... खोले ते किसा कर्मने उदे॥

गु०—जेणें पूरवे घणा हलाल... कीधा तेना प्रतापे ॥

शि०—कोई जीव अनेरा... ३॥ किसा कर्मने उदे॥

गु०—जेणें पूरवे जल...या तेना प्रतापे ॥

शि०—जीव जन्म... मे ते किसा कर्मने...

गु०—जेणें पू...

फूल, बीज. अंकुर छेदीया चूंटीया तेना प्रतापे॥

शि०—कोई जीव जन्मतेपाछे माता पीतानो विजोगपामे ते किसा कर्मने उदे?॥

गु०—जेणे पूर्वे कवली वनस्पतिना अंकुर छेदीया तथा छेदन वालाने साजदीनो तथा घणा जीवांरो वीजोग पाडीयो तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीव समदृष्टी हातसुं करीनें साधु मुनिराजने प्रतिलाभवानो मनोरथ करे पण प्रतिलाभें सके नही ते कीसा कर्मने उदे?

गु०—जेणें पूर्वे रोसकाई, मम्मकाई भाषा ली छानी वात प्रगट किनी. घणाजीवांने दानें अंतराय पाड्या तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीवने वलघणोछे. अने सामायीक व्रत, देसावगाशिक व्रत, पोसो. पडिकमणो करवाने विषे प्रमाद उपजे छे ते कीसा कर्मने उदे?

गु०—जेणें पूर्वे नवे ममाई ( वनस्पती ) ना आहार घणा किधा तेना प्रतापे.

शि०—कोई जीवरो शरीर घणो मोटो ( भारी ) हुवे ते कीसा कर्मने उदे?